बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

PHILOSOPHY

Set-1

MODEL PAPER - I

कुल प्रश्नों की संख्या : ४० + १० + ५ = ५५

Total No. of Questions : 40 + 10 + 5 = 55

कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : २४

Total No. 1 of Printed Pages : 24

PHILOSOPHY

A.-PHL. (OPT)

समय : ३ घंटे १५ मिनट] [पूर्णांक : १००

Time : 3 Hours 15 Minutes] [Marks : 100

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

Instructions to the candidate :

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

   Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.
2. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

   Figures in the right hand margin indicate full marks.
3. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ भाग संख्या, खण्ड संख्या और प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

   Write Section number, Group number and Question number with every answer.

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में दो भाग-भाग-I एवं भाग-II हैं। भाग-I में खण्ड-अ एवं भाग-II में खण्ड-ब एवं खण्ड-स हैं।

भाग-**I** : भाग-I के खण्ड-अ के प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रकार के हैं। इस खण्ड के प्रश्न संख्या १ से ४० तक प्रत्येक १ अंक का है।

भाग-**II** : भाग-II के सभी प्रश्न गैर-वस्तुनिष्ठ हैं। भाग- II के खण्ड-ब के प्रश्न लघु उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी १० प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न ३ अंक का है। भाग- II के खण्ड-स के प्रश्न दीर्घ उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी ५ प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न ६ अंक का है।

Instructions **:**

This paper consists of two Sections - Section - I and II. Section - I consists of Group - A and Section - II consists of Group-B & Group - C.

***Section*-I :** Group A of Section - I are Objective Type Questions. In this group Question Nos. 1 to 40 carry 1 mark each.

***Section*-II :** All Questions of Section - II are Non-Objective Type. Group -B of Section-II are Short Answer Type questions. Answer all 10 questions. Each question carries 3 marks. Group-C of Section-II are Long Answer Type Questions. Answer all 5 questions. Each question carries 6 marks.

Model Paper - I

भाग–I

Section - I

Group - A

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(Objective Type Questions)

सभी ४० प्रश्नों के उत्तर दें। सही उत्तर का चयन करते हुए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दें : $40 \times 1 = 40$

Answer all the questions. Answer each questions by Selecting the correct answer : $40 \times 1 = 40$

1. बौद्ध दर्शन के प्रवर्तक हैं :

(a) गौतम बुद्ध (b) कपिल

(c) महावीर (d) नागसेन

Founder of the Buddhist Philosophy is:

(a) Gautam Buddh (b) Kapil

(c) Mahavir (d) Nagsen

2. योग दर्शन के प्रवर्तक हैं :

(a) गौतम (b) पतंजलि

(c) शंकर (d) रामदेव

Founder of Yoga Philosophy is:

(a) Gautam (b) Patanjali

(c) Shankar (d) Ramdev

3. सत्व, रजस, तमस ये कहाँ रहते हैं :

(a) प्रकृति (b) पुरुष

(c) दोनों में (d) इनमें से कोई नहीं

Where do Satva, Rajas, Tamas reside:

(a) Prakriti (b) Purusha

(c) Both (d) None of these

4. किसके अन्तिम भाग को उपनिषद् कहते हैं ?

(a) पुराण (b) ज्ञान

(c) वेद (d) इनमें से कोई नहीं

Upanishad is the last part of:

(a) Purana (b) Knowledge

(c) Veda (d) None of these

5. निम्न में कौन नास्तिक दर्शन हैं :

(a) चार्वाक (b) बौद्ध

(c) जैन (d) उपरोक्त सभी

Which of the following Heterodox

(a) Charvak (b) Buddha

(c) Jain (d) All of these

6. 'ऋत' संबंधित है :

(a) नैतिकता से (b) राजनीति से

(c) तर्कशास्त्र (d) इनमें से सभी

'Rta' is related to

(a) Morality (b) Politics

(c) Logic (d) All of these

7. यथार्थ ज्ञान कहलाता है :

(a) प्रमा (b) अप्रमा

(c) प्रमाण (d) इनमें से कोई नहीं

Real knowledge is called :

(a) Prama (b) Aprama

(c) Pramana (d) None of these

8. कौन प्रथम तीर्थंकर हैं ?

(a) पार्श्वनाथ (b) महावीर

(c) आदिनाथ (d) गौतम

Who is the first Tirthankara ?

(a) Parshvanath (b) Mahavir

(c) Adinath (d) Gautam

9. शंकर का सिद्धांत है ?

(a) विशिष्टाद्वैत (b) निरपेक्षवाद

(c) अद्वैत (d) इनमें से कोई नहीं

Theory of Shankara is

(a) Vishishtadvaita (b) Nirapakeshavada

(c) Advaita (d) None of these

10. भारतीय दर्शन है :

(a) व्यावहारिक (b) अव्यवहारिक

(c) परिकल्पनात्मक (d) इनमें से कोई नहीं

Indian Philosophy is -

(a) Practical (b) Impractical

(c) Hypothetical (d) None of these

11. भारतीय दर्शन के दो सम्प्रदाय हैं :

(a) प्राकृतिक और अप्राकृतिक (b) भौतिकवादी और अध्यात्मवादी

(c) आस्तिक और नास्तिक (d) इनमें से कोई नहीं

Two Schools of Indian Philosophy are

(a) Natural and Unnatural (b) Materialistic and Idealistic

(c) Orthodox and Heterodox (d) None of these

12. किसने कहा कि मनुष्य सभी वस्तुओं का मापदंड हैं ?

(a) अरस्तु (b) प्लेटो

(c) सोफिस्ट (d) बेन

Who said that man is the measure of all things

(a) Aristotle (b) Plato

(c) Sophists (d) Ben

13. जैन किसकी उपासना करते थे ?

(a) ईश्वर की (b) आत्मा की

(c) तीर्थंकर की (d) ब्रह्म की

Who is worshipped by the Jainas?

(a) God (b) Soul

(c) Tirthankaras (d) Brahma

14. इनमें से कौन बुद्धिवादी हैं :

(a) देकार्त (b) बर्कले

(c) ह्यूम (d) लॉक

Who among the following is a rationalist?

(a) Descartes (b) Berkley

(c) Hume (d) Locke

15. जैन मत के अनुसर त्रिरत्न हैं :

(a) सम्यक् दर्शन (b) सम्यक् चरित्र

(c) सम्यक् ज्ञान (d) उपरोक्त सभी

Triratnas according to the Jainas, are-

(a) Right vision (b) Right conduct

(c) Right knowledge (d) All the these

16. स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य हैं-

(a) आत्मा (b) ईश्वर

(c) जड़ तत्व (d) इनमें से कोई नहीं

According to Spinoza, substance is -

(a) Soul (b) God

(c) Matter (d) None of these

17. कारण कार्य नियम है-

(a) दार्शनिक (b) वैज्ञानिक

(c) सामान्य (d) इनमें से कोई नहीं

The law of Causation is -

(a) Phiolosophical (b) Scientific

(c) General (d) All of these

18. आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद के समर्थक है-

(a) प्लेटो (b) बर्कले

(c) हीगेल (d) इनमें से कोई नहीं

The supporter of the Subjective Idealism is-

(a) Plato (b) Berkley

(c) Hegal (d) None of them

19. निम्न में कौन अभाव का प्रकार है ?

(a) संसर्गभाव (b) अन्योन्यावाभाव

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Which of the following is a type of non-existances

(a) Sansargabhava (b) Anyonyabhava

(c) Both a & b (d) None of the above

20. नीतिशास्त्र एवं समाज दर्शन के बीच सम्बन्ध है-

(a) घनिष्ठ (b) विरोधात्मक

(c) घनिष्ठ एवं विरोधात्मक (d) इनमें से कोई नहीं

The relationship between Ethics and Social Philosophy is-

(a) Close (b) Contrary

(c) Both close & contrary (d) None of these

21. 'कर्मण्येवाधिरस्ते मा फलेषु कदाचन्' यह किस ग्रन्थ का वचन है-

(a) गीता (b) ब्रह्मसूत्र

(c) कठ उपनिषद् (d) मनुस्मृति

The Scripture that asserts 'Karmanyevadhikaraste ma phaleshu kadachan' is-

(a) The Gita (b) Brahmasutra

(c) Kathopnisada (d) Mansmrti

22. गीता में स्वधर्म का अर्थ है-

(a) सामान्य धर्म (b) राजधर्म

(c) युग धर्म (d) वर्ण धर्म

The meaning of Swadharma is-

(a) General duty (b) Rajadharma

(c) Yugdharama (d) Varna Dharma

23. आत्मा की सत्यता के लिए निम्न में से कौन सही है-

(a) व्यावहारिक (b) पारमार्थिक

(c) प्रतिभाषिक (d) इनमें से कोई नहीं

Which of the following is the truth of Soul

(a) Practical (b) Parmarthika

(c) Pratibhasika (d) None of these

24. भारतीय दर्शन नहीं है-

(a) निराशावादी (b) अध्यात्मवादी

(c) प्राकृतिक (d) इनमें से कोई नहीं

Indian knowledge is not-

(a) Pessimistic (b) Spiritual

(c) Natural (d) None of these

25. सांख्यकारिका के रचयिता हैं-

(a) कपिल (b) कनाद

(c) गौतम (d) ईश्वर कृष्ण

Sankhya Karika is written by-

(a) Kapil (b) Kanada

(c) Gautam (d) Isvarkrishna

26. बुद्ध के अनुसर त्रिरत्न क्या है ?

(a) शील (b) समाधि

(c) प्रज्ञा (d) इनमें से कोई नहीं

What is Tri-Ratna according to the Buddha-

(a) Sila (b) Samadhi

(c) Prajna (d) All of the these

27. सांख्य दर्शन है :

(a) एकवादी (b) द्वैतवादी

(c) अनेकवादी (d) इनमें से कोई नहीं

Sankhaya Philosophy is-

(a) Monistic (b) Dualistic

(c) Polythestic (d) None of these

28. शंकराचार्य द्वारा रचित ग्रन्थ है-

(a) ब्रह्म सूत्र (b) सांख्यकारिका

(c) योग सूत्र (d) श्रीभाष्य

The book written by Shankaracharya-

(a) Brahma Sutra (b) Sankhya Karika

(c) Yogasutra (d) Sribhasya

29. न्याय दर्शन है-

(a) प्रत्ययवादी (b) प्रयोजनवादी

(c) वस्तुवादी (d) संशयवादी

Nyaya Philosophy is-

(a) Idealist (b) Teleological

(c) Realistic (d) Sceptic

30. इनमें से कौन जैन सम्प्रदाय है-

(a) हीनयान (b) महायान

(c) श्वेताम्बर (d) इनमें से सभी

Which of the following belongs to the Jaina school?

(a) Hinayana (b) Mahayana

(c) Swetambara (d) All of these

31. शंकराचार्य के अनुसार जगत् है-

(a) पारमार्थिक सत्य (b) व्यावहारिक सत्य

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

The World according to Shankaracharya is-

(a) Transcendental (b) Practical

(c) Both (d) None of these

32. मोक्ष के लिये निर्वाण शब्द किस दर्शन में प्रयुक्त हुआ है-

(a) सांख्य (b) मीमांसा

(c) बौद्ध (d) जैन

Which philosophy uses the term 'Nirvana' for liberation?

(a) Sankhya (b) Mimansa

(c) Buddhism (d) Jaina

33. पुरुषार्थ हैं-

(a) दो (b) तीन

(c) चार (d) इनमें से कोई नहीं

The types of Purushartha :

(a) Two (b) Three

(c) Four (d) None of these

34. उपनिषदों का सार है-

(a) रामायण (b) गीता

(c) महाभारत (d) इनमें से कोई नहीं

The essence of the Upanisadas-

(a) The Ramayana (b) The Gita

(c) The Mahabharata (d) None of these

35. आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद के समर्थक हैं-

(a) प्लेटो (b) बर्कले

(c) हीगेल (d) इनमें से कोई नहीं

The supporter of Subjective Idealism-

(b)Plato (b) Berkeley

(c) Hegal (d) None of these

36. फिलॉसफी का अर्थ है-

(a) नियमों का आविष्कार (b) ज्ञान के प्रति प्रेम

(c) ज्ञान के प्रति अरूचि (d) इनमें से कोई नहीं

The meaning of Philosophy is-

(a) Invention of Laws (b) Love for knowledge

(c) Non-interest to knowledge (d) None of these

37. शंकर के अनुसार सत्-चित्-आनंद कौन हैं?

(a) ईश्वर (b) माया

(c) ब्रह्म (d) इनमें से कोई नहीं

Who among the following is Sat-Cit-Anand according to Sankar

(a) God (b) Maya

(c) Brahma (d) None of these

38. आस्तिक दर्शन की संख्या है-

(a) आठ (b) छः

(c) तीन (d) पाँच

The number of Orthodox Philosophy is-

(a) Eight (b) Six

(c) Three (d) Five

39. पर्यावरणीय नीतिशास्त्र है-

(a) मनुष्य केन्द्रित (b) जीवन केन्द्रित

(c) पशु केन्द्रित (d) इनमें से कोई नहीं

Environmental Ethics is-

(a) Man-centric (b) Life-centric

(c) Animal centric (d) None of these

40. अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र को कहते हैं-

(a) व्यावहारिक नीतिशास्त्र (b) अधिनीतिशास्त्र

(c) आदर्शमूलक नीतिशास्त्र (d) उपर्युक्त सभी

Applied Ethics is called-

(a) Practical ethics (b) Meta ethics

(c) Idealistic ethics (d) All of the above.

भाग-**II**

Section - II

(गैर-वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

(Non-Objective Type Questions)

खण्ड-ब

Group - B

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

(Short Answer Type Questions)

सभी प्रश्नों के उत्तर दें : **10 × 3 = 30**

Answer All Questions : **10 × 3 = 30**

1. दर्शन का शाब्दिक अर्थ क्या है?
   What is the Literal meaning of the term 'Darsan'?
2. भारतीय दर्शन में कितने नास्तिक सम्प्रदाय हैं ? उनके बतायें।
   How many schools are there in Heterodox Indian Phiolosophy? Specify their names.
3. आसक्त कर्म का क्या अर्थ है ?
   What is the meaning of Aasakta Karma ?
4. बौद्ध दर्शन में सम्यक् दृष्टि का क्या अर्थ है?
   What is the meaning of Samyak Drishti or Right Vision in the Buddhist philosophy ?
5. पंच स्कन्ध कौन-कौन से हैं?
   Specify Panch Skandha.
6. ज्ञान मीमांसा सिद्धांत के रूप में बुद्धिवाद को परिभाषित करें।
   Define Rationalism as an Epistemological Theory.
7. जी.ई. मूर ने 'शुभ' के बारे में क्या मत दिया है ?
   What position has been taken by G.E. Moore regarding the concept of 'Good'?
8. अरस्तु के अनुसार कारण कितने प्रकार के होते हैं?
   How many kinds of causes are accepted by Aristotle?
9. चिकित्सा नीतिशास्त्र के आदर्शों का परिचय दीजिय।
   Show your acquaintance with the ideals of medical ethics.
10. व्यावसायिक नीतिशास्त्र के अन्तर्गत सभी प्रकार के व्यापार का आधार क्या है?
    What is/are the ground (s) of all business in Professional Ethics?

खण्ड-स

Group - C

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

(Long Answer Type Questions)

11. पुरुषार्थ क्या है? स्पष्ट कीजिए।
    What is Purushartha ? Explain
12. बुद्ध का 'द्वितीय आर्यसत्य' क्या है? स्पष्ट करें।
    What is the 'Second Noble Truth' of Buddha ? Explain
13. अद्वैत वेदांत में ब्रह्म की अवधारणा क्या है ? स्पष्ट कीजिए।
    What is the concept of Brahma in Advaita Vedanta ? Explain
14. अरस्तु का चतुष्कोटि कारणतावाद का सिद्धांत स्पष्ट कीजिए?
    Explain Aristotle's fourfold causation?
15. मानसिक पर्यावरण क्या है? बताइए।
    What is mental environment? Explain.

-ANSWER-

1. (a)	2. (b)	3. (a)	4. (c)	5. (d)	6. (a)
7. (a)	8. (a)	9. (c)	10. (a)	11. (c)	12. (c)
13. (c)	14. (a)	15. (d)	16. (b)	17. (d)	18. (b)
19. (c)	20. (a)	21. (a)	22. (d)	23. (b)	24. (a)
25. (d)	26. (d)	27. (b)	28. (a)	29. (a)	30. (c)
31. (b)	32. (c)	33. (c)	34. (b)	35. (b)	36. (b)
37. (c)	38. (b)	39. (b)	40. (a)		

-ANSWER-

1. दर्शन शब्द 'दृश' धातु से उत्पन्न है। इस कारण तथा दृश्यते अनेन इति दर्शनम् के आधार पर दर्शन का शाब्दिक अर्थ है- देखना, जिसके द्वारा देखा जाय या जिसमें देखा जाए।
2. भारतीय दर्शन में तीन (३) नास्तिक सम्प्रदाय हैं-चार्वाक, जैन तथा बौद्ध।
3. आसक्त कर्म वह है जिसमें फल की आशा निहित रहती है।
4. वस्तुओं की अनित्यता का बोध, बौद्ध दर्शन में सम्यक् दृष्टि कहलाती है।
5. पंच स्कन्ध निम्नवत् हैं- रूप स्कन्ध, संज्ञा स्कन्ध, वेदना स्कन्ध, संस्कार स्कन्ध तथा विज्ञान स्कन्ध।
6. बुद्धिवाद एक ज्ञान मीमांसीय सिद्धांत है जिसके अनुसार ज्ञान की उत्पत्ति बुद्धि से होती है।
7. बीसवीं शताब्दी के दार्शनिक जी.ई.मूर के अनुसार शुभ अपरिभाष्य है, अर्थात शुभ की परिभाषा नहीं दी जा सकती।
8. अरस्तु के अनुसार कारण चार प्रकार के होते हैं- (i) उपादान कारण (ii) निमित्त कारण (iii) आकारिक कारण (iv) अन्तिम कारण
9. मानव-कल्याण तथा मानव सेवा चिकित्सा नीतिशास्त्र के आदर्श हैं।
10. व्यावसायिक नीतिशास्त्र के अन्तर्गत सभी प्रकार के व्यापार के आधार हैं-ईमानदारी, सच्चाई, सहमति और लाभ।
11. पुरुषार्थ शब्द दो शब्दों के मेल से बना है- पुरुष और अर्थ। इसलिए पुरुषार्थ वह है जो पुरुष के लिए आवश्यक है एवं लाभदायक है। अतः व्यक्ति के कर्मों के लक्ष्य को ही पुरुषार्थ कहा जाता है। जिनके लिए मनुष्य चेष्टाएँ करता है, वे ही उसके पुरुषार्थ हैं। भारतीय विचारकों ने ऐसे चार आदर्श या साध्य बताए हैं, जो मनुष्य के इहलोक और परलोक दोनों के प्रधानलक्ष्य बन जाते हैं। इन्हीं चारों आदर्शों से प्रेरित होकर मनुष्य के सभी कार्य होते हैं। चार पुरुषार्थ हैं- धर्म, काम, अर्थ और मोक्ष।

    धर्म से यहाँ मनुष्य के उन सभी कर्तव्यों का बोध होता है जिन्हें शास्त्रों ने सभी मानवीय क्षेत्रों को ध्यान में रखकर निर्धारित किया है। जीवन के सभी क्षेत्रों में कर्तव्यों का समुचित पालन करनेवाला व्यक्ति ही सच्चा धार्मिक व्यक्ति है। यह मोक्ष प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण साधन है। भारतीय विचारक अर्थ की महत्ता स्वीकार करते हैं लेकिन इसे परमसाध्य नहीं मानते। यह मोक्ष का केवल एक साधन है। काम को दो अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है- सामान्य अर्थ और विशेष अर्थ। सामान्य अर्थ में अनुभवजन्य सुख काम है और विशेष अर्थ में यह लैंगिक क्रिया है। मोक्ष अन्तिम पुरुषार्थ है। यह एक ऐसी अवस्था है जहाँ दुःखों का पूर्ण अभाव रहता है। संसार के बन्धनों से छुटकारे की इच्छा ही मोक्ष पुरुषार्थ है। धर्म और अर्थ आदर्श जीवन की दृष्टि से चरम लक्ष्य हैं। भारतीय विचारक मोक्ष को सर्वोच्च आदर्श मानते हैं।
12. बुद्ध के द्वितीय आर्यसत्य में दुःख की उत्पत्ति पर विचार किया गया है। प्रत्येक घटना का कोई कारण अवश्य होता है। दुःख भी एक घटना का कार्य है। इसलिए इसका भी कोई कारण अवश्य होना चाहिए। प्रायः सभी भारतीय विचारकों ने अज्ञान को ही दुःख का मूल कारण बताया है। बौद्ध दर्शन में दुःख की उत्पत्ति का सिद्धांत बौद्धों के 'प्रतीत्यसमुत्पाद' अर्थात् कार्यकारण सिद्धांत पर आधृत है। प्रतीत्यसमुत्पाद दो शब्दों के योग से बना है- 'प्रतीत्य; और 'समुत्पाद'। 'प्रतीत्य' का अर्थ है किसी वस्तु के उपस्थित होने पर और 'समुत्पाद' का अर्थ किसी अन्य वस्तु की उपस्थिति। इस सिद्धांत के अनुसार कोई भी वस्तु न तो शाश्वत है और न पूर्णतया नश्वर ही। बौद्ध दर्शन के अनुसार प्रत्येक वस्तु अपने बाद कुछ-न-कुछ अवश्य छोड़ जाती है। इसलिए किसी वस्तु का पूर्णतया नाश नहीं होता

है। प्रतीत्यसमुत्पाद को मान लेने पर दुःख का भी कारण मानना आवश्यक हो जाता है। बौद्ध-दर्शन में दुःख के कारण में बारह कड़ियों को तीनों कालों के अंतर्गत इस प्रकार रखा जा सकता है-

अतीत काल-	(i) अविद्या
	(ii) संस्कार
वर्त्तमान काल-	(iii) विज्ञान
	(iv) नामरुप
	(v) षडायतन
	(vi) स्पर्श
	(vii) वेदना
	(viii) तृष्णा
	(ix) उपादान
	(x) भव
भविष्य काल-	(xi) जाति
	(xii) जरा-मरण

प्रतीत्यसमुत्पाद को कई नामों से पुकारा जाता है। 'द्वादश निदान', भवचक्र', 'जन्म-मरण चक्र', 'धर्मचक्र' आदि इसके उल्लेखनीय नाम है।

13. सत् तथा जगत की औपनिषदिक अवधरणाओं का अनुसरण करते हुए शंकर त्रिकालाबाधित मूल सत्ता के रूप में ब्रह्म को स्वीकार कर ब्रह्म विवर्तवाद अथवा अद्वैतवाद की स्थापना करते हैं। ब्रह्म को निर्गुण, निराकार, निर्विशेष कहा गया है। यह सजातीय, विजातीय, स्वगत सभी भेदों से परे हैं। यह ज्ञानस्वरूप तथा स्वरूप ज्ञान है। यह ज्ञान का विषय नहीं हो सकता। शुद्ध रूप में यह 'सत्य-ज्ञानं-अनन्तम्' है। चूँकि ये सारे गुणों से परे हैं। अतः इसे 'नेति-नेति' द्वारा भी संबंधित किया जाता है। यह परब्रह्म है। मायोपहित ब्रह्म सगुण, साकार, सविशेष तथा व्यक्तिपूर्ण हो ईश्वर बन जाता है जिसे अपरब्रह्म भी कहा जाता है। ईश्वर के रूप में यह जगत का स्रष्टा, पालनकर्त्ता, संहारकर्त्ता, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान आदि अनंत गुणों का धारक है। ये सारे गुण ब्रह्म के 'तटस्थ लक्षण' कहे जाते हैं। ब्रह्म में माया स्थिति है। माया ब्रह्म की शक्ति है परन्तु माया ब्रह्म के स्वरूप को प्रभावित नहीं कर सकती। फिर भी माया द्वारा ब्रह्म पर आवरण डालने से जीव ब्रह्म से भिन्न तथा जगत को सत्य समझ लेता है। ब्रह्म ज्ञान की उत्पत्ति से जीव, ईश्वर तथा जगत भ्रामक हो जाते हैं तथा एकमात्र सच्चिदानंद ब्रह्म की सत्ता ही सत्य रह जाती है।

14. अरस्तु एक दार्शनिक थे। अतः उनका कारणता- संबंधी दृष्टिकोण भी दार्शनिक है। वह किसी घटना के कारण का पता लगाने में 'कैसे' और 'क्यों' का विवेचन करते हैं। कोई घटना 'कैसे' घटी और 'क्यों' घटी, यही पता लगाना उसका कारण जानना है। अतः यहाँ अरस्तु की कारणता संबंधी धारणा में 'कारण' और 'हेतु' दोनों ही धारणाएँ निहित हैं। 'हेतु' अथवा 'क्यों' का संबंध घटना की उत्पत्ति के लक्ष्य या प्रयोजन आदि से रहता है। उनकी मूल समस्या थी- विश्व की उत्पत्ति की व्याख्या प्रस्तुत करना। इसी आधार पर उन्होंने कारणता का भी व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

अरस्तु किसी घटना के लिए चार कारणों को मानते हैं-

(१) उपादान कारण-उदाहरण-मिट्टी की सुराही के उपादान कारण ये हैं- मिट्टी, बालू, पानी इत्यादि।

(२) निमित्त कारण-उदाहरण-सुराही का निमित्त कारण कुम्हार है।

(३) आकारिक कारण-मान लें कि एक बढ़ई है और उसके सम्मुख लकड़ियों का ढेर लगा है। परंतु उसके मन में किसी निश्चित आकार के होने से ही वह इनसे कुर्सी, टेबुल वगैरह कुछ भी बना सकता है। अतः निश्चित आकार रूप ही किसी वस्तु का आकारिक कारण कहलाता है।

(४) प्रयोजन कारण-सुराही या कुर्सी जिस अन्तिम रूप में बनकर तैयार होती है, वही उसका प्रयोजन कारण है। यह एक 'प्रेरक' के रूप में कार्य करता है।

अरस्तु इन कारणों को मुख्यतः दो मौलिक कारणों में अर्न्तभूत कर देते हैं- उपादान कारण तथा आकारिक कारण। अतः अरस्तु इन दो कारणों में भी आकारिक कारण को अत्यधिक मानते हैं।

15. मानसिक पर्यावरण है- मन को उन्नत बनाना। इसकी चंचलता तो इतनी अधिक होती है कि शरीर भले ही एक स्थान पर टिका रहे, मन पूरी दुनिया जहान का चक्कर लगा आता है। मन जब चंचल होता है तो अस्थिर हो जाता है। यह अस्थिरता मन में अनेकों विकार उत्पन्न कर देती है। जहाँ विकार उत्पन्न हो गये वहाँ दूषित प्रवृत्ति तो उत्पन्न होगी ही। मानव मन को वैसे भी छह विकारों से ग्रस्त माना गया है- काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, मत्सर। ये पाप कर्म मनुष्य को सही मार्ग से भटकाते हैं एवं व्यसनों की ओर ले जाते हैं। हमारा इतिहास इस बात का प्रमाण है कि किस प्रकार मानव ने व्यवसनों के जाल में फँसकर अपने चरित्र का नाश किया है। मानसिकता तो आज के मानव की इतनी अधिक दूषित हो गयी है कि वह अपने-पराये का भेद भी भूल गया है। एक समय ऐसा था कि जब लोग एक-दूसरे से अत्यधिक प्रेम करते थे। परंतु धीरे-धीरे मानव के मन में निःस्वार्थ भावना की जगह स्वार्थ की भावना आ गयी। अपने लाभ के चक्कर में यह भी भूल गया कि अपने लाभ के लिए वह जो काम कर रहा है, वह कहने योग्य है भी या नहीं। अपने भोजन के लिए निरीह- बेजुबान पशुओं-पक्षियों को मारकर मानव भोजन बनाता है। उसके मन में किंचित् भी दया की भावना नहीं उत्पन्न होती।

❑

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

PHILOSOPHY

Set-II

MODEL PAPER - II

कुल प्रश्नों की संख्या : ४० + १० + ५ = ५५

Total No. of Questions : 40 + 10 + 5 = 55

कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : २४

Total No. 1 of Printed Pages : 24

PHILOSOPHY

A.-PHL. (OPT)

समय : ३ घंटे १५ मिनट] [पूर्णांक : १००

Time : 3 Hours 15 Minutes] [Marks : 100

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

Instructions to the candidate :

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

   Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.
2. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

   Figures in the right hand margin indicate full marks.
3. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ भाग संख्या, खण्ड संख्या और प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

   Write Section number, Group number and Question number with every answer.

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में दो भाग-भाग-I एवं भाग-II हैं। भाग-I में खण्ड-अ एवं भाग-II में खण्ड-ब एवं खण्ड-स हैं।

भाग-I : भाग-I के खण्ड-अ के प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रकार के हैं। इस खण्ड के प्रश्न संख्या १ से ४० तक प्रत्येक १ अंक का है।

भाग-II : भाग-II के सभी प्रश्न गैर-वस्तुनिष्ठ हैं। भाग- II के खण्ड-ब के प्रश्न लघु उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी १० प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न ३ अंक का है। भाग- II के खण्ड-स के प्रश्न दीर्घ उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी ५ प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न ६ अंक का है।

***Instructions* :**

This paper consists of two Sections - Section - I and II. Section - I consists of Group - A and Section - II consists of Group-B & Group - C.

***Section*-I :** Group A of Section - I are Objective Type Questions. In this group Question Nos. 1 to 40 carry 1 mark each.

***Section*-II :** All Questions of Section - II are Non-Objective Type. Group -B of Section-II are Short Answer Type questions. Answer all 10 questions. Each question carries 3 marks. Group-C of Section-II are Long Answer Type Questions. Answer all 5 questions. Each question carries 6 marks.

Model Paper - II

भाग- I

Section - I

खण्ड-अ

Group - A

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(Objective Type Questions)

सभी 40 प्रश्नों के उत्तर दें। सही उत्तर का चयन करते हुए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दें:

40 × 1 = 40

Answer all the questions. Answer each question by selecting the correct answer

40 × 1 = 40

1. सांख्य दर्शन के प्रवर्तक हैं-

(a) गौतम (b) कपिल

(c) पतंजलि (d) रामानुज

The founder of Sankhya philosophy is-

(a) Gautam (b) Kapil

(c) Patanjali (d) Ramanuj

2. स्याद्वाद है-

(a) ज्ञान शास्त्रीय सिद्धान्त (b) तत्वशास्त्रीय सिद्धान्त

(c) दोनों (d) कोई नहीं

Syandvada is-

(a) An epistemological Theory (b) a metaphysical theory

(c) both a & b (d) None of these

3. बुद्ध के चतुर्थ आर्य सत्य को कहते हैं-

(a) दुःख समुदाय (b) दुःख है

(c) दुःख निरोध मार्ग (d) दुःख निरोध

The fourth Noble Truth of Buddha is called-

(a) Dukh Samudaya (b) Dukh

(c) Dukh Nirodh Marg (d) Dukh Nirodh

4. न्याय के अनुसार प्रत्यक्ष के लिए आवश्यक है-

(a) इन्द्रिय (b) विषय

(c) सन्निकर्ष (d) सभी

According Nyaya, it is essential for perception-

(a) Sense organ (b) Object

(c) Contact (d) All the above

5. प्रतीत्य समुत्पाद सिद्धान्त का आधार है-

(a) धार्म सिद्धान्त (b) नैतिक सिद्धान्त

(c) कारण-कार्य सिद्धान्त (d) इनमें से कोई नहीं

The basis of the Dependent Origination-

(a) Religious theory (b) Moral theory

(c) Causation theory (d) None of the above

6. स्याद्वाद सिद्धांत का संबंध है-

(a) जैन दर्शन (b) बौद्ध दर्शन

(c) दोनों (d) वेदान्त

The theory of Syadvada is related to-

(a) Jaina philosophy (b) Buddhist philosophy

(c) Both the above (d) Vedanta

7. **सत्ता अनुभवमूलक है, यह कथन है-**

(a) बर्कले (b) लॉक

(c) काण्ट (d) ह्यूम

'Reality is Experienced-based'-this statement relates to -

(a) Berkeley (b) Locke

(c) Kant (d) Hume

8. ऋत् की अवधारणा का वर्णन है-

(a) वेद में (b) उपनिषद में

(c) पुराण (d) इनमें से कोई नहीं

The concept of Rta is explained in-

(a) The Vedas (b) Upanishadas

(c) Purana (d) None of these

9. परम पुरुषार्थ है-

(a) काम (b) अर्थ

(c) धर्म (d) मोक्ष

Which is the highest Purusartha-

(a) Kama (b) Artha

(c) Dharma (d) Moksha

10. निष्काम कर्म का मूल सिद्धान्त है-

(a) सुख के लिए (b) कर्तव्य के लिए

(c) शुभ फल प्राप्ति के लिए (d) इनमें से कोई नहीं

The theory of Nishkaama Karma (non-attached actions) is -

(a) For pleasure (b) for duty sake

(c) to attain good results (d) None of these

11. 'मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ' कथन है-

(a) देकार्त (b) स्पिनोजा

(c) काण्ट (d) इनमें से कोई नहीं

'I think therefore I am', the statement belongs to-

(a) Descartes (b) Spinoza

(c) Kant (d) None of these

12. निम्न में से कौन नास्तिक है-

(a) न्याय दर्शन (b) सांख्य दर्शन

(c) चार्वाक (d) योग दर्शन

Who among the following is heterodox:-

(a) Nyaya Philosophy (b) Samkhya

(c) Charvak (d) Yoga

13. व्यापार नीतिशास्त्र अध्ययन है-

(a) मूल्यों का (b) आदर्शों का

(c) लाभ का (d) नैतिकता का

Professional Ehics is the study of:-

(a) Values (b) Ideals

(c) Profit (d) Morality

14. भौतिकवाद के अनुसार परम सत्ता है-

(a) वृक्ष (b) जड़

(c) चेतना (d) इनमें से कोई नहीं

According to Materialism, the Ultimate Reality is-

(a) Plants (b) Matter

(c) Consciousness (d) None of these

15. समीक्षात्मक किसका सिद्धान्त है ?

(a) काण्ट (b) लॉक

(c) बर्कले (d) इनमें से कोई नहीं

The founder of Criticism is-

(a) Kant (b) Locke

(c) Berkeley (d) None of these

16. अनुभववादी कौन है ?

(a) देकार्त (b) स्पिनोजा

(c) लॉक (d) इनमें से कोई नहीं

Who among the following is an Empirisist Philosopher?

(a) Descartes (b) Spinoza

(c) Locke (d) None of these

17. कौन आस्तिक दर्शन है ?

(a) जैन (b) वेदान्त

(c) बौद्ध (d) इनमें से कोई नहीं

Who among the following is an Orthodox Philosophy?

(a) Jaina (b) Vedanta

(c) Bauddha (d) None of these

18. इनमें से कौन बुद्धिवादी है ?

(a) लॉक (b) बर्कले

(c) देकार्त (d) इनमें से कोई नहीं

Who among the following is a Rationalist Philosopher?

(a) Locke (b) Berkeley

(c) Descartes (d) None of these

19. दर्शन शब्द की उत्पत्ति निम्न में से किस धातु से हुई है ?

(a) कृ धातु से (b) दृश् धातु से

(ब) लृ धातु से (d) इनमें से कोई नहीं

The term *darshan* is originated from the root verb:-

(a) Kri (b) drish

(c) Lri (d) None of these

20. सर्वोच्च शुभ किसे कहा जाता है?

(a) सापेक्ष शुभ को (b) निरपेक्ष शुभ को

(c) सापेक्ष और निरपेक्ष शुभ को (d) इनमें से कोई नहीं

The Highest Good is:-

(a) Relative Good (b) Categorical Good

(c) Both a & b (d) None of these

21. निम्नलिखित में कौन दण्ड के सिद्धान्त हैं ?

(a) निरोधात्मक (b) सुधार का सिद्धान्त

(c) प्रतिकारात्मक सिद्धान्त (d) ये सभी

Which of the following is a theory of Punishment?

(a) Deterrent Theory (b) Reformative Theory

(c) Retributive Theory (d) All of these

22. 'ऐसे ईस्ट परसिपी' किसका सिद्धान्त है?

(a) लॉक (b) बर्कले

(c) देकार्त (d) इनमें से कोई नहीं

Who gave the theory *esse est percipi*

(a) Locke (b) Berkeley

(c) Descartes (d) None of these

23. ब्रह्मसूत्र की रचना किसने की

(a) वादरायण (b) शंकर

(c) गौतम (d) इनमें से कोई नहीं

Brahmsutra is authored by

(a) Vadrayan (b) Sankar

(c) Gautam (d) None of these

24. अनुभववाद के समर्थक हैं-

(a) लॉक (b) बर्कले

(c) ह्यूम (d) इनमें से सभी

Who among the following supports Empiricism?

(a) Locke (b) Berkeley

(c) Hume (d) All of these

25. किसके अनुसार 'गीता माता' है-

(a) बाल गंगाधर तिलक (b) विनोबा भावे

(c) श्री अरविन्दो (d) महात्मा गाँधी

Who asserts the Gita as mother?

(a) Bal Gangadhar Tilak (b) Binoba Bhave

(c) Sri Aurobindo (d) mahatma Gandhi

26. अनेकान्तवाद की आधारशिला है-

(a) नयवाद (b) स्याद्वाद

(c) मोक्षवाद (d) पुद्गलवाद

The foundation of Anekantvaad is:

(a) Nayavaad (b) Syadvaad

(c) Mokshavaad (d) Pudgalvaad

27. जैन दर्शन के २४वें तीर्थंकर कौन हैं-

(a) महावीर (b) ऋषभदेव

(c) पार्श्वनाथ (d) इनमें से कोई नहीं

Who is the 24th Tirthankar in the Jaina School?

(a) Mahavir (b) Rishabhdev

(c) Parshwanath (d) None of these

28. प्रतीत्यसमुत्वाद किसका सिद्धान्त है-

(a) वेदान्त (b) बौद्ध

(c) जैन (d) मीमांसा

The Theory of Dependent Origination belongs to:-

(a) Vedanta (b) Buddhism

(c) Jainism (d) Mimansa

29. लोक संग्रह का सिद्धान्त है-

(a) सुखवाद (b) सर्व कल्याणवाद

(c) पूर्णतावाद (c) ये सभी

The Theory of Lok Sangraha is-

(a) Hedonism (b) Theory for All Welfare

(c) Perfectionism (d) All the above

30. बुद्ध के अनुसार कितने आर्य सत्य हैं-

(a) दो (b) चार

(c) तीन (d) इनमें से कोई नहीं

The number of The Noble Truths according to Buddha is:

(a) Two (b) Four

(c) Three (d) none of these

31. अरस्तु के अनुसार कारण है-

(a) उपादान (b) आकारिक

(c) अन्तिम (d) इनमें से सभी

Cause, according to Aristotle is-

(a) Material (b) Formal

(c) Final (d) All of these

32. निम्न में कौन पुरुषार्थ नहीं है-

(a) अर्थ (b) काम

(c) धर्म (d) ईश्वर

Which of following is not Purushartha?

(a) Artha (b) Kaam

(c) Dharma (d) God

33. प्रथम आर्य सत्य है-

(a) दुःख है (b) दुःख का कारण

(c) आनन्द (d) इनमें से कोई नहीं

The first Noble Truth is-

(a) There is sufferin (b) There is cause to suffering

(c) There is pleasure (d) None of these

34. पूर्व स्थापित सामंजस्यवाद किसके द्वारा दिया है-

(a) देकार्त (b) स्पिनोजा

(c) लाइबनीज (d) इनमें से कोई नहीं

The theory of Pre-Eshtablished Harmony is given by-

(a) Descartes (b) Spinoza

(c) Leibnitz (d) None of these

35. जन्मजात प्रत्यय संबंधी सिद्धान्त का खंडन किया है-

(a) बर्कले (b) काण्ट

(c) लॉक (d) इनमें से कोई नहीं

Who among the following did refute the Innate Ideas?

(b) Berkeley (b) Kant

(c) Locke (d) None of these

36. वैशेषिक दर्शन के प्रणेता कौन हैं-

(a) महावीर (b) कणाद

(c) बर्कले (d) दुर्वासा

Who is the founder of Vaisesika Philosophy?

(a) Mahavir (b) Kanad

(c) Berkeley (d) Durwasa

37. किसके द्वारा प्राप्त ज्ञान सार्वभौम एवं अनिवार्य होता है-

(a) अनुभववाद (b) बुद्धिवाद

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Universal and necessary knowledge is claimed to attain in:

(a) Empiricism (b) Rationalism

(c) Both a & b (d) None of these

38. देकार्त है-

(a) बुद्धिवादी (b) अनुभववादी

(c) समीक्षावादी (d) इनमें से कोई नहीं

Descartes is:

(a) Rationalist (b) Empiricist

(c) Criticism (d) None of these

39. धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष है-

(a) योग के चार सोपान (b) कर्म सिद्धान्त

(ब) चार पुरुषार्थ (क) नैतिकता

Dharma, Artha, Kaam and Moksha are-

(a) Stages in Yoga (b) Law of Karma

(c) Four Purushartha (d) Morality

40. 'ज्ञान संश्लेषणात्मक अनुभवपूर्ण निर्णय है': किस सिद्धांत से संबंधित है-

(a) बुद्धिवाद (b) अनुभवाद

(c) समीक्षावाद (d) इनमें से कोई नहीं

'Knowledge is a synthetic judgement a priori'- relates to:

(b) Rationalism (b) Empiricism

(c) Criticism (d) None of these

भाग-II

खण्ड-ब

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

(Short Answer Type Questions)

सभी प्रश्नों के उत्तर दें : **10 × 3 = 30**

Answer All Questions : **10 × 3 = 30**

1. 'फिलॉस्फी' का शाब्दिक अर्थ क्या है?

   What is the literal meaning of the term 'Philosophy'?

2. भारतीय दर्शन में कितने आस्तिक सम्प्रदाय हैं ?

   How many schools are there in Orthodox Indian Philosophy?

3. पुरुषार्थ के संदर्भ 'काम' का क्या अर्थ है ?

   What is the meaning of Kaam in the context of Purushartha?

4. अनासक्त कर्म का क्या अर्थ है ?

   What is the meaning of Anaasakta Karma?

5. आर्य सत्य कितने प्रकार के हैं ?

   What are the types of Arya Satya or The Noble Truths?

6. अनुभववाद क्या है ?

What is Empiricism?

7. संकल्प स्वातंत्र्य का क्या अर्थ है ?

What is the meaning of Freedom of Will?

8. कारणता सिद्धांत से आप क्या समझते हैं ?

What do you understand by the Causal Principle?

9. चिकित्सा नीतिशास्त्र से आप क्या समझते हैं ?

What do you mean by Medical Ethics?

10. शिक्षा का मूल उद्देश्य क्या है?

What is the main objective of Education?

खण्ड-l

Group - C

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

(Long Answer Type Questions)

11. वैशेषिक के अनुसार द्रव्य की अवधारणा क्या है ?

What is the concept of Dravya according to Vaisheshika ?

12. शंकर के जगत का स्वरूप क्या है ? विस्तृत रूप से व्याख्या करें।

What is the nature of Jagat or world to Shankar ? Describe in detail.

13. सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति त्रिगुणात्मक होती है। स्पष्ट कीजिए।

According to Sankhya philosophy the pracriti or nature is Trigunatmaka? Explain.

14. वस्तुवाद का परिचयात्मक वर्णन कीजिए।

Give an introduction of Realism.

15. व्यावसायिक नीति-दर्शन क्या है ?

What is Professional Ethic Philosophy.

-ANSWER-

1. (b)	2. (a)	3. (c)	4. (d)	5. (c)
6. (c)	7. (a)	8. (a)	9. (d)	10. (c)
11. (a)	12. (c)	13. (a)	14. (b)	15. (a)
16. (c)	17. (b)	18. (c)	19. (b)	20. (b)
21. (d)	22. (b)	23. (a)	24. (d)	25. (d)
26. (b)	27. (a)	28. (b)	29. (a)	30. (b)
31. (d)	32. (d)	33. (a)	34. (c)	35. (c)
36. (b)	37. (b)	38. (b)	39. (c)	40. (c)

-ANSWER-

1. 'फिलॉसफी' का शाब्दिक अर्थ है- ज्ञान के प्रति प्रेम।
2. भारतीय दर्शन में छः आस्तिक सम्प्रदाय हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं-न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त।
3. काम शब्द 'कृ' धातु से बना है, जिस कारण वह सभी क्रियाएँ जो की जाती है, वह काम है। परन्तु, पुरुषार्थ के संदर्भ में, मनुष्य की जैविक यौन- क्रियाओं को काम कहा जाता है।
4. अनासक्त कर्म वह है जिसमें फल की आशा निहित नहीं रहती है।
5. आर्य सत्य चार (४) प्रकार के हैं- (क) सर्वम् दुःखम् (ख) दुःख समुदाय (ग) दुःख निरोध (घ) दुःख निरोध मार्ग या दुःख निरोधगामिनी प्रतिवाद।
6. अनुभववाद, बुद्धिवाद का विरोधी सिद्धांत है जिसके अनुसार ज्ञान का स्त्रोत अनुभव है।
7. जब मनुष्य में इच्छा संघर्ष हो तथा उसका अपनी इच्छा से किसी एक चुनाव कर लेना संकल्प स्वातंत्र्य कहलाता है। यह नैतिकता का एक आधार है।
8. कारणता सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक घटना या कार्य का कोई-न-कोई कारण अवश्य होता है।
9. चिकित्सा नीतिशास्त्र, अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र की एक शाखा है जिसमें चिकित्सा संबंधी समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।
10. शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाना है।
11. वैशेषिक दर्शन में 'द्रव्य' को एक विशेष अर्थ में लिया गया है। द्रव्य वह है जो गुण और कर्म को धारण करता है। गुण और कर्म बिना किसी वस्तु या आधाार का नहीं रह सकते। इसका आधार ही द्रव्य कहलाता है।

    गुण और कम द्रव्य में रहते हुए भी द्रव्य से भिन्न हैं। द्रव्य गुणयुक्त है, किन्तु गुण और कर्म गुणरहित है। इन्हें गुणवान नहीं माना जा सकता। गुण सभी द्रव्यों में पाये जाते हैं, किन्तु कर्म सभी द्रव्यों में नहीं रहते। कर्म के लिए स्थान की आवश्यकता होती है। ससीम द्रव्य ही स्थान घेरते हैं, इसलिए ये कर्मयुक्त हैं। असीम द्रव्य दिक् में नहीं, इसलिए इन्हें गति या कर्म के लिए स्थान नहीं मिलता। अतः असीम द्रव्यों में कर्म नहीं पाया जाता।

वैशेषिक के अनुसार नौ प्रकार के द्रव्य पाये जाते हैं-(१) आत्मा (२) अग्नि (३) वायु (४) आकाश (५) जल (६) पृथ्वी (७) दिक् (८) काल और (९) मन।

उपर्युक्त नौ द्रव्य 'पंचमहाभूत' कहे जाते हैं। वे हैं- पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल और आकाश। वैशेषिक दर्शन इसी पंचमहाभूत से विश्व का निर्माण मानता है। सभी भौतिक पदार्थ भूत ही है। वैशेषिक दर्शन द्रव्यों का वर्गीकरण ज्ञानात्मक आधार पर करते हैं। हमें पाँच इन्द्रियाँ हैं, जिसके द्वारा बाह्य जगत का ज्ञान होता है।

वैशेषिक द्रव्यों को नश्वर मानता है, किन्तु इसके परमाणु अनश्वर है। इन्हीं परमाणुओं से विश्व के सभी पदार्थ बनते हैं। इन परमाणुओं का प्रत्यक्ष नहीं होता है। इनका ज्ञान अनुमान द्वारा होता है।

भौतिक द्रव्यों का परमाणुओं की व्याख्या के लिये दिक् और काल को मानना आवश्यक है। इसीलिए वैशेषिक दर्शन में दिक् और कार्य को स्वतंत्र द्रव्यों के रूप में स्वीकार किया गया है।

मन एक आंतरिक इंद्रिय है। मन का प्रत्यक्ष नहीं होता। इसका ज्ञान अनुमान द्वारा होता है। इसके द्वारा सुख, दुःख, हर्ष, विषाद आदि आंतरिक अनुभूतियों का ज्ञान होता है। मन अविभाज्य है।

12. जगत् तथा परमसत् के विषय में विरोधापूर्ण औपनिषदिक विचारों में सामंजस्य लाकर शंकर जगत् की व्याख्या करते हैं-'ब्रह्म सत्य जगन्नमिथ्या।'

शंकर सत् तथा असत् की कसौटी के रूप में क्रमशः 'अनुवृत्ति' तथा 'व्यभिचार' को स्वीकार करते हैं। अनुवृत्ति का अर्थ 'त्रिकालबाधित' व्यापकता है जबकि व्यभिचार अनित्य तथा विशेष का द्योतक है। इस आधार पर एकमात्र सत्ता ब्रह्म की सिद्ध होती है, क्योंकि वह शाश्वत तथा व्यापक है जबकि परिवर्तनशील असत् सिद्ध होता है इसी कारण सत्कार्यवादी होकर भी शंकर जगत की व्याख्या 'सत्कार्यवाद' के आधार पर करते हैं।

रस्सी में साँप की प्रतीति का संदर्भ लेते हुए यह कहना उपयुक्त है कि जगत ब्रह्म पर अध्यासित सिद्ध होता है। चूँकि ज्ञान द्वारा 'अध्यास' का नाश होता है और 'अधिष्ठान' सत् रह जाता है। इसलिए ब्रह्म ज्ञान के बाद जगत की जगह ब्रह्म ही सत्रूप में स्पष्ट होता है।

जगत को मिथ्या कहने के बावजूद शंकर इसे आकाशकुसुम की तरह 'तुच्छ' तथा स्वप्निल वस्तुओं जैसी प्रतिभासिक सत्ता नहीं मानते हैं, परन्तु यह पारमार्थिक रूप से भी निरपेक्षतः सत्य नहीं है क्यांकि इसकी सत्ता विवर्त जैसी है। यह व्यावहारिक स्तर पर सत्य है।

शंकर इसे सद्असद्विलक्षण या अनिर्वचनीय कहते हैं। ब्रह्म के साथ इसका तादात्मय है क्योंकि यह उससे न तो भिन्न है न अभिन्न है।

व्यावहारिक स्तर पर जगत को मिथ्या नहीं कहा जा सकता तथा पारमार्थिक स्तर पर इसे मिथ्या सिद्ध करने की आवश्यकता ही समाप्त हो जाती है।

13. प्रकृति विश्व का मूल कारण है। यह असीम, अनादि एवं अनंत है। विश्व के सभी पदार्थों का कारण प्रकृति है तथा स्वयं अकारण एवं स्वतंत्र है। यह 'प्रधान' और 'एक' है। यह देश और काल की सीमा से परे है। यह नित्य, अचेतन, विकासशील, वास्तविक, सतत् क्रियाशील है। इसका ज्ञान प्रत्यक्ष द्वारा नहीं बल्कि गुणों के आधाार पर अनुमान द्वारा होता है।

गुणों की साम्यावस्था को ही प्रकृति कहा गया है, इसलिए त्रिगुणमयी है। गुण तीन प्रकार के हैं-

(१) सत्वगुण-यह हल्का, लघु, प्रकाश तथा आनंद का कारण है। सफेद रंग वाले इसी गुण से मनुष्य में सादगी, सद्विचार एवं सच्चरित्रता की भावना उत्पन्न होती है। वस्तु को प्रतिबिम्बित करने की क्षमता तथा उनमें उधर्वगति प्रवृत्ति इसी के कारण है।

(२) रजसगुण-यह गति का तत्व है, जिससे चंचलता, सक्रियता तथा उत्तेजना आया करती है। सभी प्रकार की दुःखात्मक अनुभूतियाँ इसी के कारण हैं। इसका रंग लाल है।

(३) तमस्गुण-यह अलंकार, अज्ञान तथा निष्क्रियता का प्रतीक है। यह गुरु है तथा इसका रंग काला है।

ये तीनों गुण हमेशा सक्रिय रहते हैं। जब प्रलय की अवस्था आती है तो तीनों अलग-अलग हो जाते हैं, लेकिन गतिशीलता बनी रहती है, इसे 'स्वरूपपरिणाम' कहते हैं। जब प्रकृति के सभी आपस में सक्रिय होकर एक-दूसरे पर अधिापत्य जमाने का प्रयास करने लगते हैं तब जो परिवर्तन होता है। उसे 'विरुप परिणाम' कहते हैं। तीनों गुण परस्पर विरोधी होते हुए भी विश्व की व्याख्या के लिए उसी प्रकार आवश्यक है, जिस प्रकार दीया, बाती तथा तेल प्रकाश के लिए आवश्यक है।

14. वस्तुवाद ज्ञानशास्त्रीय सिद्धांत है। वस्तुवाद की यह विशेषता है कि ज्ञेय और अस्तित्व के लिए ज्ञाता से पूर्णतः स्वतंत्र है। इस प्रकार वस्तुवाद वह ज्ञानशास्त्रीय सिद्धांत है जो ज्ञान के विषय को ज्ञाता से स्वतंत्र मानता है। यह किसी भी पदार्थ को अपने अस्तित्व के लिये ज्ञाता या मन पर आश्रित नहीं मानता है। विश्व के प्रत्येक पदार्थ का ज्ञाता का स्वतंत्र अस्तित्व होता है। इसकी यह मान्यता है कि ज्ञान के द्वारा ज्ञात पदार्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता। जो पदार्थ जिस रूप में रहता है उसका ज्ञान उसी रूप में होता है। इस प्रकार वस्तुवाद के अनुसार वस्तुओं का स्वरूप और ज्ञान ज्ञाता से स्वतंत्र है।

वस्तुवाद के मुख्य रूप से दो प्रभेद माने गये हैं-(क) लोकप्रिय वस्तुवाद एवं (ख) दार्शनिक वस्तुवाद।

इन दोनों में लोकप्रिय वस्तुवाद जनसाधाारण का मत है। सर्वसाधारण का यह सिद्धांत होने के कारण इसे कभी-कभी Common Sense Realism भी कहा जाता है।

लोकप्रिय वस्तुवाद को दार्शनिक आधार पर संतोषप्रद नहीं माना गया है। स्वप्न, विभ्रम आदि भ्रांति है जिनमें कभी-कभी अयथार्थ हमें वास्तविक जान पड़ता है। विभ्रम की अवस्था में हम कभी-कभी रस्सी को साँप समझ बैठते हैं। इस तरह भ्रांतिपूर्ण अनुभूतियों की व्याख्या लोकप्रिय वस्तुवाद के द्वारा नहीं हो सकती है।

लोकप्रिय वस्तुवाद की असफलता को देखकर दार्शनिकों ने उसमें संशोधन न करके बौद्धिक आधार पर वस्तुवाद को स्थापित करने का प्रयास किया है, जिसे दार्शनिक वस्तुवाद कहा जाता है। दार्शनिक वस्तुवाद के तीन रूप माने गये हैं-(१) प्रत्यय प्रतिनिधित्ववाद (२) नवीन वस्तुवाद (३) समीक्षात्मक वस्तुवाद।

15. मानव को जन्म तो मिल गया, लेकिन जीवन-यापन के लिये अर्थ की आवश्यकता होती है। सबसे प्रथम आवश्यकता तो भोजन की ही होती है। यह भोजन बिना रुपये-पैसे की व्यवस्था किये बिना तो संभव नहीं है। मानव जीवन की तीन मूलभूत आवश्यकताएँ हैं-रोटी, कपड़ा और मकान। इन तीनों ही मूलभूत आवश्यकताओं के लिए धान की आवश्यकता है। यह धान की आवश्यकता कुछ-न-कुछ व्यवसाय करके ही पूरी हो सकती है। व्यवसाय की भी कई श्रेणियाँ हैं- सरकारी व्यवसाय तथा निजी व्यवसाय।

धीरे-धीरे सभ्यता के विकास के साथ-साथ जनता की माँग बढ़ी जिस कारण नये-नये व्यवसायों ने जन्म दिया। ये व्यवसाय विभिन्न कार्यकुशलताएँ लिए हुए लोगों की माँग करने लगे। ये माँगें विभिन्न नये-नये व्यवसायिक पाठ्यक्रमों द्वारा पूरा की जाने लगी।

धर्म का पालन करते हुए अर्थ अर्थात् धान कमाना, यह शर्त भारतीय दर्शन में लगा दी गई ताकि यदि कोई व्यक्ति अनैतिक रूप से अर्थ कमाता है तो वह धर्म नहीं है।

जैन धर्म में तो बारह महासिद्धांतों के अंतर्गत कहा गया है कि गलत नाप-तौल का व्यापार में सहारा न लें।

प्रत्येक कार्य व्यापार में कुछ नैतिक मूल्य भी पाये जाते हैं। ये नैतिक मूल्य मानव को उसकी सीमा से बाहर नहीं जाने देते परंतु यदि आज के समय पर दृष्टिपात करें तो हम पायेंगे कि आज किसी भी विषय में नैतिक मूल्य नहीं रह गया है। बेईमानी, चोरी, फरेब, झूठ तो जैसे लक्ष्य की तरह से बन गये हैं। मानव को इस बात का डर ही नहीं है कि उसका कोई भी अनैतिक कृत्य उसे पतन के मार्ग पर ले जायेगा। हर व्यवसाय में मानो जैस कि विशेष रूप से बेईमानी करने के विशेष मार्ग हैं- बेईमान के विशेष हैं।

❑

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

PHILOSOPHY

Set-III

MODEL PAPER - III

कुल प्रश्नों की संख्या : 40 + 10 + 5 = 55

Total No. of Questions : 40 + 10 + 5 = 55

कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 24

Total No. 1 of Printed Pages : 24

PHILOSOPHY

A.-PHL. (OPT)

समय : 3 घंटे 15 मिनट] [पूर्णांक : 100

Time : 3 Hours 15 Minutes] [Marks : 100

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

Instructions to the candidate :

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

   Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.
2. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

   Figures in the right hand margin indicate full marks.
3. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ भाग संख्या, खण्ड संख्या और प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

   Write Section number, Group number and Question number with every answer.

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में दो भाग-भाग-I एवं भाग-II हैं। भाग-I में खण्ड-अ एवं भाग-II में खण्ड-ब एवं खण्ड-स हैं।

भाग-I : भाग-I के खण्ड-अ के प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रकार के हैं। इस खण्ड के प्रश्न संख्या 1 से 40 तक प्रत्येक 1 अंक का है।

भाग-II : भाग-II के सभी प्रश्न गैर-वस्तुनिष्ठ हैं। भाग-II के खण्ड-ब के प्रश्न लघु उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी 10 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है। भाग-II के खण्ड-स के प्रश्न दीर्घ उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी 5 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का है।

***Instructions* :**

This paper consists of two Sections - Section - I and II. Section - I consists of Group - A and Section - II consists of Group-B & Group - C.

***Section*-I :** Group A of Section - I are Objective Type Questions. In this group Question Nos. 1 to 40 carry 1 mark each.

***Section*-II :** All Questions of Section - II are Non-Objective Type. Group -B of Section-II are Short Answer Type questions. Answer all 10 questions. Each question carries 3 marks. Group-C of Section-II are Long Answer Type Questions. Answer all 5 questions. Each question carries 6 marks.

Model Paper - III

भाग I

Section - I

खण्ड–अ

Group - A

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(Objective Type Questions)

सभी ४० प्रश्नों के उत्तर दें। सही उत्तर का चयन करते हुए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दें:

40 × 1 = 40

Answer all the questions. Answer each question by Selecting the correct answer

40 × 1 = 40

1. मीमांसा दर्शन के प्रवर्तक हैं-

(a) जैमिनी (b) कणाद

(c) कपिल (d) गौतम

The founder of Mimansa Philosophy is:

(a) Jaimini (b) Kanad

(c) Kapil (d) Gautam

2. वेदान्त दर्शन के प्रवर्तक हैं-

(a) वादरायण (b) महावीर

(c) शंकर (d) अक्षपाद

The founder of Vedanta Philosophy:

(a) Vadrayan (b) Mahavir

(c) Sankar (d) Akshapad

3. इनमें से कौन नास्तिक है-

(a) सांख्य (b) न्याय

(c) जैन (d) वेदान्त

Heterodox among the following is:

(a) Sankhya (b) Nyaya

(c) Jaina (d) Vedanta

4. गीता का उपदेश है-

(a) सकाम कर्म (b) निष्काम कर्म

(c) कर्म से संन्यास (d) ये सभी

Preaching of Gita is:

(a) Sakaam Karma (b) Nishkaam Karma

(c) Sanyas in Action (d) All the above.

5. **भारतीय दर्शन में अयथार्थ ज्ञान कहलाता है-**

(a) अप्रमा (b) प्रमा

(c) प्रमाण (d) इनमें से कोई नहीं

Invalid Knowledge in Indian Philosophy is called:

(a) Aprama (b) Prama

(c) Praman (d) None of these

6. **शिक्षा दर्शन एक शाखा है-**

(a) भौतिक विज्ञान (b) मनोविज्ञान

(c) रसायन शास्त्र (d) दर्शनशास्त्र

Educational philosophy is a branch of:

(a) Physics (b) Psychology

(c) Chemistry (d) Philosophy

7. **ज्ञान की प्राप्ति निगमनात्मक विधि से होती है-**

(a) बुद्धिवाद में (b) अनुभववाद में

(c) समीक्षावाद में (d) इनमें से कोई नहीं

Deductive method of knowledge is applied in

(a) Rationalism (b) Empiricism

(c) Criticism (d) None of these

8. **ज्ञान की प्राप्ति आगनात्मक विधि से होती है-**

(a) बुद्धिवाद (b) अनुभववाद

(c) समीक्षावाद (d) इनमें से कोई नहीं

Inductive method of Knowledge is applied in:

(a) Rationalism (b) Empiricism

(c) Criticism (d) None of these

9. **किसका मानना है कि कोई प्रत्यय जन्मजात नहीं होता है-**

(a) लॉक (b) देकार्त

(c) स्पिनोजा (d) इनमें से कोई नहीं

Who among the following refuted Innate Ideas?

(a) Locke (b) Descartes

(c) Spinoza (d) None of these

10. **जैन दर्शन में ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धान्त क्या है-**

(a) स्याद्वाद (b) अनेकान्तवाद

(c) ख्यातिवाद (d) इनमें से कोई नहीं

What is the theory of Relativity of knowledge in Jaina Philosophy?

(a) Syadvad (b) Anekantvad

(c) Khyativad (d) None of these

11. स्पिनोजा ने स्वीकारा है-

(a) अंत:क्रियावाद (b) समानान्तरवाद

(c) पूर्वस्थापित सामंजस्यवाद (d) इनमें से कोई नहीं

Spinoza accepts:

(a) Interactionalism (b) Parallelism

(c) Pre-Established Harmony (d) Non of these

12. अभाव के दो प्रकार हैं-

(a) संसर्गाभाव (b) अन्योन्याभाव

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Two types of Non-Existence:

(a) Sansargabhaav (b) Anyonyabhav

(c) Both a & b (d) None of these

13. वैशेषिक दर्शन में पदार्थों की कितनी संख्या स्वीकार की गयी है?

(a) तीन (b) चार

(c) सात (d) पाँच

Padartha, in Vaisesika Philosophy are:

(a) Three (b) Four

(c) Seven (d) Five

14. न्याय दर्शन के अनुसार प्रमाणों की संख्या है-

(a) दो (इ) तीन

(c) पाँच (क) चार

The number of Praman in Nyaya Philosophy:

(a) Two (b) Three

(c) Five (d) four

15. सत्व का रंग होता है-

(a) लाल (b) सफेद

(c) काला (d) पीला

The colour of Satva is:

(a) Red (b) White

(c) Black (d) Yellow

16. जन्मजात प्रत्यय की सत्ता को स्वीकार करता है-

(a) देकार्त (b) लॉक

(c) बर्कले (d) इनमें से कोई नहीं

The existence of Innate Idea is accepted by:

(a) Descartes (b) Locke
(c) Berkeley (d) None of these

17. Cagito ergo sum किसने कहा ?

(a) देकार्त (b) काण्ट
(c) बर्कले (d) लॉक

Who said Cogito ergo sum?

(a) Descartes (b) Kant
(c) Berkeley (d) Locke

18. अष्टांग योग संबंधित है-

(a) भगवान बुद्ध (b) योग दर्शन
(c) वैशेषिक (d) इनमें से कोई नहीं

Eightfold Yog is related to:

(a) Lord Buddha (b) Yog Philosophy
(c) Vaisesika (d) None of these

19. नैतिक कर्म के लिए आवश्यक है-

(a) शुभ (b) उचित
(c) इच्छा स्वातंत्र्य (d) कर्म सम्पादन

Which of the following is essential for Moral Actions?

(a) Good (b) Right
(c) Freedom of Will (d) Performing actions

20. गीता का उपदेश है-

(a) सकाम कर्म (b) निष्काम कर्म
(c) कर्म में संन्यास (d) इनमें से कोई नहीं

The Preaching of the Gita is:

(a) Sakaam Karma (b) Nishkaam Karma
(c) Sanyas in Action (d) None of these

21. न्याय दर्शन के प्रणेता है-

(a) गौतम (b) कणाद
(c) जैमिन (d) कपिल

The founder of Nyay Philosophy:

(a) Gautam (b) Kanad
(c) Jaimini (d) Kapil

22. बुद्ध के अनुसार दुःख का मुख्य कारण है-

(a) तृष्णा (b) जाति
(c) नामरूप (d) अविद्या

The prime cause of suffering according to Buddha is:

(a) Trishna (b) Jati

(c) Naamroop (d) Avidya

23. ब्रह्म है-

(a) अनेक (b) अचेतन

(c) अनिर्वचनीय (d) इनमें से कोई नहीं

Brahm is:

(a) Many (b) Unconscious

(c) Anirvachniya (d) None of these

24. सामान्यतः हमारे आस-पास का सम्पूर्ण परिवेश कहलाता है-

(a) भौतिक (b) ऊर्जा

(c) पर्यावरण (d) इनमें से कोई नहीं

Our surroundings is generally called:

(a) Physical (b) Energy

(c) Environment (d) None of these

25. अंतःक्रियावाद किसका सिद्धांत है-

(a) देकार्त का (b) स्पिनोजा

(c) लॉक (d) इनमें से कोई नहीं

Interactionalism is a theory given by:

(a) Descates (b) Spinoza

(c) Locke (d) None of these

26. 'ज्ञान संश्लेषणात्मक अनुभव निरपेक्ष निर्णय है' सिद्धान्त संबंधित है-

(a) बुद्धिवादी (b) अनुभववादी

(c) समीक्षावादी (d) इनमें से कोई नहीं

'Knowledge is a synthetic judgment a priori' relates to:

(a) Rationalism (b) Empiricism

(c) Criticism (d) None of these

27. व्यापार व्यवसाय है-

(a) क्रूर (b) लाभोन्मुखी

(c) अनैतिक (d) इनमें से कोई नहीं

Profession is a business-

(a) Cruel (b) Profit-oriented

(c) Unethical (d) None of these

28. निम्नलिखित में से कौन-सा दर्शन बौद्धिक है-

(a) भारतीय दर्शन (b) पश्चिमी दर्शन

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Which of the following is rational?

(a) Indian Philosophy (b) Western Philosophy

(c) Both a & b (d) None of these

29. धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष किसके प्रकार हैं-

(a) कर्म (b) पुरुषार्थ

(c) आश्रम (d) वर्ण

Dharma, Artha, Kaam and Moksha are types of:-

(a) Karma (b) Purushartha

(c) Ashram (d) Varna

30. ऋत् का स्वामी है-

(a) वरुण (b) इन्द्र

(c) अग्नि (d) ये सभी

The guardian of Rta:

(a) Varuna (b) Indra

(c) Fira (d) All of these

31. गीता में योग का अर्थ है-

(a) आत्मा का परमात्मा से मिलन (b) भक्तियोग को

(c) दोनों (d) ये सभी

The meaning of Yoga in the Gita is:

(a) Assimilation of Atman to Parmatman (b) Bhakti Yoga

(c) Both a & b (d) All of these

32. स्याद्वाद है-

(a) ज्ञान की निरपेक्षता का सिद्धान्त (b) ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धान्त

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Syadvad is a theory of

(a) Absoluteness of Knowledge (b) Relativity of Knowledge

(c) Both a & b (d) None of these

33. जैन दर्शन के अनुसार किसी भी वस्तु के धर्म होते हैं-

(a) एक (b) पाँच

(c) सात (d) अनंत

The attributes of an object according to the Jaina Philosophy:

(a) One (b) Five

(c) Seven (d) Infinite

34. जब अनुमान दूसरों के लिए किया जाता है तो उसे उसे कहते हैं-

(a) स्वार्थानुमान (b) परार्थानुमान

(c) पूर्ववत् अनुमान (d) शेषवत् अनुमान

Inference for the sake of others is called:

(a) Swarthanuman (b) Prarthanuman

(c) Purwavat Anuman (d) Shesvat Anuman

35. दण्ड की अवधारणा है-

(a) सामाजिक (c) दार्शनिक

(c) नैतिक (d) सभी

The concept of punishment is:

(a) Social (b) Philosphical

(c) Moral (d) All the above

36. मीमांसा दर्शन है-

(a) कर्म प्रधान (b) आत्म प्रधान

(c) धर्म प्रधान (d) कोई नहीं

Mimansa Philosophy is:

(a) Ritualistic (b) Perfectionist

(c) Religious (d) None of these

37. योग दर्शन में योग का अर्थ है-

(a) आत्मा का परमात्मा के साथ मिलन (b) चितवृत्तियों का विरोध

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

The meaning of Yoga in Yoga Philosophy is:

(a) Assimilation of Atman to Parmatman (b) Cessation of mental alteration

(c) Both a & b (d) None of these

38. विश्वसनीय व्यक्ति के कथन से जो ज्ञान प्राप्त है, उसका सम्बन्ध है-

(a) प्रत्यक्ष प्रमाण से (b) अनुमान प्रमाण से

(c) सत्व प्रमाण से (d) इनमें से कोई नहीं

The statement of a reliable person, relates to:

(a) Perception (b) Inference

(c) Satva (d) None of these

39. भारत में दर्शन की उत्पत्ति हुई है-

(a) जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए (c) बौद्धिक ज्ञान

(c) आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए (d) इनमें से कोई नहीं

Philosophy in India, has originated for-

(a) To solve the problems of life (b) Rational Knowledge

(c) To attain Spiritual Knowledge (d) None of these

40. चार्वाक को छोड़कर भारत के सभी दार्शनिकों ने बन्धन का मूल कारण माना है-

(a) ज्ञान (b) अज्ञान

(c) ज्ञान एवं अज्ञान (d) इनमें से कोई नहीं

Except Charvak, all Indian thinkers have assumed the main cause of bondage-

(a) Knowledge (b) Ignorance

(c) Both a & b (d) None of these

Model Paper - III

भाग-II

खण्ड-ब

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

(Short Answer Type Questions)

सभी प्रश्नों के उत्तर दें : **10 × 3 = 30**

Answer All Questions : **10 × 3 = 30**

1. दर्शन की परिभाषा दें।

   Define Philosophy.

2. जैन दर्शन के अनुसार द्रव्य क्या है ?

   What is Dravya (Substance) according to the Jaina Philosophy? How many kinds of substance are thera?

3. जैन दर्शन के अनुसार मोक्ष क्या है ?

   What is Moksa is Jaina Philosophy?

4. प्रत्यक्ष का शाब्दिक अर्थ क्या है ? न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष के कितने प्रकार हैं ?

   What is the literal meaning of Pratyaksa? What are the kinds of perception in Nyaya Philosophy?

5. न्याय दर्शन के प्रवर्त्तक कौन हैं तथा उनकी पुस्तक का नाम क्या है ?

   Who is the founder of Nyaya Philosophy? What is the name of his renowned book on Nyaya?

6. बहुकारणवाद क्या है ?

   What is Pluralism?

7. प्रत्ययवाद और वस्तुवाद का संक्षिप्त परिचय दें।

   Show your brief acquaintance with Idealism and Realism.

8. शरीर और मन को समझने के लिए बुद्धिवाद में कितने सिद्धांत हैं? इस संबंध में देकार्त का क्या मत है?

   How many theories are accepted to understand the relationship between mind and body in Rationalism? What is Descartes position in this regard?

9. क्या हमें प्लास्टिक पॉलिथीन का उपयोग सीमित करना चाहिए? क्यों ? इस समस्या को हम नीतिशास्त्र के किस शाखा में अध्ययन करते हैं?

   Should we limit the utilization of Polythene bags? Why? Under which branch of Ethics, we deal with this problem?

10. मानसिक पर्यावरण क्या है?

    What is Psychological Environment?

खण्ड–स

Group - C

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

(Long Answer Type Questions)

11. भारतीय दर्शन के स्वरूप से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट करें।

    What do you mean by the nature of Indian Philosophy? Explain.

12. शंकर के अनुसार आत्मा का स्वरूप क्या है ?

    Describe the nature of Atman of Shankar?

13. योग के अष्टांग मार्ग की विवेचना कीजिए ?

    Discuss the eightfold path of Yoga?

14. वैशेषिक के सामान्य की व्याख्या करें ?

    Explain the Samanya according to Vaiseshika?

15. चिकित्सा नीतिशास्त्र के मुख्य सिद्धांतों की विवेचना कीजिए?

    Discuss the main principles of Medical Ethics?

-ANSWER-

1. (a)	2. (c)	3. (c)	4. (b)	5. (a)
6. (d)	7. (d)	8. (b)	9. (a)	10. (a)
11. (b)	12. (c)	13. (c)	14. (d)	15. (b)
16. (a)	17. (a)	18. (b)	19. (c)	20. (b)
21. (a)	22. (d)	23. (c)	24. (c)	25. (a)
26. (c)	27. (b)	28. (b)	29. (b)	30. (a)
31. (a)	32. (b)	33. (d)	34. (b)	35. (c)
36. (a)	37. (b)	38. (c)	39. (a)	40. (b)

-ANSWER-

1. दर्शन विश्व को उसके सर्वांग में समझने का एक निष्पक्ष बौद्धिक प्रयास है।
2. जैन दर्शन के अनुसार द्रव्य व है जिसके गुण व पर्याय हैं। द्रव्य दो प्रकार का होता है (i) अस्तिकाय और (ii) अनस्तिकाय। अस्तिकाय द्रव्य वह है जो स्थान घेरता है। अनस्तिकाय द्रव्य है जो स्थान नहीं घेरता है और अमूर्त्त है।
3. जैन दर्शन के अनुसार, कषायों के कारण जीव का पुद्गल से आक्रांत होना, मोक्ष कहलाता है।
4. प्रत्यक्ष दो शब्दों से बना है- प्रति + अक्षि। अतः, प्रत्यक्ष का शाब्दिक अर्थ है जो आँखों के सामने हो। न्याय दर्शन के प्रत्यक्ष दो प्रकार का है-(i) सविकल्पक (ii) निर्विकल्पक।
5. न्याय दर्शन के प्रवर्तक गौतम हैं तथा उनकी पुस्तक का नाम न्यायसूत्र है।
6. जब एक कार्य के अनेक कारण हों, तब बहुकारणवाद होता है।
7. प्रत्ययवाद में वस्तुओं का अस्तित्व ज्ञाता पर निर्भर माना जाता है, जबकि वस्तुवाद में वस्तुओं का अस्तित्व ज्ञाता पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उसका स्वतंत्र अस्तित्व स्वीकार किया जाता है।
8. बुद्धिवाद में शरीर एवं मन को समझने के लिए दो सिद्धांत हैं- (i) अन्योन्याश्रयवाद तथा (ii) समानान्तरवाद। देकार्त इस संबंध में अन्योन्याश्रयवाद को स्वीकारते हैं जिसमें शरीर व मन को एक-दूसरे से अलग माना जाता है।
9. हाँ, क्योंकि इसका पुनःचक्रण नहीं किया जा सकता। इस समस्या का अध्ययन हम पर्यावरणीय नीतिशास्त्र में करते हैं।
10. मन को उन्नत बनाना या मन को भली भाँति विकास करना, मानसिक पर्यावरण कहलाता है।
11. भारतीय दर्शन का लक्ष्य मोक्ष है। सभी भारतीय दर्शनों का इस बात पर विचार है कि दुःख या बंधनों का कारण मनुष्य का अज्ञान है। यह अज्ञान केवल बौद्धिक ही नहीं वरन् आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक भी है। मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक अज्ञान से मुक्ति प्राप्त करने के लिए सभी भारतीय दर्शन किसी-न-किसी

तरह के अभ्यास या योग की आवश्यकता को महसूस करते हैं। बुद्ध से लेकर पतंजलि तथा शंकर और रामानुज आदि सभी दार्शनिकों ने दर्शन के मनोवैज्ञानिक पक्ष पर अधिक बल दिया है।

भारतीय दर्शन को जानने से पहले दर्शन शब्द के बारे में जानकारी हासिल करना अति आवश्यक होगा।

दर्शन शब्द का शाब्दिक अर्थ- गणितीय व्याकरण के अनुसार दर्शन शब्द हशिरप्रेक्षणे धातु ल्युट् प्रत्यय करने से निष्पन्न होती है। यह ल्युट् प्रत्यय भाव कारण तथा अधिकरण कारकों के अर्थ में होता है। इस प्रकार दर्शन शब्द का शाब्दिक अर्थ है, 'दृष्टि या देखना, जिसके द्वारा देखा जाये या जिसमें देखा जाये।'

दर्शन देशकाल तथा संस्कृतिक की पृष्ठभूमि में सत्यों का साक्षात्कार है। इसके अतिरिक्त स्थान विशेष के प्रचलित विचारों से दर्शन की उत्पत्ति होती है। यही कारण है कि मूलभूत सिद्धांत में एक मत न होने पर भी प्रत्येक देश के दार्शनिक विचारों में उस देश की संस्कृति की गहरी छाप होती है। भारतीय दर्शनों में मतभेद पाये जाने पर भी भारतीय संस्कृति की छाप रहने के कारण कुछ ऐसी अद्‌भुत एकरूपता पायी जाती है, जो सहज ही स्पष्ट हो जाती है।

12. शंकर अद्वैतवाद के प्रवर्तक हैं। इनके अनुसार परम सत्ता एक ही है। इसे ब्रह्म या आत्मा कहते हैं। हम साधारणतः अपनी आत्मा को ब्रह्म से पृथक सत्ता मान लेते हैं। वास्तव में ब्रह्म और आत्मा दोनों एक ही है। शंकर आत्मा को स्वयंसिद्ध मानते हैं। इसे सिद्ध करने के लिए तर्क की आवश्यकता नहीं पड़ती। जब कोई कहता है, 'मैं हूँ' या 'मैं नहीं हूँ' तब दोनों ही कथनों से आत्मा का अस्तित्व प्रकट होता है। इन कथनों पर कोई संदेह नहीं कर सकता, क्योंकि संदेह करने के लिये भी 'कर्त्ता' की आवश्यकता पड़ती है और यह कर्त्ता 'मैं' या 'आत्मा' है। इस प्रकार, आत्मा की सत्ता निर्विवाद रूप से सत्य है।

    माया या अविद्या के कारण आत्मा शरीर, इन्द्रिय, अन्तःकरण तथा जगत से स्वयं को अभिन्न मान 'जीव' के रूप में प्रतीत होता है।

    जीव तथा ईश्वर की व्यावहारिक सत्यता है। परमार्थिक रूप से सभी ब्रह्म में एकाकार हो जाते हैं। ब्रह्म ज्ञान की साक्षात् अनुभूति के बाद जीव अपना भूला हुआ स्वरूप पुनः प्राप्त कर लेता है। अतः कहा गया है 'जीवों ब्रहैव नापरः।

    वस्तुतः आत्मा की सत्यता पारमार्थिक है। नित्य सत्ता इसका स्वरूप लक्षण है। जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति आत्मा की अभिव्यक्ति लक्षण है। जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति आत्मा की अभिव्यक्ति की तीन व्यावहारिक अवस्थाएँ हैं।

    न्याय-वैशेषिक, सांख्य मीमांसा आदि के आत्मा से भिन्न शंकर आत्मा को एक मानते हैं। ब्रह्म और आत्मा का तादात्य भाव ही मोक्ष है। यह कोई उपलब्धि नहीं बल्कि प्राप्तस्य प्राप्ति है।

13. सांख्य की तरह योग भी विवेक ज्ञान को मुक्ति का साधन मानता है। विवेकज्ञान की प्राप्ति के लिये योग में आठ प्रकार के साधन बतलाये गए हैं, जिन्हें 'अष्टांग साधन' कहते हैं।

    (१) यम- भारतीय दर्शन में वर्णित पाँच व्रतों अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह तथा ब्रह्मचर्य का पालन करना ही यम है। यह निषेधात्मक सद्‌गुण है।

    (२) नियम- इसके अंतर्गत पाँच अनुशासन होते हैं- इसके अंतर्गत पाँच अनुशासन होते हैं- शौच, तपस्, स्वाध्याय तथा ईश्वर प्राणिधान। यह भावनात्मक सद्‌गुण है।

(३) आसन्– शरीर को एक विशेष मुद्रा में रखना आसन है।

(४) प्राणायाम्– श्वास क्रिया पर नियंत्रण है, जो तीन प्रकार से किया जा सकता है– पूरक, कुम्भक तथा रेचक।

(५) प्रत्याहार– अपनी इन्द्रियों को बाह्य एवं आंतरिक विषयों से खींचकर मन को अपने वश में करना ही प्रत्याहार है।

(६) धारणा– बाह्य और आंतरिक अभीष्ट विषयों पर चित्त को केन्द्रित करना।

(७) ध्यान– ध्यान में ध्याता, ध्येय और ध्यान की अलग-अलग प्रतीति होती है।

(८) समाधि– वह अभीष्ट विषय में इतना लीन हो जाता है कि उसे अपने अस्तित्व की चेतना नहीं रहती। वह विषय का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेता है। समाधि की दो अवस्थाएँ हैं–

(a) ससम्प्रज्ञात समाधि– इसके चार सोपान हैं– सवितर्क समाधि, सविचार समाधि, सानंद समाधि, सास्मित समाधि।

(b) असम्प्रज्ञात समाधि– यह दो प्रकार की होती है– भाव प्रत्यय, उपाय प्रत्यय।

प्रथम पाँच योग के बाह्य साधन है। इसलिए इन्हें 'बहिरंग साधन' तथा धारणा, ध्यान और समाधि को 'अन्तरंग साधन' कहते हैं।

14. 'सामान्य' वह पदार्थ है जिसके कारण बहुत से व्यक्ति एक गति के अंतर्गत चले आते हैं जिसके कारण उन सबको एक ही नाम से पुकारा जाता है। जैसे– राम, श्याम आदि विभिन्न व्यक्तियों में एक ऐसा सामान्य तत्व पाया जाता है, जिसके कारण ये सभ्झी एक 'मनुष्य' जाति के अंतर्गत रखे जाते हैं और इन्हें 'मनुष्य' नाम से पुकारते हैं। व्यक्ति विशेष जन्म लेता है और मरता है, किन्तु सामान्य नित्य है। सामान्य द्रव्यों, गुणों एवं कर्मों में विद्यमान रहता है।

सामान्य के संबंध में भारतीय दर्शन में तीन प्रकार के मत पाए जाते हैं–(a) नामवाद (b) प्रत्ययवाद और (c) वस्तुवाद।

वस्तुवाद के प्रतिपादक न्याय-वैशेषिक विचारक हैं। इनके अनुसार सामान्य न तो नाममात्र है और न मानसिक प्रत्यय ही है। न्याय-वैशेषिक दर्शन में सामान्य की यह परिभाषा दी गयी है– 'सामान्य नित्य एक और अनेक वस्तुओं में समाविष्ट है। इसका विश्लेषण करने पर सामान्य की कई विशेषताएँ स्पष्ट दीख पड़ती है–

सामान्य एक है।

सामान्य नित्य है।

सामान्य अनेक वस्तुओं या व्यक्तियों में समावेत है।

सामान्य का सामान्य नहीं होता।

सामान्य द्रव्य, गुण एवं कर्म में पााय जाता है।

न्याय-वैशेषिक के अनुसार सामान्य का ज्ञान हमें सामान्य-लक्षण प्रत्यक्ष होता है। जब हम व्यक्ति विशेष का प्रत्यक्ष करते हैं, तब उसके अंदर निहित 'सामान्य' का भी प्रत्यक्षीकरण हो जाता है। जैसे- राम, श्याम आदि व्यक्तियों के प्रत्यक्ष से 'मनुष्यत्व' का भी प्रत्यक्ष हो जाता है।

वैशेषिक दर्शन में व्यापकता या विस्तार के दृष्टिकोण से तीन प्रकार के साामान्य हैं-(i) परसामान्य (ii) अपरसामान्य और (iii) परापरसामान्य।

15. पुरातन समय के शिक्षाशास्त्रियों ने न केवल चिकित्सा क्षेत्र का ज्ञान बढ़ाया बल्कि चिकित्सा के सिद्धांत करने के नियम, चिकित्सक की आचार नीति की बतायी। लगता है कि उन लोगों को पहले ही इस बात का ज्ञान हो गया था कि आने वाले समय में चिकित्सा जैसे पवित्रतम पेशे में भी भ्रष्टाचार व लालच की प्रवृत्ति पनप जायेगी। चिकित्सक को तो भगवान के रूप में माना जाता है परन्तु आज यह हालत है कि चिकित्सक रूपी भगवान ही हैवान बने बैठे हैं। उनके मन में पैसा कमाने की इतनी वृत्तियाँ हैं कि वे साम, दाम, दण्ड, भेद इन चारों विधियों से धन कमाने में लगे हैं।

    वास्तव में प्रत्येक चिकित्सक सामाजिक दायित्व से बंधा है। उस दायित्व को पूरा करना ही चिकित्सक का कर्तव्य है। अपने कर्तव्य की पूर्ति के लिए जिन उपायों को अपनाने की आवश्यकता है। वह है- ईमानदारी, सहानुभूति, सत्यवादिता, दयालुता, प्रेम आदि। किसी रोगी के साथ ईमानदारी से व कार्य-कुशलता से व्यवहार किया जाये तो उसके मन पर अच्छा प्रभाव पड़ता है और रोगी का कुछ रोग तो अपने-आप ही ठीक हो जाता है। चिकित्सक अपने रोगियों के साथ प्रेमपूर्वक बातें करें, उसका दर्द समझे, उसे अपनापन प्रदर्शित करें तो रोगी को अस्पताल-अस्पताल न लगकर घर लगने लगता है।

    मगर आज के समय में चिकित्सक मोटी फीस, महंगे ऑपरेशन, खर्चीली दवाइयों पर रोगी का इतना खर्च करा देते हैं कि रोगी अपने रोग न मरकर अपने इलाज के खर्चे तले ही आकर मर जाता है।

    अतः आज इस विषय पर समग्र चिन्तन की महती आवश्यकता है। क्या इतने प्रतिष्ठित व्यवसाय बल्कि सेवा क्षेत्र में व्याप्त अनैतिकता को दूर किये जाने का कोई प्रयास होगा?

❑

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

PHILOSOPHY

Set-IV

MODEL PAPER - IV

कुल प्रश्नों की संख्या : 40 + 10 + 5 = 55

Total No. of Questions : 40 + 10 + 5 = 55

कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 24

Total No. 1 of Printed Pages : 24

PHILOSOPHY

A.-PHL. (OPT)

समय : 3 घंटे 15 मिनट] [पूर्णांक : 100

Time : 3 Hours 15 Minutes] [Marks : 100

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

Instructions to the candidate :

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

   Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.
2. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

   Figures in the right hand margin indicate full marks.
3. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ भाग संख्या, खण्ड संख्या और प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

   Write Section number, Group number and Question number with every answer.

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में दो भाग-भाग-I एवं भाग-II हैं। भाग-I में खण्ड-अ एवं भाग-II में खण्ड-ब एवं खण्ड-स हैं।

भाग-I : भाग-I के खण्ड-अ के प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रकार के हैं। इस खण्ड के प्रश्न संख्या 1 से 40 तक प्रत्येक 1 अंक का है।

भाग-II : भाग-II के सभी प्रश्न गैर-वस्तुनिष्ठ हैं। भाग-II के खण्ड-ब के प्रश्न लघु उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी 10 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है। भाग-II के खण्ड-स के प्रश्न दीर्घ उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी 5 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का है।

***Instructions* :**

This paper consists of two Sections - Section - I and II. Section - I consists of Group - A and Section - II consists of Group-B & Group - C.

***Section*-I :** Group A of Section - I are Objective Type Questions. In this group Question Nos. 1 to 40 carry 1 mark each.

***Section*-II :** All Questions of Section - II are Non-Objective Type. Group -B of Section-II are Short Answer Type questions. Answer all 10 questions. Each question carries 3 marks. Group-C of Section-II are Long Answer Type Questions. Answer all 5 questions. Each question carries 6 marks.

Model Paper - IV

भाग–I

Section - I

खण्ड–अ

Group - A

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(Objective Type Questions)

सभी 40 प्रश्नों के उत्तर दें। सही उत्तर का चयन करते हुए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दें:

40 × 1 = 40

Answer all the questions. Answer each question by Selecting the correct answer

40 × 1 = 40

1. विशिष्टा द्वैत के प्रवर्तक हैं-

(a) शंकर (b) रामानुज

(c) कपिल (d) गौतम

The founder of Vishishtadvaita is-

(a) Shankar (b) Ramanuja

(c) Kapil (d) Gautama

2. आत्मा का विशिष्ट गुण है-

(a) सुख (b) दु:ख

(c) चैतन्य (d) इनमें से कोई नहीं

The specific feature of Atman is-

(a) Pleasure (b) Sufferings

(c) Consciousness (d) None of these

3. गौतम बुद्ध को कहाँ पर निर्वाण प्राप्त हुआ था-

(a) कुशीनगर (देवरिया) (b) सारनाथ (वाराणसी)

(c) गया (बिहार) (d) इनमें से कोई नहीं

Where did Gautam Buddha attain Nirvana?

(a) Kushinagar(Devariya) (b) Sarnath(Varanasi)

(c) Gaya(Bihar) (d) None of these

4. निम्न में कौन बौद्ध धर्म का मूल ग्रन्थ माना जाता है-

(a) विनयपिटक (b) सुतपिटक

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Which of the following is accepted as a basic scripture in Buddhism?

(a) Vinayapitaka (b) Suttapitaka

(c) Both a & b (d) None of these

5. वैदिक कर्मकाण्डों को दार्शनिक आधार प्रदान करने वाला दर्शन है-

(a) सांख्य (b) न्याय

(c) मीमांसा (d) वेदान्त

Which of the following provides a philosophical ground to Vedic Rituals?

(a) Samkhya (b) Nyaya

(c) Mimansa (d) Vedanta

6. मीमांसा दर्शन के अनुसार इस लोक का कर्म है-

(a) अपूर्व (b) अदृष्ट

(c) मोक्ष (d) इनमें से कोई नहीं

What among the following concerns with this world?

(a) Apurva (b) Adrishta

(c) Moksha (d) None of these

7. शंकराचार्य के अनुसार मात्रा का आश्रय क्या है

(a) जीव (b) जगत

(c) ब्रह्म (d) आत्मा

What is the substratum of Matra in Sankaracharya view?

(a) j (b) j

(c) j (d) j

8. गीता में किस योग की चर्चा हुई है-

(a) ज्ञान योग (b) कर्म योग

(c) भक्ति योग (d) ये सभी

What type of Yoga has been propounded in the Gita?

(a) Jnan Yoga (b) Karma Yoga

(c) Bhakti Yoga (d) All of these

9. नास्तिक शिरोमणि किसे कहते हैं-

(a) बुद्ध (b) महावीर

(c) कपिल (d) चार्वाक

Who among the following is known as the Head of Heterodox Schools in Indian Philosophy?

(a) Buddha (b) Mahavir

(c) Kapil (d) Charvak

10. आत्मा है-

(a) ब्रह्म (b) ज्ञान

(c) आनन्द (d) इनमें से कोई नहीं

Soul is:

(a) Brahma (b) Jnan

(c) Aanand (d) None of these

11. शंकराचार्य का कारणता सम्बन्धी विचार है-

(a) ब्रह्म परिणामवाद (b) ब्रह्म विवर्तवाद

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Sankar's Law of causation is called:

(a) Brahna Parinamvad (b) Brahma Vivartavad

(c) Both a & b (d) None of these

12. इनमें से कौन अद्वैत वेदान्ती है-

(a) रामानुजाचार्य (b) निम्बार्क

(c) कुमारिल भट्ट (d) शंकराचार्य

Who among the following is concerned with the Advaita Vedanta school?

(a) Ramanujacharya (b) Nimbarka

(c) Kumarila Bhatta (d) Shankaracharya

13. दुःख का मूल कारण है-

(a) अविद्या (b) विद्या

(c) तृष्णा (d) इनमें से कोई नहीं

The root cause of sufferings:

(a) Avidya (b) Vidya

(c) Trishna (d) None of these

14. विशिष्टाद्वैत दर्शन एक सम्प्रदाय है-

(a) बौद्ध (इ) न्याय

(c) वेदान्त (क) चार्वाक

Vishishtadvaita is a school of:

(a) Buddhism (b) Nyaya

(c) Vedanta (d) Charvak

15. न्याय-वैशेषिक केवल एक प्रकार का मोक्ष मानना है-

(a) विदेह (b) जीवन

(c) परिनिर्वाण (d) निर्वाण

What kind of Moksha is accepted in Nyaya-Vaisheshika?

(a) Videha (b) Jivan

(c) Parinirvana (d) Nirvana

16. भगवान बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश कहाँ दिया-

(a) कपिल वस्तु (b) कौशाम्बी

(c) सारनाथ (d) गया

Where did Lord Buddha delivered his first preaching?

(a) Kapilvastu (b) Kaushambi

(c) Sarnath (d) Gaya

17. द्वादशनिदान में संस्कार का कारण है-

(a) विज्ञान (b) नाम-रूप

(c) षडायतन (d) अविद्या

The cause of Sanskar in Dwadashnidan:

(a) Vigyan (b) Naam-roop

(c) Shadaytana (d) Avidya

18. श्वास-प्रस्वास प्रक्रिया को नियंत्रित कर उसे एक क्रम में लाना क्या कहलाता है-

(a) धारणा (b) ध्यान

(c) समाधि (d) प्राणायाम

Bringing forth a sequence in breathing is called

(a) Dharna (b) Dhyana

(c) Samadhi (d) Pranayama

19. मोक्ष के लिए 'कैवल्य' शब्द का प्रयोग किस दर्शन में हुआ है-

(a) बौद्ध (b) जैन

(c) चार्वाक (d) वेदान्त

Which philosophy uses the term 'Kaivalya' for Moksha?

(a) Buddhism (b) Jaina

(c) Charvaka (d) Vedanta

20. अविद्या एवं इसके नाना कार्यों की समाप्ति है-

(a) अविद्या (b) तृष्णा

(c) समाधि (d) निर्वाण

The cessation of Avidya and its effects are called:

(a) Avidya (b) Trishna

(c) Samadhi (d) Nirvana

21. वस्तु का धर्म है-

(a) परिवर्तनशील (b) आकास्मिक

(c) अनित्य (d) ये सभी

Attribute of an object is:

(a) Changing (b) Casual

(c) Non-eternal (d) All of these

22. सांख्य के अनुसार मोक्ष की प्राप्ति होती है-

(a) धर्म से (b) कर्म से

(c) ज्ञान से (d) सभी से

Moksha accordind to Samkhya is attained by

(a) Virtues (b) Rituals

(c) Knowledge (d) All of the above

23. सबसे उत्कृष्ट जीव किसे कहा गया है-

(a) मुक्तजीव (b) बद्धजीव

(c) एकेन्द्रीय (d) इनमें से कोई नहीं

The Purified Jiv is

(a) Free soul (b) Bound Soul

(c) jiva with one sense (d) None of these

24. 'पदार्थ धर्म संग्रह' नामक भाष्य की रचना किसने की थी ?

(a) उदयन (b) प्रशस्तवाद

(c) कणाद (d) श्रीधर

Who wrote 'Padartha Dharm Sangraha"?

(a) Udayan (b) Prashastpad

(c) Kanad (d) Sridhar

25. वैशेषिक के अनुसार पृथ्वी का गुण क्या है-

(a) स्पर्श (b) शब्द

(c) गन्ध (d) रस

What is the attribute of Earth according to Vaishesika?

(a) Touch (b) Sound

(c) Smell (d) Taste

26. देकार्त के दर्शन में संदेह है-

(a) साधन (b) साध्य

(c) साधन तथा साध्य (d) उपर्युक्त सभी

Doubt in the philosophy of Descartes is

(a) Means (b) End

(c) Both means and end (d) All the above

27. स्पिनोजा ने मन को बताया था-

(a) विचार (b) विस्तार

(c) विचार तथा विस्तार (d) इनमें से कोई नहीं

Spinoza attributed to mind-

(a) Thought (b) Extension

(c) Thought and Extension (d) None of these

28. नैतिक निर्णय का स्वरूप होता है-

(a) वर्णनात्मक (b) नियमात्मक

(c) सूचनात्मक (d) इनमें से कोई नहीं

The nature of Moral Judgment is

(a) Explanatory (b) Regulative

(c) Informative (d) None of these

29. Right (उचित) शब्द निम्नलिखित में किससे व्युत्पन्न है-

(a) Rectum (b) Rectus

(c) Retina (d) ये सभी

The term Right is originated from

(a) Rectum (b) Rectus

(c) Retina (d) All of these

30. Good शब्द व्युत्पन्न है-

(a) Gut से (b) Gout से

(c) God से (d) इनमें से कोई नहीं

The term Good is derived from

(a) Gut (b) Gout

(c) God (d) None of these

31. वस्तुवाद का आधार है-

(a) सामान्य ज्ञान (b) तार्किक ज्ञान

(c) इन्द्रियप्रत्यक्ष (d) विवेक

The basis of Realism is

(a) Common Sense (b) Logical Knowledge

(c) Perception (d) Reason

32. पुनर्जन्म असंभव है, कहता है-

(a) चार्वाक (b) महावीर

(c) बुद्ध (d) इनमें से कोई नहीं

***Rebirth is impossible,* it is supported by**

(a) Charvak (b) Mahavir

(c) Buddha (d) None of these

33. न्याय दर्शन प्रथम भारतीय है-

(a) तर्कशास्त्र (b) धर्मशास्त्र

(c) दर्शन (d) इनमें से कोई नहीं

Nyaya Philosophy is the first Indian-

(a) Logic (b) Scripture

(c) Philosophy (d) None of these

34. दुःख के प्रकार हैं-

(a) आध्यात्मिक (b) अधिभौतिक

(c) आधिदैविक (d) ये सभी

The Kinds of sufferings-

(a) Spiritual (b) adhibhautika

(c) Aadhidaivik (d) All of these

35. पाश्चात्य दर्शन का जनक है-

(a) सुकरात (c) प्लेटो

(c) अरस्तु (d) थेलिज

The father of Western Philosophy is-

(a) Socrates (b) Plato

(c) Aristotle (d) Thales

36. बुद्धिवादी ज्ञान का स्त्रोत है-

(a) सहज प्रत्यय (b) जन्मजात प्रत्यय

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

The source of Rationalist Knowledge is

(a) Sahaj Pratyaya (b) Innate Ideas

(c) Both a and b (d) None of these

37. बुद्धिवादी दार्शनिक हैं-

(a) देकार्त (b) स्पिनोजा

(c) लाइबनीज (d) से सभी

Rationalist Philosopher-

(a) Descartes (b) Spinoza

(c) Leibnitz (d) All of these

38. पर्यावरण शब्द किससे बना है-

(a) इन्विरॉनर (b) इन्वराटर

(c) इन्वनार (d) इनमें से कोई नहीं

The term Environment has been derived from

(a) Enviorner (b) Envoritor

(c) Envinor (d) None of these

39. मन-शरीर सम्बन्ध सम्बन्धी विचार दिया गया-

(a) अन्तर्क्रियावाद (c) सामान्तरवाद

(c) पूर्वस्थापित सामंजस्यवाद (d) ये सभी

The theory of Mind-Body relation has been dealt in

(a) Interactionalism (b) Parallelism

(c) Pre Established Harmony (d) all of these

40. सामानान्तरवाद सिद्धान्त है-

(a) लॉक (b) स्पिनोजा

(c) देकार्त (d) लाइबनीज

Parallelism is given by

(a) Locke (b) Spinoza

(c) Descartes (d) Leibnitz

भाग-II

खण्ड-ब

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

(Short Answer Type Questions)

सभी प्रश्नों के उत्तर दें : **10 × 3 = 30**

Answer All Questions : **10 × 3 = 30**

1. मोक्ष कितने प्रकार के होते हैं?

   How many types of liberation are there in Indian Philosophy ?

2. चार्वाक को नास्तिक दार्शनिक क्यों कहा जाता है ?

   Why Carvak is called a heterodox philosopher ?

3. प्रतीत्यसमुत्पाद का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

   Explain the meaning of Pratitya Samutpada in brief.

4. बौद्ध दर्शन में तृतीय आर्य सत्य क्या है ?

   What is the Third Noble Truth in the Buddhist Phiolosophy ?

5. जैन दर्शन में सत् की कितनी विशेषताएँ हैं ? उनके नाम बताएँ।

   How many features of Reality is described in Jaina philosophy ? Write their names.

6. जैन दर्शन में अनेकान्तवाद का क्या अर्थ है ?

   What is the meaning of Anekantvada in Jain philosophy ?

7. जैन दर्शन में कर्म के कितने प्रकार हैं ? उनके नाम बतायें।

   Specify the names of Karma in Jaina Philosophy.

8. प्रकृति में कितने प्रकार की नियमितताएँ होती है ?

   How many types of uniformities are there in nature ? Give examples.

9. कारण के गुणात्मक लक्षण बताइये।

   Mention the qualitative character of cause.

10. हमारी शिक्षा पद्धति का अभीष्ट क्या होना चाहिए ?

    What should be the objective of our education system ?

खण्ड-स

Group - C

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

(Long Answer Type Questions)

11. जैन के अनुसार द्रव्य से आपका क्या अभिप्राय है ?

    What do you understand by substances of Jain ?

12. योग-दर्शन में चित्तवृत्ति निरोध की संक्षिप्त व्याख्या करें ?

    Discuss the brief Chittavrattis Nirodha in yoga philosophy ?

13. न्याय-दर्शन के प्रत्यक्ष की परिभाषा दीजिए एवं उसके विभिन्न प्रकारों का उल्लेख कीजिए।

    Give the definition of perception of Nyaya Phiolosophy and enumorate its different kind.

14. मन एवं शरीर के बीच संबंध की व्याख्या लाइबनित्स किस प्रकार करता है ?

    How did Liebhitz describe the relation of mind and body ?

15. मीमांसा के अनुसार उपमान का आधार क्या है ?

    What is the basic of comparison according to Mimansha Philosophy ?

-ANSWER-

1. (b)	2. (c)	3. (a)	4. (c)	5. (c)
6. (a)	7. (c)	8. (d)	9. (d)	10. (a)
11. (b)	12. (d)	13. (a)	14. (c)	15. (a)
16. (c)	17. (d)	18. (d)	19. (b)	20. (d)
21. (d)	22. (c)	23. (a)	24. (b)	25. (c)
26. (a)	27. (a)	28. (b)	29. (b)	30. (a)
31. (c)	32. (a)	33. (a)	34. (d)	35. (d)
36. (c)	37. (d)	38. (a)	39. (d)	40. (b)

- ANSWER -

1. भारतीय दर्शन में मोक्ष दो (2) प्रकार के होते हैं- (i) जीवन मोक्ष व (ii) विदेह मोक्ष।

   इसी जीवन में पाया जाने वाला मोक्ष जीवन मोक्ष कहलाता है। देह त्याग के बाद उपलब्ध होने वाला मोक्ष विदेह मोक्ष कहलाता है।

2. चार्वाक वेद की प्रामाणिकता में विश्वास नहीं करता है। इसी कारण उसे नास्तिक दार्शनिक कहा जाता है।

3. प्रतीत्य समुत्पाद का अर्थ है कि 'एक वस्तु के उपस्थित होने पर दूसरी वस्तु की उत्पत्ति।' दूसरे शब्दों में एक कारण्ण के आधार पर एक कार्य की उत्पत्ति प्रतीत्य समुत्पाद कहलाता है।

4. बौद्ध दर्शन में तृतीय आर्य सत्य 'दुख निरोध' है। इसका तात्पर्य यह है कि दु:खों का नाश संभव है। यदि दु:खों के कारणों का अंत हो जाए, तब दु:खों का अन्त भी अवश्य हो जाता है।

5. जैन दर्शन में सत् की तीन विशेषताएँ बतायी गयी है। उनके नाम इस प्रकार हैं- (i) उत्पत्ति (ii) विनाश (iii) नित्यता।

6. जैव दर्शन का विचार है कि प्रत्येक वस्तु में बहुत से धर्म होते हैं। इस प्रकार, किसी भी वस्तु की व्याख्या कई प्रकार की जा सकती है। अत:, अनेकान्तवाद वह सिद्धान्त है जो यह मानता है कि प्रत्येक वस्तु के अनेक धर्म होते हैं, इसलिए किसी वस्तु के एक ही धर्म पर जोर देना अनुपयुक्त हैं।

7. जैन दर्शन के अनुसार कर्म के दो प्रकार हैं- भाव कर्म तथा द्रव्य कर्म।

   भाव कर्म वह संकल्प है जो कार्य करने हेतु मस्तिष्क में उठता है। भाव कर्म का स्थूल रूप में प्रकटीकरण द्रव्य है।

8. प्रकृति में दो प्रकार की नियमितताएँ होती है- (i) सत भाव की नियमितताएँ तथा (ii) अनुक्रम की नियमितताएँ। पहले का उदाहरण है सभी बत्तखों का उजला होना तथा दूसरे का उदाहरण है मिर्च खाने से जीभ का लहरना।

9. कारण पूर्ववर्ती, नियत, अनौपाधिक तथा आसन्न होता है।

10. हमारी शिक्षा व्यवस्था का अभीष्ट विद्यार्थियों के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाना होना चाहिए।

11. जैन दर्शन के अनुसार- "द्रव्य वह है, जिसमें गुण और पर्याय हों।' गुण वस्तु का आवश्यक धर्म है और पर्यय उसका अनावश्यक या आकस्मिक धर्म। वेदांती ब्रह्म की नित्यता पर जोर देते हैं और बौद्ध विश्व की नश्वरता एवं क्षणभंगुरता पर जोर देते हैं। किन्तु जैन विचारक इन दोनों को एकांगी बताकर नित्यता और नश्वरता दोनों का समर्थन करते हैं।

    जैनों के अनुसार द्रव्य के दो प्रकार हैं- (1) अस्तिकाय, और (2) अनस्तिकाय। अस्तिकाय द्रव्य जगह धघेरते हैं किन्तु अनस्तिकाय द्रव्य जगह नहीं घेरते। अनस्तिकाय द्रव्य एक ही और वह है 'काल'। किन्तु अस्तिकाय द्रव्यों की संख्या अनेक है। इनके दो प्रकार हैं- (1) जीव और (2) अजीव। जीव के दो भेद हैं- मुक्त और बद्ध। मुक्त जीव वे हैं, जिन्होंने मोक्ष प्राप्त कर लिया है। बद्ध जीव वे हैं, जो अभी तक बंधनग्रस्त है। बद्ध जीव के दो प्रकार हैं- गतिमान और गतिहीन।

    अजीव के चार प्रकार हैं, जो निम्नलिखित हैं-

    (a) धर्म- जैनो के अनुसार धर्म वह है, जो वस्तु को गतिशील बनाए रखने में मदद पहुँचाता है।

    (n) अधर्म- जो किसी वस्तु को स्थिर या विराम में रखने में सहायक है।

    (c) पुद्कल- भौतिक द्रव्य ही जैनों के अनुसरा पुद्गल है। रूप, रस, गंध और स्पर्श से युक्त द्रव्य पुद्गल कहलाते हैं।

    (d) आकाश- आकाश ही अस्तिकाय द्रव्यों को स्थान देता है। आकाश भी दो प्रकार का है- 'लोकाकाश' और 'आलोकाकाश'। लोकाकाश जीव, पुद्गल, धर्म एवं अधर्म का निवास स्थान है। आलोकाकाश इस जगत से परे हैं।

    काल अनिस्तकाल द्रव्य का उदाहरण है, यह स्थान नहीं घरेता। काल के दो प्रकार हैं- व्यावहारिक काल, तथा पारमार्थिक काल। व्यावहारिक काल का आरंभ और अंत दोनों होता है। पारमार्थिक काल अकादि एवं अदंत है। यह नित्य एवं अमूर्त्त है, इसका विभाजन संभव नहीं है।

12. सांख्य के अन्त:करण के जैसा योग का 'चित्त' की बुद्धि, अहंकार और मन का संघात है। चित्त प्रकृति का प्रथम विकार है जिसमें सव्वगुण का प्राधान्य है। चित्त अचेतन होते हैं भी अत्यंत सूक्ष्म है और पुरुष के प्रतिबिम्ब को ग्रहण करता है। चित्त स्वभावत: जड़ है, परंतु पुरुष के निकटतम संपर्क में रहने के कारण वह उसके प्रकाश से प्रकाशित हो उठता है और चेतनवत् प्रतीत होता है। पुरुष चित्त में प्रकाशित अपने प्रतिबिम्ब को ही अपना वास्तविक स्वरूप समझ लेता है।

जब चित्त इन्द्रियों द्वारा बाह्य विषयों के संपर्क में आता है तो उसी विषय का 'आकार' ग्रहण कर लेता है। इस आकार को ही 'वृत्ति' कहते हैं। जब पुरुष चित्त को प्रकृतिजन्य, अचेतन जान उसमें अपने प्रतिबिम्ब से संबंध हटा लेता है तो चित्तवृत्तियों का आत्यांतिक निरोध हो जाता है।

चित्तवृत्तियाँ पाँच प्रकार की होती है-

(१) प्रमाण- यह सत्यज्ञान है। इसके तीन प्रकार हैं- (a) प्रत्यक्ष (b) अनुमान तथा (c) शब्द।

(२) विपर्यय- यह मिथ्या ज्ञान है। संशय की इसी के अंतर्गत आता है।

(३) विकल्प- यह कल्पनामात्र है। इनसे अर्थ बोध होते हैं पर उनके अनुरूप कोई वस्तु नहीं होती, जैसे-आकाशकुसुम।

(४) निंद्रा- यह ज्ञान का अभाव का विषय का अभाव है। यहाँ भी मन अपना कार्य करता रहता है।

(५) स्मृति- अतीत अनुभवों की वैसी ही मानसिक प्रतीति 'स्मृति' है।

13. इन्द्रिय और वस्तु के सन्निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान ही प्रत्यक्ष है।

प्रत्यक्ष की उपर्युक्त परिणाम अत्यन्त प्राचीन है। अधिकांश भारतीय विचारक एवं पाश्चात्य विद्वान इसे संतोषप्रद परिभाषा मानते हैं। किन्तु, नव्यनैयायिक, वेदांती एवं कई अन्य विद्वानों ने इसे दोषपूर्ण बताया है। गणेश उपाध्याय एक आधुनिक परिभाषा देते हैं। 'बिना किसी माध्यम के प्राप्त ज्ञान को ही प्रत्यक्ष कहते हैं।' तत्वचिन्तामणि में साक्षात् प्रतीति को ही प्रत्यक्ष की मुख्य पहचान कहा जाता है। प्रत्यक्ष का यह सामान्य लक्षण इसे अन्य प्रमाणों से सर्वथा पृथक कर देता है।

प्रत्यक्ष के दो प्रकार हैं- (1) लौकिक प्रत्यक्ष और (2) अलौकिक प्रत्यक्ष।

लौकिक प्रत्यक्ष के दो प्रकार हैं- बाह्य और आंतरिक या मानस। दूसरे दृष्टिकोण से लौकिक प्रत्यक्ष के तीन प्रकार हो जाते हैं-

(१) निर्विकल्पक प्रत्यक्ष- किसी वस्तु का अनिश्चित प्रत्यक्ष ही निर्विकल्पक प्रत्यक्ष है। यहाँ वस्तु का पूर्ण ज्ञान नहीं होता।

(२) सविकल्पक प्रत्यक्ष- अर्थपूर्ण निर्विकल्पक प्रत्यक्ष ही सविकल्पक प्रत्यक्ष है।

(३) प्रत्यभिज्ञा- पूर्वानुभूति के आधार पर किसी व्यक्ति या वस्तु को पहचान लेना ही प्रत्यभिज्ञा है।'

अलौकिक प्रत्यक्ष भी तीन प्रकार का होता है।

(१) ज्ञानलक्षण प्रत्यक्ष- जब एक इन्द्रिय से दूसरे इन्द्रिय का ज्ञान होने लगते, तब इसे ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष कहा जाता है।

(२) सामान्यलक्षण प्रत्यक्ष- न्यायदर्शन के अनुसार जब किसी व्यक्ति का प्रत्यक्ष होता है, तब उसमें निहित जाति (मनुष्यत्व) का भी प्रत्यक्ष हो जाता है।

(३) योगज्- न्यायदर्शन कुछ ऐसे योगियों को मानता है, जो सभी कालों की वस्तुओं का प्रत्यक्ष कर सकते हैं। इन योगियां द्वारा प्रत्यक्ष को ही 'योगज' कहत हैं।

14. लाइबनिज के अनुसार असंख्य चिद्बिदु एक-दूसरे से स्वतंत्र एवं गवाक्षहीन है। इस अनेकावाद में व्यवस्था एवं सामंजस्य उनकी आपसी लेन-देन पर नहीं, बल्कि ईश्वर की रचना पर आश्रित है। ईश्वर ने इन चिद्बिन्दुओं को इस प्रकार श्रृंखलाबद्ध कर दिया है और इनमें से किसी एक में परिवर्तन होने पर दूसरे चिद्बिन्दुओं में भी तदनुरूप परिवर्तन होने लगता है। चिद्बिंदुओं में ये परिवर्तन कार्य-कारण, नियम द्वारा नहीं होते, क्योंकि सभी चिद्बिन्दु परस्पर स्वतंत्र है और इनमें कार्य-कारण संबंध नहीं है। ये परिवर्तन सहचारी होते हैं। हमारी शरीर के चिद्बिन्दु अपने आंतरिक उद्देश्य से ही संचालित होते हैं और हमारे मन के चिद्बिन्दु भी अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रेरित होते हैं। किन्तु, ईश्वर के पूर्व स्थापित सामंजस्य के द्वारा ऐसा लगता है कि मन की इच्छा के अनुकूल शारीरिक व्यापार होते हैं।

    लाइबनिज ने इस पूर्वस्थापित सामंजस्य को समझाने के लिए एक तानवाद्य के बजाने वालों की उपमा दी है। इस एकतान वाद्य में अनेक बजाने वाले व्यक्ति रहते हैं। इसमें प्रत्येक व्यक्ति अपने राग की पुस्तक खोलकर उसके अनुसार तान-अलाप में लग जाता है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के क्रिया-कलाप पर ध्यान नहीं देता। किन्तु सभी बजानेवालों की एक ही धुन या स्वरलहरी सुनाई पड़ती है। ठीक इसी प्रकार प्रत्येक चिद्बिन्दु अपनी आंतरिक वृत्ति के अनुसार क्रियाशील होता है। इन सबका क्रियाशीलता का संचालक ईश्वर है।

    लाइबनिज के अनुसार मन और शरीर चिद्बिन्दुओं की श्रृंखला में आबद्ध होने के कारण परस्पर संबद्ध है। लाइबनिज का विचार है कि केवल मन और शरीर ही नहीं, बल्कि सभी चिद्बिंदुओं के कार्य-कलाप समांतर रीति से संचालित होते रहते हैं।

15. किसी ज्ञात वस्तु की समानता के द्वारा अज्ञात वस्तु का ज्ञान प्राप्त किया जाता है, उपमान कहलाता है। इस प्राप्त ज्ञान को उपमिति भी कहा जाता है। अत: उपमिति के कारण को उपमान कहा जाता है। उपमान की प्रक्रिया में बहुत-सी बातें निहित है, जिन्हें चार चरणों में रखा जाता है। ये क्रम हैं- अतिदेशवाक्य, सादृश्यधो, वाक्याथ-स्मृति तथ उपमिति।

    अतिदेशवाक्य उसे कहा जाता है, जहाँ किसी विश्वसनीय व्यक्ति का प्रामाणिक कथन कि अमुक वस्तु प्रकार की होती है। अज्ञात वस्तु के मिलने पर पहले से ज्ञात वस्तु से उसकी समानता का अनुभव करना सादृश्यधी कहलाता है। आदेशवाक्य की स्मृति वाक्यार्थस्मृति कहलाती है। उपमिति वह निर्णय एवं ज्ञान है कि जो वाक्यार्थ स्मृति के साथ वर्तमान प्रत्यक्ष के मिलाने से उत्पन्न होता है।

    उपमान प्रमाण के आधार को संज्ञा संज्ञी संबंध भी कहा जाात है। अज्ञात वस्तु संज्ञा के तथा अज्ञात वस्तु की विशेषता संज्ञी है।

    उपमान का आधाार मीमांसा दर्शन के द्वारा केवल समानता है। इस दर्शन के द्वारा उपमान को वह प्रक्रिया माना गया है जिसके द्वारा अज्ञात वस्तु को पहले से ज्ञात वस्तु के समान जानकार पहले से ज्ञात वस्तु का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। जंगल में जाकर गवय को देखा जाता है, जो अज्ञात जानवर है। यह जानवर गाय के जैसी दिखायी पड़ता है। गाय का ज्ञान पहले से ही होता है। अब गवय तथा गाय में समानता को देखकर यह ज्ञान प्राप्त होता है कि गाय गवह की जैसी होती है। वैसे गवय गाय की जैसी होती है। इस

बात को न्याय-दर्शन में बताया गया है। नैयायिकों ने वाक्यार्थ स्मृति को अपना आधार बनाया है परन्तु मीमांसकों ने प्रत्यक्ष को परंतु दोनों में ही उपमान का मूलतत्व समानता को माना है।

❑

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

PHILOSOPHY

Set-V

MODEL PAPER - V

कुल प्रश्नों की संख्या : 40 + 10 + 5 = 55

Total No. of Questions : 40 + 10 + 5 = 55

कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 24

Total No. 1 of Printed Pages : 24

PHILOSOPHY

A.-PHL. (OPT)

समय : 3 घंटे 15 मिनट] [पूर्णांक : 100

Time : 3 Hours 15 Minutes] [Marks : 100

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

Instructions to the candidate :

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

   Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.
2. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

   Figure in the right hand margin indicate full marks.
3. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ भाग संख्या, खण्ड संख्या और प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

   Write Section number, Group number and Question number with every answer.

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में दो भाग-भाग-I एवं भाग-II हैं। भाग-I में खण्ड-अ एवं भाग-II में खण्ड-ब एवं खण्ड-स हैं।

भाग-I : भाग-I के खण्ड-अ के प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रकार के हैं। इस खण्ड के प्रश्न संख्या 1 से 40 तक प्रत्येक 1 अंक का है।

भाग-II : भाग-II के सभी प्रश्न गैर-वस्तुनिष्ठ हैं। भाग-II के खण्ड-ब के प्रश्न लघु उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी 10 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है। भाग-II के खण्ड-स के प्रश्न दीर्घ उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी 5 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का है।

***Instructions* :**

This paper consists of two Sections - Section - I and II. Section - I consists of Group - A and Section - II consists of Group-B & Group - C.

***Section*-I :** Group A of Section - I are Objective Type Questions. In this group Question Nos. 1 to 40 carry 1 mark each.

***Section*-II :** All Questions of Section - II are Non-Objective Type. Group -B of Section-II are Short Answer Type questions. Answer all 10 questions. Each question carries 3 marks. Group-C of Section-II are Long Answer Type Questions. Answer all 5 questions. Each question carries 6 marks.

Model Paper - V

भाग–I

Section - I

खण्ड–अ

Group - A

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(Objective Type Questions)

सभी 40 प्रश्नों के उत्तर दें। सही उत्तर का चयन करते हुए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दें:

40 × 1 = 40

Answer all the questions. Answer each questions by Selecting the correct answer

40 × 1 = 40

1. सेश्वर सांख्य कौन हैं ?

(a) जैन (b) बौद्ध

(c) योग (d) सांख्य

Which among the following is called Seshwar samkhya?

(a) j (b) j

(c) j (d) j

2. घोर नास्तिक कौन हैं ?

(a) चार्वाक (b) बौद्ध

(c) जैन (d) इनमें से कोई नहीं

Which of the following is called Head of the Heterodox School?

(a) Charvak (b) Bauddha

(c) Jaina (d) None of these

3. निम्न में से आस्तिक कौन हैं ?

(a) जैन (b) बौद्ध

(c) वेदान्त (d) इनमें से कोई नहीं

Which of the following is Orthodox?

(a) Jaina (b) Bauddha

(c) Vedanta (d) none of these

4. चार्वाक कितने प्रमाण को मानता है?

(a) दो (b) एक

(c) तीन (d) इनमें से कोई नहीं

How many Pramanas are accepted by Charvak?

(a) Two (b) One

(c) Three (d) None of these

5. निम्न में आस्तिक कौन हैं ?

(a) सांख्य (b) योग

(c) मीमांसा (d) जैन

Which of the following is Orthodox?

(a) Samkhya (b) Yoga

(c) Mimansa (d) Jaina

6. किस दर्शन में पुरुष और प्रकृति का वर्णन हैं-

(a) न्याय (b) सांख्य

(c) जैन (d) मीमांसा

Which philosophy deals with Purush and Prakriti?

(a) Nyaya (b) Samkhya

(c) Jaina (d) Mimansa

7. निम्न में से कौन बुद्धिवादी है ?

(a) लॉक (b) बर्कले

(c) देकार्त (d) इनमें से कोई नहीं

Which of the following is Rationalist?

(a) Locke (b) Berkeley

(c) Descartes (d) None of these

8. निम्न में से कौन अनुभववादी है ?

(a) देकार्त (b) स्पिनोजा

(c) लॉक (d) इनमें से कोई नहीं

Which of the following is an Empiricist?

(a) Descartes (b) Spinoza

(c) Locke (d) None of these

9. जैन नीतिशास्त्र में ब्रह्मचर्य का अर्थ है-

(a) ऐन्द्रिय एषणा का त्याग (b) स्वाहितवादी एषणा का त्याग

(c) मन: एषणा का त्याग (d) समस्त एषणाओं का त्याग

Celebacy in the Jaina Ethics means-

(a) Renouncing one's sensual desires (b) Renouncing one's desire

(c) Renouncing one's inwardly desires (d) Renouncing all the desires

10. जैन मत में कर्म पुद्गलों का जीवों की ओर बहना क्या कहलाता है ?

(a) आश्रव (b) बन्धन

(c) संवर (d) निर्जरा

The flow of Karma Pudgal to jivas in Jaina Philosophy is called-

(a) Aashrawa (b) bondage
(c) Sanwar (d) Nirjara

11. जैन दर्शन में प्रमाद का अर्थ है-

(a) अहंकार (b) उचित अनुचित में भेद का अभाव
(c) अपराध (d) मोह

The meaning of Pramaad in Jaina Philosophy is:

(a) Ahankar (b) Absence of discretion between Right and Wrong
(c) Crime (d) Lust or Moha

12. जीवात्मा और परमात्मा रूप है

(a) ब्रह्म के (b) ईश्वर के
(c) आत्मा के (d) इनमें से कोई नहीं

Jivatma and Parmatma are forms of

(a) Brahma (b) God
(c) Aatma (d) None of these

13. योग का प्रमुख तत्व क्या है ?

(a) ईश्वर (b) चित्त
(c) मनस (d) समाधि

The main element in Yoga is

(a) Ishwar (b) Chitta
(c) Manas (d) Samadhi

14. अधिकार एवं कर्तव्य-

(a) सापेक्ष है (b) निरपेक्ष है
(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Rights and Duties are-

(a) relative (b) absolute
(c) both a and b (d) none of these

15. प्रकृति में कौन गुण पाये जाते हैं ?

(a) सात्विक (b) रजस्
(c) तमस् (d) ये सभी

Which attribute is found in Prakriti?

(a) Saatvika (b) Rajas
(c) Tamasa (d) All of these

16. हीगेल के अनुसार मन शरीर में सम्बन्ध है-

(a) तादात्मय (b) भिन्नता
(c) सामंजस्य (d) इसमें से कोई नहीं

Mind-Body relation according to Hegel is

(a) Identity (b) Different

(c) Harmony (d) None of these

17. नीतिशास्त्र मानव आचरण का विज्ञान है। किसने कहा ?

(a) मैकेंजी (b) जेम्स

(c) लिलि (d) सेठ

Ethics is the science of human conduct. Who said it?

(a) Mackenzi (b) James

(c) Lili (d) Seth

18. अनुभववाद की दार्शनिक विधि है-

(a) निगमनात्मक (b) आगमनात्मक

(c) ज्यामितिक (d) ये सभी

The philosophical method of empiricism is

(a) Deductive (b) Inductive

(c) Geometrical (d) All of these

19. Virtue (सद्गुण) होता है-

(a) जन्मजात (b) अर्जित

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Virtue is-

(a) Innate (b) acquired

(c) both a and b (d) none of these

20. दर्शनशास्त्र के विषय हैं-

(a) पृथ्वी (b) आकाश

(c) पाताल (d) ये सभी

The subject-matter of Philosophy is:

(a) Earth (b) Ether

(c) Pataal (d) All of these

21. निम्न में कौन अभाव का प्रकार है-

(a) संसर्गाभाव (b) अन्योन्याभाव

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Which of following is kind of Abhaava

(a) Sansargabhaava (b) Anyonyabhaava

(c) Both a and b (d) None of these

22. लॉक के अनुसार गुणों को किस प्रकार जानते हैं-

(a) प्रत्यक्ष द्वारा (b) तर्क द्वारा

(c) ईश्वर भक्ति द्वारा (d) कल्पना द्वारा

According to Locke, attributes are known through

(a) Perception (b) Logic

(c) Devotion to God (d) Imagination

23. लाइबनिज के अनुसार अचेतन चिद्बिन्दु है-

(a) मनुष्य (b) ईश्वर

(c) पशु (d) जड़ जगत

Unconscious Monad according to Leibnitz, is

(a) Man (b) God

(c) Animal (d) Non-living

24. कारणकार्य नियम है-

(a) दार्शनिक (b) वैज्ञानिक

(c) सामान्य (d) ये सभी

The Law of Causation is

(a) Philosophical (b) Scientific

(c) Universal (d) All of these

25. नव्य न्याय दर्शन है-

(a) प्राचीन काल का न्याय दर्शन (b) आधुनिक काल का न्याय दर्शन

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Navya Nyaya Philosophy is

(a) Nyaya Philosophy of Ancient Age (b) Nyaya Philosophy of Modern Age

(c) Both (d) None of these

26. नव्य न्याय दर्शन में 'ज्ञान का ज्ञान' किसे कहा है ?

(a) ज्ञान (b) ज्ञेय

(c) आत्मा (d) ईश्वर

'Knowledge of Knowledge' in Navya Nyaya is called

(a) Knowledge (b) Object of Knowledge

(c) Soul (d) God

27. लोकसंग्रह सिद्धान्त है-

(a) सुखवाद (b) सर्वकल्याणवाद

(c) पूर्णतावाद (d) ये सभी

Lokasangraha is a theory of

(a) Hedonism (b) All welfare

(c) Perfectionism (d) All of these

28. भगवान बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश कहाँ दिए-

(a) कपिल वस्तु (b) कौशाम्बी

(c) गया (d) सारनाथ

The first preaching of Lord Buddha is deliverd at

(a) Kapilvastu (b) Kaushambi

(c) Gaya (d) Sarnath

29. लोक संग्रह का साधन है-

(a) सकाम कर्म (b) निष्काम कर्म

(c) अकर्म (d) विकर्म

The means of Lokasangraha

(a) Sakaam Karma (b) Nishkaam Karma

(c) Akarma (d) Vikarma

30. बौद्ध दर्शन के अनुसार मोक्ष (निर्वाण) अवस्था है-

(a) आनन्द की (b) दुःख रहित

(c) अनुभवरहित (d) सुख की

Nirvana, according to the Buddhist Philosopy, is a stage of-

(a) Aananda (b) Absence of Pains

(c) Absence of Experience (d) Pleasure

31. आत्मा की सत्यता कौन सी है ?

(a) व्यावहारिक (b) पारमार्थिक

(c) प्रातिभाषिक (d) इनमें से कोई नहीं

Truth of Soul is

(a) Vyavharika (b) Paarmarthika

(c) Pratibhashika (d) None of these

32. निम्नलिखित में से अनुभववादी तर्कशास्त्री कौन हैं-

(a) लॉक (b) बर्कले

(c) ह्यूम (d) ये सभी

Who amog the following is an Empirisist Logician?

(a) Locke (b) Berkeley

(c) Hume (d) All of these

33. अनासक्ति योग नामक ग्रन्थ की रचना किसने की ?

(a) तिलक (b) महात्मा गाँधी

(c) डॉ. राधाकृषणन (d) इनमें से कोई नहीं

'Anasakti Yoga' is written by

(a) Tilak (b) Mahatma Gandhi

(c) Dr.Radhakrishnan (d) None of these

34. इनमें से कौन अभाव पदार्थ नहीं है-

(a) प्रागाभाव (b) ध्वंसाभाव

(c) अन्योन्याभाव (d) समवाय

Which of the following is not Abhaav?

(a) Pragabhava (b) Dhwansabhaava

(c) anyonyabhaava (d) Samvaya

35. कर्म सिद्धान्त कारणतावाद है-

(a) नैतिक (c) प्राकृतिक

(c) तार्किक (d) इनमें से कोई नहीं

Karma Theory is

(a) Moral (b) Natural

(c) Logical (d) None of these

36. त्रिपिटक किस दर्शन से संबंधित है-

(a) जैन (b) बौद्ध

(c) न्याय (d) इनमें से कोई नहीं

Tripitak is concerned with

(a) Jaina (b) Bauddha

(c) Nyaya (d) None of these

37. अनुमान के लिए व्याप्ति आवश्यक है-

(a) नहीं (b) हाँ

(c) संशयपूर्ण (d) इनमें से कोई नहीं

Vyapti for Anumana (Inference) is essential

(a) No (b) Yes

(c) Dubious (d) None of these

38. किस ज्ञान द्वारा वस्तु के अनन्त धर्मों का ज्ञान प्राप्त होता है-

(a) केवल्य ज्ञान (b) मनः पर्याय ज्ञान

(c) मति ज्ञान (d) इनमें से कोई नहीं

Infinite Attributes of objects are known through

(a) Kevalya Jnan (b) Manah Paryaya Jnan

(c) Mati Jnan (d) None of these

39. ऋत का अर्थ है-

(a) प्राकृतिक व्यवस्था (c) न्यायिक व्यवस्था

(c) नैतिक व्यवस्था (d) इनमें से कोई नहीं

The meaning of Rta is

(a) Natural System (b) Judicial System

(c) Moral system (d) None of these

40. सात्विक अहंकार में किस गुण की प्रधानता रहती है ?

(a) सत्व गुण (b) तमो गुण

(c) रजो गुण (d) इनमें से कोई नहीं

Which attribute prevails in Satvik Ahankar?

(a) Satva Guna (b) Tamo Guna

(c) Rajo guna (d) None of these

भाग–II

Section-II

(Non-Objective Type Questions)

Group-B

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

(Short Answer Type Questions)

सभी प्रश्नों के उत्तर दें : **10 × 3 = 30**

Answer All Questions : **10 × 3 = 30**

1. न्याय दर्शन का लौकिक प्रत्यक्ष क्या है ? संक्षेप में बताइए।

   What is ordinary perception of Nyaya Phiolosophy ?

2. न्याय दर्शन के अनुसार अनुमान के आवश्यक अंग क्या है ?

   What are the necessary parts of inference according to Nyaya Philosophy?

3. ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष क्या है ? समझाइए।

   What is complication of perception? Explain

4. न्यायसूत्र में प्रमा किसे कहा गया है ?

   What is Prama in Nyayasutra ?

5. योग दर्शन के अनुसार यम कितने प्रकार के हैं ?

   How many Yamas are there according to Yoga Philosophy?

6. विश्लेषणात्मक वाक्य से आप क्या समझते हैं?

   What do you mean by Analytic sentence ?

7. जन्मजात प्रत्यय का क्या अर्थ है?

   What is the meaning of Innate Ideas?

8. अनुभववाद में सरल प्रत्यय का क्या अर्थ है ?

   What is Simple Idea in Empiricism ?

9. मनुष्य की कर्म संबंधी अवधारणा क्या है?

   What is the concept of man's duty?

10. पर्यावरणीय नीतिशास्त्र क्या है ?

    What is Environmental Ethics?

खण्ड-स

Group - C
(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

(Long Answer Type Questions)

11. निष्काम कर्म की तुलना काण्ट के 'कर्त्तव्य कर्त्तव्य के लिए होता है' सिद्धान्त से कीजिए।

    Compare Niskama Karma with Kant's theory 'Duty for Duty Sake'.

12. "ऊपर ब्रह्म अर्थात् ईश्वर जगत् की उत्पत्ति, पालन एवं संहार करता है। इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

    "The Absolute i.e. God originate, Protect and decay of the world." Clarify this statement.

13. योग-दर्शन के अष्टांगिक मार्ग के यम एवं भेदों की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।

    Discuss briefly Yama and Bheda of Eight fold Paths of Yoga Philosophy ?

14. प्रत्ययवाद की निबन्धात्मक व्याख्या कीजिए।

    Describe an analytical views of Idealism ?

15. व्यावसायिक नीतिशास्त्र क्या है ?

    What is professional ethics ?

- ANSWERS -

1. (c)	2. (a)	3. (c)	4. (b)	5. (d)	6. (b)
7. (c)	8. (c)	9. (d)	10. (a)	11. (b)	12. (a)
13. (b)	14. (a)	15. (d)	16. (a)	17. (a)	18. (b)
19. (b)	20. (d)	21. (c)	22. (a)	23. (d)	24. (d)
25. (b)	26. (c)	27. (b)	28. (d)	29. (b)	30. (b)
31. (b)	32. (d)	33. (c)	34. (d)	35. (a)	36. (b)
37. (a)	38. (c)	39. (a)	40. ( )		

- ANSWER -

1. जिसे प्रत्यक्ष ज्ञान समझा जाता है वह लौकिक प्रत्यक्ष है। इसमें वस्तुओं के साथ इन्द्रियों का साधारण रूप से सन्निकर्ष होता है।
2. न्याय दर्शन के अनुसार अनुमान के आवश्यक अंग है- हेतु, साध्य और पक्ष।
3. ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष अलौकिक प्रत्यक्ष का एक प्रकार है। एक इन्द्रिय से किसी दूसरे इन्द्रिय के विषय का ज्ञान प्राप्त होना, ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष कहलाता है। जैसे-बर्फ देखकर उसके ठंढापन का ज्ञान।
4. न्यायसूत्र में यथार्थज्ञान को प्रमा कहा गया है।
5. योग दर्शन में यम पाँच प्रकार के हैं-अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य।
6. विश्लेषणात्मक वाक्यों में किसी पद का विश्लेषण मात्र किया जाता है। वाक्य के विधेय का गुण उसके उद्देश्य में ही छिपा रहता है। उससे किसी नवीन ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती।
7. बुद्धिवादी दार्शनिकों के अनुसार मनुष्य में जो प्रत्यय जन्म से विद्यमान रहते हैं, उन्हें जन्मजात या सहज प्रत्यय कहते हैं।
8. अनुभववाद के अनुसार हमारी इन्द्रियाँ जब किसी पदार्थ के सम्पर्क में आती है, तब उस पदार्थ की जो संवेदना हमारा मन स्वीकार करता है, वह सरल प्रत्यय कहलाता है।
9. मनुष्य की कर्मसंबंधी अवधारणा के अनुसार अच्छे कर्मों का फल अच्छा ही होता है और बुरे कर्मों का फल बुरा होता है।
10. प्रकृति एवं संसाधनों से जुड़ी समस्याओं का नैतिक अध्ययन पर्यावरणीय नीतिशास्त्र कहलाता है।
11. काण्ट का 'कर्त्तव्य कर्त्तव्य के लिए' का सिद्धांत गीता के निष्काम कर्म से मिलता-जुलता है। काण्ट का कहना है कि हमें कोई भी काम कर्त्तव्य समझकर ही करना चाहिए, न कि उसके फल की इच्छा रखकर। दोनों के विचारों में काफी समानता पाई जाती है। काण्ट के दर्शन में कर्त्तव्य-भावना पर जोर दिया गया है, तो गीता में निष्काम कर्म की प्रधानता स्वीकार की गयी है। कर्म का नैतिक गुण कर्त्ता की बुद्धि के अधीन माना गया है। दोनों ने ही व्यक्ति की महत्ता स्वीकार की है। स्वतंत्र संकल्प दोनों की ही दृष्टि से महत्वपूर्ण है। गीता कहती है- जैसा तुम चाहते हो वैसा करो। कांट भी कहते हैं- "तुम चाहते हों, इसलिए तुम कर

सकत हो।" विषयवासना पर नियंत्रण दोनों का आदेश है। कांट व्यावहारिक बुद्धि को महत्वपूर्ण मानते हैं, तो गीता व्यावसायिक बुद्धि को महत्व प्रदान करती है। दोनों ने कर्मों का आधार लोकहित माना है।

उपर्युक्त समानताओं के बावजूद दोनों में निम्नलिखित अंतर पाये जाते हैं-

(1) गीता की नीति का आधार ब्रह्मविद्या है, तो कांट ब्रह्मविद्या उनकी नीतिविद्या पर आधृत है।

(2) गीता की शुद्ध बुद्धि कांट की बुद्धि से अधिक व्यावहारिक है।

(3) कांट इन्द्रियों के दमन का आदेश देते हैं मगर गीता उच्चतर इच्छाओं के लिए निम्न इच्छाओं को त्यागने पर जोर देते हैं।

(4) कांट कर्त्तव्यपालन में किसी प्रकार का अपवाद नहीं मानते, मगर गीता परिस्थितिविशेष में अपवाद को भी स्वीकार करती है।

(5) कांट की नीति ज्ञानप्रधान है, गीता की नीति में ज्ञान, भक्ति एवं कर्म के तत्वों का अद्‌भुत सामंजस्य पाया जाता है।

(6) कांट नैतिकता को ही एकमात्र आदर्श मानते हैं, किन्तु गीता 'मोक्ष' को चरम आदर्श मानते हैं।

गीता का निष्काम कर्म का संदेश कांट की अपेक्षा अधिक व्यापक एवं श्रेष्ठकर है।

12. ईश्वर सगुण एवं व्यक्तित्वपूर्ण है। यह सर्वज्ञ, सर्वव्यापी, अंतर्यामी, स्वतंत्र एवं एक है। इसे 'सच्चिदानंद' भी कहा जाता है। इसमें सत्ता, चैतन्य एवं आनंद पाए जाते हैं। यह सद्‌गुणों की खान है। यह विश्व का रचयिता, पालन-पोषणकर्त्ता और संहारक है। यह विश्व की रचना माया द्वारा करता है। 'माया' इसकी शक्ति का नाम है, जिसके द्वारा यह लीला करता है।

शंकर ने ईश्वर को अंतिम कारण कहा है। यह सभी वस्तुओं का कारण होते हुए भी स्वयं अकारण है। ईश्वर व्यक्तियों को कर्मफल देता है। शुभ कर्मों के लिए पुरस्कार एवं अशुभ कर्मों के लिए दंड देता है। नैतिकता का आधार ईश्वर ही है।

ईश्वर विश्व की रचना क्यों करता है ? ईश्वर पूर्ण हे। उसकी कोई भी इच्छा अपूर्ण नहीं है। वह किसी भी अभाव से पीड़ित से पीड़ित नहीं है। इसलिए विश्व की रचना के मूल में उसका कोई व्यक्तिगत प्रयोजन नहीं है। वह तो लीला या क्रीड़ा के वश विश्व की रचना करता है। ईश्वर विश का उपादानकारण और निमित्तकारण दोनों हैं। यह मूलतः निष्क्रिय रहता है, किन्तु माया के कारण क्रियाशील हो जाता है।

ईश्वर विश्वकायी तथा विश्वातीत दोनों है। शंकर कहते है कि तर्कों के आधार पर ईश्वर का अस्तित्व नहीं सिद्ध किया जा सकता, बल्कि श्रुति के आधार पर ईश्वर की सत्ता सिद्ध की जा सकती है।

वेदांत दर्शन में ईश्वर का महत्वपूर्ण स्थान है। पारमार्थिक दृष्टिकोण से ईश्वर असत्य अवश्य है, किन्तु व्यावहारिक दृष्टिकोण से यह बहुत उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है। व्यावहारिक जीवन की सफलता एवं मोक्ष की प्राप्ति में ईश्वर अत्यधिक उपयोगी है।

13. मोक्ष प्राप्ति के लिए तत्वज्ञान तथा विवेक का होना अनिवार्य है परन्तु योग-दर्शन की मान्यता है कि जबतक मनुष्य का चित्त विकारों से परिपूर्ण है तब तक विवेक ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। योग दर्शन में चित्त की स्थिरता तथा चित्तवृत्तियों के निरोध के कुछ उपायों का उल्लेख किया गया है। इसी मार्ग को अष्टांग मार्ग कहा गया है। इसमें आठ चरण या सोपान है-(1) यम (2) नियम (3) आसन (4) प्राणयाम (5) प्रत्याहार (6) धारणा (7) ध्यान तथा (8) समाधि। प्रथम पाँच योगांग बाह्य साधन हैं,

इसलिए इन्हें 'बहिरंग साधन' कहते हैं। किन्तु धारणा, ध्यान और समाधि योग से साक्षात रूप से सम्बद्ध होने कारण 'अंतरंग' कहे जाते हैं।

यम-अष्टांग योग का प्रथम अंग- 'यम'। यम से आशय है- कायिक, वाचिक तथा मानसिक रूप से संयमित होना। योग-दर्शन में इस प्रकार संयम के निम्नलिखित पांच नियमों का उल्लेख हैं-

(१) अहिंसा- अहिंसा से आशय है- सभी प्राणियों के प्रति किसी भी प्रकार की हिंसा को न अपनाना। प्राणियों के प्रति क्रूर-व्यवहार भी नहीं करना चाहिए। अहिंसा का योग-दर्शन में विशेष महत्व है।

(२) सत्य- सत्य से आशय है- हर प्रकार के मिथ्या वचन का पूर्ण परित्याग। प्राणियों के लिए हितकर वचन ही बोलने चाहिए।

(३) अस्तेय- इसका आशय है कि किसी अन्य व्यक्ति की धन-सम्पत्ति को अनुचित ढंग से ग्रहण न करना अर्थात् चोरी हेराफेरी न करना।

(४) ब्रह्मचर्य- ब्रह्मचर्य का आशय है, विषय-वासनाओं में लिप्त न होना।

(५) अपरिग्रह- अपरिग्रह से आशय है- केवल लोभवश अनावश्यक वस्तुओं को संचित न करना।

ये सभी निषेधात्मक स्वरूप के हैं।

14. प्रत्ययवाद तथा वस्तुवाद ज्ञान के विषय की स्थिति के संबंध में परस्पर-विरोधी सिद्धांत है। प्रत्ययवाद के अनुसार ज्ञान का विषय ज्ञाता या अनुभवकर्त्ता पर आधृत है। इसके विपरीत, वस्तुवाद के अनुसार ज्ञेय का अस्तित्व अनुभवकर्त्ता पर निर्भर नहीं है, बल्कि इसका स्वतंत्र अस्तित्व रहता है।

प्रत्ययवाद के दो प्रकार हैं-(1) ज्ञानशास्त्रीय प्रत्ययवाद, तथा (2) तत्वशास्त्रीय प्रत्ययवाद।

तत्वशास्त्रीय प्रत्ययवाद के अनुसार मूलतत्व प्रत्ययात्मक अथवा आध्यात्मिक है। यह भौतिकवाद का ठीक उलटा सिद्धांत है। ज्ञानशास्त्रीय प्रत्ययवाद ज्ञान के विषय को ज्ञाता या अनुभवकर्ता पर निर्भर मानता है। इसका ठीक उलटा सिद्धांत वस्तुवाद है।

प्रत्ययवाद ज्ञान को परमार्थ मानता है। मनुष्य अपने ज्ञान की सीमा से बाहर नहीं जा सकता। अज्ञात और अज्ञेय के विषय में किसी प्रकार की चर्चा करना असंभव है। ज्ञाता और ज्ञेय के परस्पर संबंध के कारण ही ज्ञेय का अस्तित्व सत्य है।

साधारण लोगों के दिमाग में यह बात आसानी से नहीं घुसती कि ज्ञेय का अस्तित्व ज्ञाता पर निर्भर है। किन्तु, जब मनुष्य अपने अनुभव में आनेवाली वस्तुओं पर गौर करने लगता है तो उसे पता चलता हे कि ज्ञेय का स्वरूप ज्ञाता से बिलकुल स्वतंत्र नहीं कहा जा सकता। एक छड़ी हवा में उसे सीधी लगती है तो पानी में वही टेढ़ी दीख पड़ती है। ऐसे उदाहरणों से ज्ञेय के वस्तुनिष्ठ में उसे शंकर होने लगती है और वह प्रत्ययवाद की ओर जुड़ता है।

पाश्चात्य दर्शन में ग्रीन, कैयर्ड, ब्रैडले, बर्कले एवं जाकिम आदि इसके प्रमुख समर्थक हैं। भारतीय दर्शन में बौद्धों का योगाचार सम्प्रदाय प्रत्ययवाद का समर्थक है। यह सम्प्रदाय सभी वस्तुओं को मन या ज्ञाता पर आघृत मानता है।

15. मानव को जन्म तो मिल गया, लेकिन जीवन-यापन के लिये अर्थ की आवश्यकता होती है। सबसे प्रथम आवश्यकता तो भोजन की ही होती है। यह भोजन बिना रुपये-पैसे की व्यवस्था किये बिना तो संभव नहीं

है। मानव जीवन की तीन मूलभूत आवश्यकताएँ हैं- रोटी, कपड़ा और मकान। इन तीनों ही मूलभूत आवश्यकताओं के लिए धन की आवश्यकता है। यह धन की आवश्यकता कुछ-न-कुछ व्यवसाय करके ही पूरी हो सकती है। व्यवसाय की भी कई श्रेणियाँ हैं- सरकारी व्यवसाय तथा व्यक्तिगत व्यवसाय।

धीरे-धीर सभ्यता के विकास के साथ-साथ जनता की मांग बढ़ी जिस कारण नये-नये व्यवसायों ने जन्म लिया। ये व्यवसाय विभिन्न कार्यकुशताएँ, लिए हुए लोगों की मांग करने लगे। ये मांगे विभिन्न नये-नये व्यावसायिक पाठ्यक्रमों द्वारा पूरा की जाने लगी।

धर्म का पालन करते हुए अर्थ अर्थात् धन कमाना, यह शर्त भारतीय दर्शन में लगा दी गयी ताकि यदि कोई व्यक्ति अनैतिक रूप से अर्थ कमाता है तो वह धर्म नहीं है।

जैन धर्म में तो बारह महासिद्धांतों के अंतर्गत कहा जाता है कि गलत माप-तौल का व्यापार में सहारा न लें।

प्रत्येक कार्य-व्यापार में कुछ नैतिक मूल्य भी पाये जाते हैं। ये नैतिक मूल्य मानव को उसकी सीमा से बाहर नहीं जाने देते परंतु यदि आज के समय पर दृष्टिपात करें तो हम पायेंगे कि आज किसी भी विषय में नैतिक मूल्य नहीं रह गया है। बेईमानी, चोरी, फरेब, झूठ तो जैसे लक्ष्य की तरह से बन गये हैं। मानव को इस बात का डर ही नहीं है कि उसका कोई भी अनैतिक कृत्य उसे पतन के मार्ग पर ले जायेगा। हर व्यवसाय में मानो जैसे कि विशेष रूप से बेईमानी करने के विशेष मार्ग हैं- बेईमान के विशेष रूप है।

❑

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

PHILOSOPHY

Set-VI

MODEL PAPER - VI

कुल प्रश्नों की संख्या : 40 + 10 + 5 = 55

Total No. of Questions : 40 + 10 + 5 = 55

कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 24

Total No. 1 of Printed Pages : 24

PHILOSOPHY

A.-PHL. (OPT)

समय : 3 घंटे 15 मिनट] [पूर्णांक : 100

Time : 3 Hours 15 Minutes] [Marks : 100

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

Instructions to the candidate :

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।
   Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.
2. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।
   Figures in the right hand margin indicate full marks.
3. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ भाग संख्या, खण्ड संख्या और प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।
   Write Section number, Group number and Question number with every answer.

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में दो भाग-भाग-I एवं भाग-II हैं। भाग-I में खण्ड-अ एवं भाग-II में खण्ड-ब एवं खण्ड-स हैं।

भाग-I : भाग-I के खण्ड-अ के प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रकार के हैं। इस खण्ड के प्रश्न संख्या 1 से 40 तक प्रत्येक 1 अंक का है।

भाग-II : भाग-II के सभी प्रश्न गैर-वस्तुनिष्ठ हैं। भाग-प्पके खण्ड-ब के प्रश्न लघु उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी 10 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है। भाग-प्पके खण्ड-स के प्रश्न दीर्घ उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी 5 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का है।

***Instructions* :**

This paper consists of two Sections - Section - I and II. Section - I consists of Group - A and Section - II consists of Group-B & Group - C.

***Section*-I :** Group A of Section - I are Objective Type Questions. In this group Question Nos. 1 to 40 carry 1 mark each.

***Section*-II :** All Questions of Section - II are Non-Objective Type. Group -B of Section-II are Short Answer Type questions. Answer all 10 questions. Each question carries 3 marks. Group-C of Section-II are Long Answer Type Questions. Answer all 5 questions. Each question carries 6 marks.

Model Paper - VI

भाग–I

Section - I

खण्ड–अ

Group - A

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(Objective Type Questions)

सभी 40 प्रश्नों के उत्तर दें। सही उत्तर का चयन करते हुए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दें:

40 × 1 = 40

Answer all the questions. Answer each question by Selecting the correct answer

40 × 1 = 40

1. ज्ञान की प्राप्ति निगमनात्मक विधि से होती है-

(a) बुद्धिवाद में (b) अनुभववाद में

(c) समीक्षावाद में (d) इनमें से कोई नहीं

Deductive method of knowledge is applied in

(a) Rationalism (b) Empiricism

(c) Criticism (d) None of these

2. ज्ञान की प्राप्ति आगनात्मक विधि से होती है-

(a) बुद्धिवाद (b) अनुभववाद

(c) समीक्षावाद (d) इनमें से कोई नहीं

Inductive method of Knowledge is applied in:

(a) Rationalism (b) Empiricism

(c) Criticism (d) None of these

3. किसका मानना है कि कोई प्रत्यय जन्मजात नहीं होता है-

(a) लॉक (b) देकार्त

(c) स्पिनोजा (d) इनमें से कोई नहीं

Who among the following refuted Innate Ideas?

(a) Locke (b) Descartes

(c) Spinoza (d) None of these

4. जैन दर्शन में ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धान्त क्या है-

(a) स्याद्वाद (b) अनेकान्तवाद

(c) ख्यातिवाद (d) इनमें से कोई नहीं

What is the theory of Relativity of knowledge in Jaina Philosophy?

(a) Syadvad (b) Anekantvad

(c) Khyativad (d) None of these

5. स्पिनोजा ने स्वीकारा है-

(a) अंत:क्रियावाद (b) समानान्तरवाद

(c) पूर्वस्थापित सामंजस्यवाद (d) इनमें से कोई नहीं

Spinoza accepts:

(a) Interactionalism (b) Parallelism

(c) Pre-Established Harmony (d) Non of these

6. अभाव के दो प्रकार हैं-

(a) संसर्गाभाव (b) अन्योन्याभाव

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Two types of Non-Existence:

(a) Sansargabhaav (b) Anyonyabhav

(c) Both a & b (d) None of these

7. वैशेषिक दर्शन में पदार्थों की कितनी संख्या स्वीकार की गयी है?

(a) तीन (b) चार

(c) सात (d) पाँच

Padartha, in Vaisesika Philosophy are:

(a) Three (b) Four

(c) Seven (d) Five

8. यथार्थ ज्ञान कहलाता है :

(a) प्रमा (b) अप्रमा

(c) प्रमाण (d) इनमें से कोई नहीं

Real knowledge is called :

(a) Prama (b) Aprama

(c) Pramana (d) None of these

9. कौन प्रथम तीर्थंकर हैं ?

(a) पार्श्वनाथ (b) महावीर

(c) आदिनाथ (d) गौतम

Who is the first Tirthankara ?

(a) Parshvanath (b) Mahavir

(c) Adinath (d) Gautam

10. शंकर का सिद्धांत है ?

(a) विशिष्टाद्वैत (b) निरपेक्षवाद

(c) अद्वैत (d) इनमें से कोई नहीं

Theory of Shankara is

(a) Vishishtadvaita (b) Nirapakeshavada

(c) Advaita (d) None of these

11. भारतीय दर्शन है :

(a) व्यावहारिक (b) अव्यवहारिक

(c) परिकल्पनात्मक (d) इनमें से कोई नहीं

Indian Philosophy is -

(a) Practical (b) Impractical

(c) Hypothetical (d) None of these

12. भारतीय दर्शन के दो सम्प्रदाय हैं :

(a) प्राकृतिक और अप्राकृतिक (b) भौतिकवादी और अध्यात्मवादी

(c) आस्तिक और नास्तिक (d) इनमें से कोई नहीं

Two Schools of Indian Philosophy are

(a) Natural and Unnatural (b) Materialistic and Idealistic

(c) Orthodox and Heterodox (d) None of these

13. किसने कहा कि मनुष्य सभी वस्तुओं का मापदंड हैं ?

(a) अरस्तु (b) प्लेटो

(c) सोफिस्ट (d) बेन

Who said that man is the measure of all things

(a) Aristotle (b) Plato

(c) Sophists (d) Ben

14. जैन किसकी उपासना करते थे ?

(a) ईश्वर की (b) आत्मा की

(c) तीर्थंकर की (d) ब्रह्म की

Who is worshipped by the Jainas?

(a) God (b) Soul

(c) Tirthankaras (d) Brahma

15. इनमें से कौन बुद्धिवादी हैं :

(a) देकार्त (b) बर्कले

(c) ह्यूम (d) लॉक

Who among the following is a rationalist?

(a) Descartes (b) Berkley

(c) Hume (d) Locke

16. न्याय-वैशेषिक केवल एक प्रकार का मोक्ष मानना है-

(a) विदेह (b) जीवन

(c) परिनिर्वाण (d) निर्वाण

What kind of Moksha is accepted in Nyaya-Vaisheshika?

(a) Videha (b) Jivan

(c) Parinirvana (d) Nirvana

17. भगवान बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश कहाँ दिया-

(a) कपिल वस्तु (b) कौशाम्बी

(c) सारनाथ (d) गया

Where did Lord Buddha delivered his first preaching?

(a) Kapilvastu (b) Kaushambi

(c) Sarnath (d) Gaya

18. द्वादशनिदान में संस्कार का कारण है-

(a) विज्ञान (b) नाम-रूप

(c) षडायतन (d) अविद्या

The cause of Sanskar in Dwadashnidan:

(a) Vigyan (b) Naam-roop

(c) Shadaytana (d) Avidya

19. श्वास-प्रस्वास प्रक्रिया को नियंत्रित कर उसे एक क्रम में लाना क्या कहलाता है-

(a) धारणा (b) ध्यान

(c) समाधि (d) प्राणायाम

Bringing forth a sequence in breathing is called

(a) Dharna (b) Dhyana

(c) Samadhi (d) Pranayama

20. मोक्ष के लिए 'कैवल्य' शब्द का प्रयोग किस दर्शन में हुआ है-

(a) बौद्ध (b) जैन

(c) चार्वाक (d) वेदान्त

Which philosophy uses the term 'Kaivalya' for Moksha?

(a) Buddhism (b) Jaina

(c) Charvaka (d) Vedanta

21. अविद्या एवं इसके नाना कार्यों की समाप्ति है-

(a) अविद्या (b) तृष्णा

(c) समाधि (d) निर्वाण

The cessation of Avidya and its effects are called:

(a) Avidya (b) Trishna

(c) Samadhi (d) Nirvana

22. वस्तु का धर्म है-

(a) परिवर्तनशील (b) आकास्मिक

(c) अनित्य (d) ये सभी

Attribute of an object is:

(a) Changing (b) Casual

(c) Non-eternal (d) All of these

23. सांख्य के अनुसार मोक्ष की प्राप्ति होती है-

(a) धर्म से (b) कर्म से

(c) ज्ञान से (d) सभी से

Moksha accordind to Samkhya is attained by

(a) Virtues (b) Rituals

(c) Knowledge (d) All of the above

24. सबसे उत्कृष्ट जीव किसे कहा गया है-

(a) मुक्तजीव (b) बद्धजीव

(c) एकेन्द्रीय (d) इनमें से कोई नहीं

The Purified Jiv is

(a) Free soul (b) Bound Soul

(c) jiva with one sense (d) None of these

25. 'पदार्थ धर्म संग्रह' नामक भाष्य की रचना किसने की थी ?

(a) उदयन (b) प्रशस्तवाद

(c) कणाद (d) श्रीधर

Who wrote 'Padartha Dharm Sangraha"?

(a) Udayan (b) Prashastpad

(c) Kanad (d) Sridhar

26. वैशेषिक के अनुसार पृथ्वी का गुण क्या है-

(a) स्पर्श (b) शब्द

(c) गन्ध (d) रस

What is the attribute of Earth according to Vaishesika?

(a) Touch (b) Sound

(c) Smell (d) Taste

27. लोकसंग्रह सिद्धान्त है-

(a) सुखवाद (b) सर्वकल्याणवाद

(c) पूर्णतावाद (d) ये सभी

Lokasangraha is a theory of

(a) Hedonism (b) All welfare

(c) Perfectionism (d) All of these

28. भगवान बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश कहाँ दिए-

(a) कपिल वस्तु (b) कौशाम्बी

(c) गया (d) सारनाथ

The first preaching of Lord Buddha is deliverd at

(a) Kapilvastu (b) Kaushambi

(c) Gaya (d) Sarnath

29. लोक संग्रह का साधन है-

(a) सकाम कर्म (b) निष्काम कर्म

(c) अकर्म (d) विकर्म

The means of Lokasangraha

(a) Sakaam Karma (b) Nishkaam Karma

(c) Akarma (d) Vikarma

30. बौद्ध दर्शन के अनुसार मोक्ष (निर्वाण) अवस्था है-

(a) आनन्द की (b) दु:ख रहित

(c) अनुभवरहित (d) सुख की

Nirvana, according to the Buddhist Philosopy, is a stage of-

(a) Aananda (b) Absence of Pains

(c) Absence of Experience (d) Pleasure

31. शंकराचार्य के अनुसार जगत् है-

(a) पारमार्थिक सत्य (b) व्यावहारिक सत्य

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

The World according to Shankaracharya is-

(a) Transcendental (b) Practical

(c) Both (d) None of these

32. मोक्ष के लिये निर्वाण शब्द किस दर्शन में प्रयुक्त हुआ है-

(a) सांख्य (b) मीमांसा

(c) बौद्ध (d) जैन

Which philosophy uses the term 'Nirvana' for liberation?

(a) Sankhya (b) Mimansa

(c) Buddhism (d) Jaina

33. पुरुषार्थ हैं-

(a) दो (b) तीन

(c) चार (d) इनमें से कोई नहीं

The types of Purushartha :

(a) Two (b) Three

(c) Four (d) None of these

34. उपनिषदों का सार है-

(a) रामायण (b) गीता

(c) महाभारत (d) इनमें से कोई नहीं

The essence of the Upanisadas-

(a) The Ramayana (b) The Gita

(c) The Mahabharata (d) None of these

35. आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद के समर्थक हैं-

(a) प्लेटो (b) बर्कले

(c) हीगेल (d) इनमें से कोई नहीं

The supporter of Subjective Idealism-

(b)Plato (b) Berkeley

(c) Hegal (d) None of these

36. फिलॉसफी का अर्थ है-

(a) नियमों का आविष्कार (b) ज्ञान के प्रति प्रेम

(c) ज्ञान के प्रति अरूचि (d) इनमें से कोई नहीं

The meaning of Philosophy is-

(a) Invention of Laws (b) Love for knowledge

(c) Non-interest to knowledge (d) None of these

37. शंकर के अनुसार सत्-चित्-आनंद कौन हैं?

(a) ईश्वर (b) माया

(c) ब्रह्म (d) इनमें से कोई नहीं

Who among the following is Sat-Cit-Anand according to Sankar

(a) God (b) Maya

(c) Brahma (d) None of these

38. आस्तिक दर्शन की संख्या है-

(a) आठ (b) छः

(c) तीन (d) पाँच

The number of Orthodox Philosophy is-

(a) Eight (b) Six

(c) Three (d) Five

39. पर्यावरणीय नीतिशास्त्र है-

(a) मनुष्य केन्द्रित (b) जीवन केन्द्रित

(c) पशु केन्द्रित (d) इनमें से कोई नहीं

Environmental Ethics is-

(a) Man-centric (b) Life-centric

(c) Animal centric (d) None of these

40. अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र को कहते हैं-

(a) व्यावहारिक नीतिशास्त्र (b) अधिनीतिशास्त्र

(c) आदर्शमूलक नीतिशास्त्र (d) उपर्युक्त सभी

Applied Ethics is called-

(a) Practical ethics (b) Meta ethics

(c) Idealistic ethics (d) All of the above.

भाग–II

Section-II

(गैरवस्तुनिष्ठप्रश्न)

(Non-Objective Type Questions)

Group-B

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

(Short Answer Type Questions)

सभी प्रश्नों के उत्तर दें : **10 × 3 = 30**

Answer All Questions : **10 × 3 = 30**

1. भारतीय दर्शन की प्रवृत्ति कैसी है ? क्या भारतीय दर्शन निराशावादी है ?

   What is the tendency of Indian Philosophy? Is Indian Philosophy pessimistic ?
2. भारतीय दर्शन के कौन से दो सम्प्रदाय हैं ?

   Which are two schools of Indian Phiolosophy ?
3. संक्षेप में ऋत की अवधारणा को बतायें।

   Briefly mention the concept of Rta.
4. गीता में 'स्वधर्म' की अवधारणा क्या है ? संक्षेप में वर्णन करें।

   What is the concept of 'Swadharma' in the Gita ? Explain briefly.
5. चार पुरुषार्थों के नाम बतायें।

   Mention the names of the four Purusarthas.
6. काण्ट ने ज्ञान को क्या कहा है ?

   What does Kant say about Knowledge ?
7. पाश्चात्य दर्शन का आरंभ बिन्दु तथा उसके जनक कौन हैं ?

   What is the beginning point of Western Philosophy and who is its founder?
8. देकार्त कौन थे तथा बुद्धिवाद क्या है ?

   Who was Descartes and what is rationalism ?
9. व्यावसायिक नीतिशास्त्र क्या है ?

   What is Professional Ethics ?
10. पर्यावरण क्या है ?

    What is environment ?

खण्ड-स

Group - C

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

(Long Answer Type Questions)

11. कांट किस प्रकार बुद्धिवाद एवं अनुभववाद के मध्य समन्वय करते हैं?

    How does Kant reconcile between Rationalism and Empricism ?

12. जैन दर्शन के अनुसार स्याद्वाद की व्याख्या करें।

    Explain Jain Conception of Syadvada.

13. ईश्वर के अस्तित्व के सम्बन्ध में तात्विक प्रमाणों का उल्लेख कीजिए।

    Discuss the Ontological arguments for existence of God.

14. ऋत के सिद्धान्त की व्याख्या करें।

    Explain the theory of Rit.

15. लाइबनिज के अनुसार मन एवं शरीर के द्वैत पर प्रकाश डाले।

    Explain the view of Leibnitz regarding mind and body relation.

- ANSWER -

1. (d)	2. (b)	3. (a)	4. (a)	5. (b)	6. (c)
7. (c)	8. (a)	9. (a)	10. (c)	11. (a)	12. (c)
13. (c)	14. (c)	15. (a)	16. (a)	17. (c)	18. (d)
19. (d)	20. (b)	21. (d)	22. (d)	23. (c)	24. (a)
25. (b)	26. (c)	27. (b)	28. (d)	29. (b)	30. (b)
31. (b)	32. (c)	33. (c)	34. (b)	35. (b)	36. (b)
37. (c)	38. (b)	39. (b)	40. (a)		

- ANSWER -

1. भारतीय दर्शन की प्रवृत्ति व्यावहारिक है। भारतीय दर्शन निराशावादी नहीं है, क्योंकि यह मानता है कि दु:खों से मुक्ति संभव है।
2. भारतीय दर्शन के दो सम्प्रदाय हैं- आस्तिक एवं नास्तिक। वेदों की प्रामाणिकता में विश्वास करने वाले सम्प्रदाय आस्तिक कहलाते हैं तथा वेदों की प्रामाणिकता को अस्वीकार करने वाला सम्प्रदाय नास्तिक कहलाता है।
3. ऋत् प्राकृतिक तथा नैतिक नियम है जिसके तहत विश्व की व्यवस्था का संचालन होता है।
4. गीता के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति और वर्ण के लिए निश्चित किये गये कर्त्तव्य ही व्यक्ति का स्वधर्म है। अर्थात् मनुष्यों के लिए निश्चित किये गये व्यक्तिगत और सामाजिक कर्तव्यों को गीता ने स्वधर्म कहा है।
5. पुरुषार्थ चार हैं- धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष।
6. काण्ट ने ज्ञान को प्रागनुभविक संश्लेषणात्मक निर्णय कहा है।
7. पाश्चात्य दर्शन का आरंभ बिन्दु ग्रीक दर्शन तथा थेलिज ग्रीक दर्शन के जनक माने जाते हैं।
8. देकार्त एक गणितज्ञ तथा बुद्धिवादी दार्शनिक थे जिन्हें आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का पिता कहा जाता है। बुद्धिवाद एक ज्ञान मीमांसीय सिद्धांत है जिसके अनुसार ज्ञान की उत्पत्ति बुद्धि से होती है।
9. नीतिशास्त्र के जिस शाखा में व्यवसाय से संबंधित नैतिक आदर्श और नैतिक मूल्यों का अध्ययन होता है, उसे व्यावसायिक नीतिशास्त्र कहते हैं।
10. पर्यावरण वे परिस्थितियाँ हैं जिसमें मनुष्य, पशु एवं पेड़-पौधे रहते हैं एवं क्रियाकलाप करते हैं।
11. जर्मन दार्शनिक कांट (Kant) ज्ञानशास्त्रीय सिद्धान्त को समीक्षावाद (Criticism) कहते हैं। कांट के सम्मुख पूर्वस्थापित दो ज्ञानशास्त्रीय सिद्धांत थे- बुद्धिवादी (Rationalism) और अनुभववाद (Empiricism)। ये दोनों परस्परविरोधी सिद्धान्त है। कांट ने इनमें आंशिक सत्यता एवं आंशिक दोष पाकर इनमें समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है।

    बुद्धिवाद और अनुभववाद में निम्नलिखित विरोध दीख पड़ते हैं-

(a) बुद्धिवाद के अनुसार बुद्धि की एकमात्र ज्ञानप्राप्ति का साधन है। अनुभववाद अनुभव को ही ज्ञानप्राप्ति का एक मात्र साधन मानता है।

(b) बुद्धिवाद ज्ञान प्राप्ति में अनुभव को कोई स्थान नहीं देता। अनुभववाद बुद्धि को इस प्रसंग में कोई महत्व नहीं देता।

(c) बुद्धिवाद के अनुसार यथार्थ ज्ञान सार्वभौम एवं अनिवार्य होता है, किन्तु अनुभववाद इसे संभाव्य मानता है।

(d) बुद्धिवाद के अनुसार यथार्थ ज्ञान में सार्वभौमिकता, अनिवार्यता एवं निश्चयता का रहना आवश्यक है, किन्तु अनुभववाद के अनुसार यथार्थ ज्ञान में नवीनता का होना अनिवार्य है।

(e) बुद्धिवाद के अनुसार बुद्धि जन्मजात प्रत्ययों के विश्लेषण द्वारा ज्ञान देती है, किन्तु अनुभववाद के अनुसार अनुभवजन्य प्रत्ययों के संश्लेषण से ज्ञान की उत्पत्ति होती है।

(f) बुद्धिवाद मन या बुद्धि को सक्रिय माना है, किन्तु अनुभववाद के अनुसार ज्ञान की प्रारंभिक अवस्था में मन निष्क्रिय रहता है।

(g) बुद्धिवाद निगमनात्मक विधि अपनाता है, तो अनुभववाद आगमनात्मक विधि का सहारा लेता है।

(h) बुद्धिवाद का आदर्श धारणात्मक विज्ञान है, किन्तु अनुभववाद का आदश है, वस्तुनिष्ठ विज्ञान।

(i) बुद्धिवाद ज्ञान के लिए वस्तुसंवादी होना कोई आवश्यक नहीं, किन्तु अनुभवजन्य ज्ञान के लिए वस्तुसंवादी होना अनिवार्य है।

कान्ट का कहना है कि बुद्धिवाद और अनुभववाद दोनों एकांगी, अपूर्ण है, दोनों के कथनों में आंशिक दोष है और आंशिक सत्यता भी है। उन्होंने दोनों परस्पर विरोधी सिद्धान्तों में सामजस्य स्थापित करने का प्रयत्न किया है। कांट का कहना है कि ज्ञान प्राप्ति में बुद्धि और अनुभव दोनों की आवश्यकता है। दोनों में किसी का महतव कम नहीं कहा जा सकता है। कांट दोनों में समन्वय स्थापित करते हुए कहते हैं कि यथार्थ ज्ञान में सार्वभौमिकता अनिवार्यता एवं नवीनता तीनों गुण विद्यमान रहने चाहिए। कुछ प्रत्यय जन्मजात है तो कुछ अर्जित है। इसलिए ज्ञान का कुछ अंश जन्मजात है, तो कुछ अंश अनुभवजन्य भी है। ज्ञान प्राप्ति में जन्मजात प्रत्ययों का विश्लेषण जितना आवश्यक है, उतना ही आवश्यक है अनुभव द्वारा प्रत्ययों का संश्लेषण। ज्ञान प्राप्ति में आगमनात्मक विधि और निगमनात्मक विधि दोनों का प्रयोग आवश्यक है। इनमें किसी एक विधि से काम नहीं चल सकता। ज्ञान के लिए सार्वभौम होना जितना आवश्यक है, उतना ही आवश्यक इसे, वस्तुसंवादी अर्थात यथार्थ होना है।

इस प्रकार कांट ने अपने समीक्षावाद में बुद्धिवाद तथा अनुभववाद जैसे परस्पर विरोधी सिद्धांतों में समन्वय लाने का प्रशंसनीय प्रयास किया है।

12. किसी वस्तु के विषय में किसी व्यक्ति का निर्णय या मत अंशत: ही सत्य होता है न कि पूर्णत: सत्य। एक ही बात एक दृष्टिकोण से सत्य है। तो दूसरे दृष्टिकोण असत्य है। इसलिए जैन दार्शनिक प्रत्येक मत या नय के पूर्व 'स्यात्' लगा देते हैं। यही जैनों क्रो स्याद्वाद है। इसे अनेकांतवाद भी कहते हैं। इसे सप्तमंगीय भी कहा जाता है। सप्त वाक्य ये है।

(i) 'स्यात्' है। (स्यात् अस्ति) - स्यात कलम लाल है। यह भावात्मक नयों का साधारण रूप है।

(ii) स्यात् नहीं (स्यात् नगस्ति)- यह सामान्य निषेधात्मक वाक्य है। स्यात् आम मीठा नहीं है।

(iii) स्यात है। भी और नहीं भी है। (स्यात् अस्तिच नास्ति च) एक दृष्टिकोण से किसी वस्तु का अस्तित्व है और दृष्टिकोण से उसका अस्तित्व नहीं भी है। स्यात् टेबुल गोल है और गोल नहीं भी है।

(iv) स्यात् अव्यवाक्य है। (स्यात अव्यवाक्य)- जब किसी वस्तु में विरोध गुण पाए जायें तो इसे स्यात् अप्यवाक्य कहा जाता है। मनुष्य ईमानदार तथा बेईमान दोनों हो सकता है। यदि इसकी ईमानदारी के विषय में पूछा जाय तो स्यात् अप्यक्तप्यम् या अनिवर्चनीय कहना उचित होगा।

(v) स्यात् है और अप्यक्तत्यम भी है। (स्यात् अस्ति च अत्यक्तप्यम् च) जब पहले और चौथे नयों का मिलाने के पांचवां नय बनता है। किसी वस्तु अस्तित्व है और उस वस्तु का स्वरूप अनिवर्चनीच है।

(vi) स्यात् नहीं है और अप्यवाक्य भी है। (स्यात् पुस्तक नहीं है और अत्यवक्तव्य भी है।) दूसरी ओर चौथे नयो को मिलाने से छठा नया बनता है। उदाहरण स्ताय् पुस्तक नहीं है। अप्यक्तप्य भी है।

(vii) स्यात् है नहीं और अप्यक्तप्य भी (स्यात् अस्ति च नास्ति च अप्यक्तव्य च) तीसरे और चौथे नयों को मिलाने से सातवाँ नय बनाता है। जैसे- स्यात् पुस्तक है। नहीं है। और अप्यक्तव्य भी है।

स्याद्वाद संदेहवाद न होकर सापेक्षवाद है। संदेहवाद ज्ञान की संभावना में अविश्वास करता है। परन्तु स्याद्धग्द्ध यथार्थ ज्ञान की संभावना से विश्वास रखता है। इसका इतना कहना है कि साधारण व्यक्ति का ज्ञान आंशिक रूप से ही सत्य होता है। किसी भी ज्ञान को सभी दृष्टिकोणों से सत्य नहीं कहा जा सकता। ज्ञान स्थाल काल एवं परिस्थिति के आधार पर सत्य होता है। इसलिए स्याद्वाद को सापेक्षवाद कहा जाता है।

13. मध्यकालीन दार्शनिक संत असलेम ने सर्वप्रथम ईश्वर के विषय में तत्व विषयक प्रमाण प्रस्तुत किया जिसको बाद में देकार्त ने विकसित किया। इस तर्क के अनुसार हम ईश्वर को सर्वोच्च सत्ता के रूप में मानते हैं तथा इसके पूर्ण भी मानते हैं। इस प्रकार जब हम ईश्वर को पूर्ण मानते हैं तब इसका अस्तित्व भी अवश्य होना चाहिए क्योंकि अस्तित्व के अभाव में इसे पूर्ण नहीं माना जा सकता है। इससे स्पष्ट है कि तत्व विषयक तर्क के अनुसार ईश्वर की पूर्णता ही इसके अस्तित्व का प्रमाण है। इसके साथ ही यह भी यथार्थ है कि अस्तित्व के अभाव में ईश्वर को सर्वोच्च भी नहीं माना जा सकता। देकार्त ने ईश्वर के अस्तित्व के विषय में तत्व विषयक तर्क कुछ भिन्न प्रकार से दिया है। इसका कहना है कि हमारे मन जो असीम सर्वज्ञ और शाश्वत सत्ता का प्रत्यय है। वह असीम सर्वज्ञ और शाश्वत शक्ति के अस्तित्व को सिद्ध करता है क्योंकि यदि यह विचार किया जाए कि ईश्वर का प्रत्यय का विचार कहाँ से उत्पन्न हुआ तब इस विषय में मनुष्य को स्वयं इस साधारण का कारण नहीं माना जा सकता क्योंकि मनुष्य अपूर्ण है। इसलिए वह पूर्ण के प्रत्यय का कारण नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त यदि यह कहा जाए कि असीम प्रत्यय सकारात्मक न होकर नकारात्मक है, तब देकार्त का यह कहना है कि असीम का बोध असीम से पूर्व और अधिक स्पष्ट तथा यथार्थ होता है क्योंकि ससीमता असीमता से अपेक्षा रखती है तथा अपूर्ण पूर्ण की अपेक्षा से होता है। इस प्रकार असीम के प्रत्यय का कारण न तो मनुष्य है और न ही यह नकारात्मक प्रत्यय है। बल्कि इस प्रत्यय का स्वयं ईश्वर ही कारण है। इस विषय में यदि कहा जाए कि मनुष्य असीम एवं अपूर्ण है तब इसके मन में असीम और पूर्ण का प्रत्यय कैसे बन सकता है। इस प्रश्न का उत्तर देते हुए देकार्त ने कहा है कि यह तो मान्य है कि मनुष्य समिति है। इसलिए वह असीम की धारण को ग्रहण

नहीं कर सकता किन्तु इस विषय में यह भी स्पष्ट ही है कि मनुष्य यह तो जान सकता है कि उसके मन जो असीम की धारणा है वह स्वयं से सम्बन्धित नहीं वरन् इसका सम्बन्ध किसी पूर्ण ईश्वर से ही हो सकता है। इस प्रकार स्पष्ट ईश्वर का प्रत्यय या असीम का प्रत्यय ही ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण है।

14. ऋतु की अवधारणा का सर्वप्रथम दर्शन वेदों में होता है। यहाँ तक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण नैतिक नियम है जिसका अनुपालन ब्रह्माण्ड के समस्त जड़ चेतन मनुष्य एवं देवता करते हैं। कालान्तर में यह परिष्कृत होकर कर्म सिद्धान्त का रूप ग्रहण कर लेता है। वस्तुतः वेद कर्मवाद का समर्थन करता है। इसमें अच्छे कर्मों के रक्षक, शुभ-अशुभ कर्मों के दृष्टा आदि विशेषण देवताओं के लिए प्रयुक्त हुआ है। वेदों में स्पष्ट किया गया है कि शुभ कर्म करने से अमरत्व की प्राप्ति होती है। कर्म के द्वारा व्यक्ति जन्म लेता है और मरता है। पूर्व जन्म के अशुभ कर्मों के कारण व्यक्ति पाप कर्मों की ओर उन्मुख होता और अगले जन्मों अपने शुभ-अशुभ कर्मों के फलों को भोगता है। शुभ कर्म करने वाले व्यक्ति देवयान साधारण कर्म करने वाले व्यक्ति पितृयान के द्वारा इन्द्रलोक में जाते हैं। इस प्रकार पूर्व जन्म के कर्मों के कारण व्यक्ति विभिन्न योनियों में जन्म लेता है।

ऋतु का अर्थ एवं महत्व जिस प्रकार मानव जीवन में कर्म का स्थान महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार जगत जीवन में 'ऋतु' का स्थान महत्वपूर्ण है। ऋतु का अर्थ है- "वस्तुओं का मार्ग" इससे स्पष्ट है कि जगत की वस्तुओं में एक व्यवस्था विद्यमान है। यह व्यवस्था एक सिद्धांत के रूप में कार्य करती है। वेद में इसी छिपे सिद्धांत को ऋत कहा जाता है। सूर्य, चन्द्रमा, प्रकृति, दिन-रात ऋतुएँ उसकी अभिव्यक्ति मात्र है। ऋत नित्य है सबका पिता है, स्वर्ग नरक का कारण है। प्रारम्भ में ऋत का प्रयोग सूर्य, चन्द्रमा, दिन-रात आदि के निश्चित मार्ग के लिए प्रयोग किया जाता था। बाद में देवताओं तथा मानवों के नैतिक मार्ग के रूप में जाना गया। समस्त जगत ऋत का अनुकरण करता है। धीरे-धीरे वह नैतिक नियम बन जाता है। इसी सिद्धांत के आधार पर संसार का व्यवस्थित माना गया। वरुण के वेद में ऋतस्य गोप कहा गया है।

उपर्युक्त विवेचनाधार पर हम यह निर्णायक रूप से कह सकते हैं कि ऋत की अवधारणा भारतीय नीति एवं दर्शन शास्त्र की प्राचीनतम अवधारणा है, जिसकी प्रारम्भिक अभिव्यक्ति ऋैवेद में दृष्टिगत होती है। कालान्तर में यह अवधारणा विकसित होकर नैतिक नियम का स्वरूप ग्रहण कर लेता है जिसकी विकसित अभिव्यक्ति कर्म के सिद्धांत एवं अन्य नैतिक नीति निर्देशक तत्वों एवं नियमों के रूप में हुई है।

15. लाइबनिज का मन एवं शरीर के संबंध विषयक विचार पूर्वस्थापित सामंजस्य के सिद्धांत के नाम से जाना जाता है जो Prestablished harmony के नाम से विख्यात है। इन्होंने अपने दर्शन में एकत्व (unity) की स्थापना तो की, किन्तु व्यक्ति विशेषों की उसने पूर्ण अवहेलना की। दर्शन में एकत्व (unity) और विशिष्टता (particularity) दोनों का सामजस्य आवश्यक है। लाइबनिज के अनुसार असंख्य चिद्विन्दु (monads) एक-दूसरे से स्वतंत्र एवं गवाक्षहीन (windowless) है। इस अनेकवाद (pluralism) में व्याख्या एवं सामंजस्य (Harmony) उनकी आपसी लेन-देन पर नहीं बल्कि ईश्वर की रचना पर आश्रित है। ईश्वर ने इन चिद्बिन्दुओं को इस प्रकारशृंखलाबद्ध कर दिया है और इनमें से किसी एक परिवर्तन होने पर दूसरे चिद्बिन्दुओं में भी तदनुरूप परिवर्तन होने लगता है। चिद्बिन्दुओं में ये परिवर्तन कार्य-कारण नियम द्वारा नहीं होते क्योंकि सभी चिद्बिन्दु परस्पर स्वतंत्र है ओर इनमें कार्य-कारण संबंध नहीं है। ये परिवर्तन सहचारी (concomitant) होते हैं। हमारे शरीर के चिद्बिन्दु अपने आंतरिक उद्देश्य से ही

संचालित होते हैं और हमारे मन के चिद्बिन्दु भी अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रेरित होते हैं। किन्तु ईश्वर के पूर्व-स्थापित सामंजस्य के द्वारा ऐसा लगता है कि मन की इच्छा के अनुकूल शारीरिक व्यापार होते हैं। समांतवादी और पूर्व स्थापित सामंजस्य सिद्धांत वास्तव में लाइबनिज का पूर्व स्थापित सामंजस्य स्पिनोजा के समांतवाद का ही सामान्यीकरण मात्र है। स्पिनोजा चैतन्य और विस्तार अर्थात मन और शरीर चिद्बिन्दुओं को शृंखला में आबद्ध होने के कारण परस्पर संबद्ध है। चिद्बिन्दुओं की एक तारतम्यात्मक शृंखला है। शरीर और मन भी इसी शृंखला के अन्तर्गत आने के कारण परस्पर संबंधित है। लाइबनिज का विचार है कि केवल मन और शरीर ही नहीं बल्कि सभी चिद्बिन्दुओं (monads) के कार्य-कलाप समान्तर रीति से संचालित होते रहते हैं। इनके सिद्धांत के अनुसार समांतरवाद (Parallelism) गतिशील (dynamic) है क्योंकि चिद्बिन्दुओं के मध्य होने वाले कार्य-कलाप विकासशील एवं गतिशील है।

लाइबनिज अपने इस सिद्धांत के द्वारा कई विरोधी विचारों में समन्वय लाने का प्रयास करते है। किन्तु इस पूर्व स्थापित सामंजस्य के सिद्धांत में कई दोष बताए जाते हैं।

(i) पूर्व-स्थापित सामंजस्य-सिद्धांत केवल एक धारणा (Assumption) है जिसे सिद्ध या असिद्ध नहीं किया जा सकता। इसलिए इसे संतोषप्रद सिद्धांत नहीं कहा जा सकता।

(ii) यह सिद्धांत मनगढ़ंत कहा जा सकता है लाइबनिज के अनुसार प्रत्येक चिद्बिन्दु गवाक्षहीन (Windowless) होने के कारण अपने-आप में सीमित है। अपने से बाह्य गुण का पता उसे नहीं रहता दार्शनिक भी एक चिद्बिन्दु होने के कारण इस संबंध को नहीं जान सकता जो सभी चिद्बिन्दु को बाह्य रूप से संबंध रखे हुए है। चिद्बिन्दु में विश्वास रखने वाला व्यक्ति एकात्मक-सत्तावादी (salipsist) ही हो सकता है। वह अपनी गवाक्षहीन दुनिया की बातें ही जान सकता है।

लाइबनिज का कहना है कि प्रत्येक चिद्बिन्दु समस्त विश्व को प्रतिबिम्बित करता है। (every monad represents the entire universe) किन्तु गवाक्षहीन चिद्बिन्दु यह कैसे जान सकता है कि इसका ईक्षण अन्य चिद्बिन्दुओं को प्रतिबिंबित करता है। इसका संतोषप्रद समाधान नहीं मिलता है।

(iii) लाइबनिज ने पूर्व-स्थापित सामंजस्य का आधार ईश्वर को बताया है। ईश्वर ने ही चिद्बिन्दुओं में संबंध स्थापित किया है। यहाँ ईश्वर द्वारा चिद्बिन्दुओं पर सामंजस्य लाया गया है। इससे चिद्बिन्दुओं की नित्यता (eternity) तथा असीमता (infinetly) पर गहरा आघात पहुँचाता है जब ईश्वर का अस्तित्व ही विवादास्पद है तो फिर उसके द्वारा स्थापित सामंजस्य-सिद्धा किस प्रकार मान्य हो सकता है।

(iv) पूर्व-स्थापित सामंजस्य का सिद्धांत दार्शनिक जिज्ञासा को संतुष्ट नहीं कर सकता। चिद्बिन्दुओं में संबंध ईश्वर के चमत्कार (Miracle) के द्वारा स्थापित किया गया है। इसके लिए किसी तर्क या प्रमाण की आवश्यकता नहीं रह जाती। दार्शनिक बुद्धि इसे यों ही सत्य नहीं मान सकती।

(v) पूर्व स्थापित सामंजस्य सिद्धांत दोषपूर्ण होने के कारण लाइबनिज का विरोधी सिद्धांतों में समन्वय स्थापित करने में थोड़ी ही सफलता मिल सकी।

❑

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

PHILOSOPHY

Set-VII

MODEL PAPER – VII

कुल प्रश्नों की संख्या : 40 + 10 + 5 = 55
Total No. of Questions : 40 + 10 + 5 = 55
कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 24
Total No. 1 of Printed Pages : 24

PHILOSOPHY

A.-PHL. (OPT)

समय : 3 घंटे 15 मिनट] [पूर्णांक : 100

Time : 3 Hours 15 Minutes] [Marks : 100

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

Instructions to the candidate :

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।
   Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.
2. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।
   Figure in the right hand margin indicate full marks.
3. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ भाग संख्या, खण्ड संख्या और प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।
   Write Section number, Group number and Question number with every answer.

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में दो भाग-भाग-I एवं भाग-II हैं। भाग-I में खण्ड-अ एवं भाग-II में खण्ड-ब एवं खण्ड-स हैं।

भाग-I : भाग-I के खण्ड-अ के प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रकार के हैं। इस खण्ड के प्रश्न संख्या 1 से 40 तक प्रत्येक 1 अंक का है।

भाग-II : भाग-II के सभी प्रश्न गैर-वस्तुनिष्ठ हैं। भाग-II के खण्ड-ब के प्रश्न लघु उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी 10 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है। भाग-प्के खण्ड-स के प्रश्न दीर्घ उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी 5 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का है।

***Instructions* :**

This paper consists of two Sections - Section - I and II. Section - I consists of Group - A and Section - II consists of Group-B & Group - C.

***Section*-I :** Group A of Section - I are Objective Type Questions. In this group Question Nos. 1 to 40 carry 1 mark each.

***Section*-II :** All Questions of Section - II are Non-Objective Type. Group -B of Section-II are Short Answer Type questions. Answer all 10 questions. Each question carries 3 marks. Group-C of Section-II are Long Answer Type Questions. Answer all 5 questions. Each question carries 6 marks.

Model Paper - VII

भाग-I

Section - I

खण्ड–अ

Group - A

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(Objective Type Questions)

सभी 40 प्रश्नों के उत्तर दें। सही उत्तर का चयन करते हुए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दें:

40 × 1 = 40

Answer all the questions. Answer each questions by Selecting the correct answer

40 × 1 = 40

1. मीमांसा दर्शन के प्रवर्तक हैं-

(a) जैमिनी (b) कणाद

(c) कपिल (d) गौतम

The founder of Mimansa Philosophy is:

(a) Jaimini (b) Kanad

(c) Kapil (d) Gautam

2. वेदान्त दर्शन के प्रवर्तक हैं-

(a) वादरायण (b) महावीर

(c) शंकर (d) अक्षपाद

The founder of Vedanta Philosophy:

(a) Vadrayan (b) Mahavir

(c) Sankar (d) Akshapad

3. इनमें से कौन नास्तिक है-

(a) सांख्य (b) न्याय

(c) जैन (d) वेदान्त

Heterodox among the following is:

(a) Sankhya (b) Nyaya

(c) Jaina (d) Vedanta

4. गीता का उपदेश है-

(a) सकाम कर्म (b) निष्काम कर्म

(c) कर्म से संन्यास (d) ये सभी

Preaching of Gita is:

(a) Sakaam Karma (b) Nishkaam Karma

(c) Sanyas in Action (d) All the above.

5. भारतीय दर्शन में अयथार्थ ज्ञान कहलाता है-

(a) अप्रमा (b) प्रमा

(c) प्रमाण (d) इनमें से कोई नहीं

Invalid Knowledge in Indian Philosophy is called:

(a) Aprama (b) Prama

(c) Praman (d) None of these

6. शिक्षा दर्शन एक शाखा है-

(a) भौतिक विज्ञान (b) मनोविज्ञान

(c) रसायन शास्त्र (d) दर्शनशास्त्र

7. शंकराचार्य के अनुसार मात्रा का आश्रय क्या है

(a) जीव (b) जगत

(c) ब्रह्म (d) आत्मा

What is the substratum of Matra in Sankaracharya view?

(a) j (b) j

(c) j (d) j

8. गीता में किस योग की चर्चा हुई है-

(a) ज्ञान योग (b) कर्म योग

(c) भक्ति योग (d) ये सभी

What type of Yoga has been propounded in the Gita?

(a) Jnan Yoga (b) Karma Yoga

(c) Bhakti Yoga (d) All of these

9. नास्तिक शिरोमणि किसे कहते हैं-

(a) बुद्ध (b) महावीर

(c) कपिल (d) चार्वाक

Who among the following is known as the Head of Heterodox Schools in Indian Philosophy?

(a) Buddha (b) Mahavir

(c) Kapil (d) Charvak

10. आत्मा है-

(a) ब्रह्म (b) ज्ञान

(c) आनन्द (d) इनमें से कोई नहीं

Soul is:

(a) Brahma (b) Jnan

(c) Aanand (d) None of these

11. शंकराचार्य का कारणता सम्बन्धी विचार है-

(a) ब्रह्म परिणामवाद (b) ब्रह्म विवर्तवाद

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Sankar's Law of causation is called:

(a) Brahna Parinamvad (b) Brahma Vivartavad

(c) Both a & b (d) None of these

12. इनमें से कौन अद्वैत वेदान्ती है-

(a) रामानुजाचार्य (b) निम्बार्क

(c) कुमारिल भट्ट (d) शंकराचार्य

Who among the following is concerned with the Advaita Vedanta school?

(a) Ramanujacharya (b) Nimbarka

(c) Kumarila Bhatta (d) Shankaracharya

13. दुःख का मूल कारण है-

(a) अविद्या (b) विद्या

(c) तृष्णा (d) इनमें से कोई नहीं

The root cause of sufferings:

(a) Avidya (b) Vidya

(c) Trishna (d) None of these

14. विशिष्टाद्वैत दर्शन एक सम्प्रदाय है-

(a) बौद्ध (इ) न्याय

(c) वेदान्त (क) चार्वाक

Vishishtadvaita is a school of:

(a) Buddhism (b) Nyaya

(c) Vedanta (d) Charvak

15. न्याय-वैशेषिक केवल एक प्रकार का मोक्ष मानना है-

(a) विदेह (b) जीवन

(c) परिनिर्वाण (d) निर्वाण

What kind of Moksha is accepted in Nyaya-Vaisheshika?

(a) Videha (b) Jivan

(c) Parinirvana (d) Nirvana

16. भगवान बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश कहाँ दिया-

(a) कपिल वस्तु (b) कौशाम्बी

(c) सारनाथ (d) गया

Where did Lord Buddha delivered his first preaching?

(a) Kapilvastu (b) Kaushambi

(c) Sarnath (d) Gaya

17. द्वादशनिदान में संस्कार का कारण है-

(a) विज्ञान (b) नाम-रूप

(c) षडायतन (d) अविद्या

The cause of Sanskar in Dwadashnidan:

(a) Vigyan (b) Naam-roop

(c) Shadaytana (d) Avidya

18. श्वास-प्रस्वास प्रक्रिया को नियंत्रित कर उसे एक क्रम में लाना क्या कहलाता है-

(a) धारणा (b) ध्यान

(c) समाधि (d) प्राणायाम

Bringing forth a sequence in breathing is called

(a) Dharna (b) Dhyana

(c) Samadhi (d) Pranayama

19. मोक्ष के लिए 'कैवल्य' शब्द का प्रयोग किस दर्शन में हुआ है-

(a) बौद्ध (b) जैन

(c) चार्वाक (d) वेदान्त

Which philosophy uses the term 'Kaivalya' for Moksha?

(a) Buddhism (b) Jaina

(c) Charvaka (d) Vedanta

20. अविद्या एवं इसके नाना कार्यों की समाप्ति है-

(a) अविद्या (b) तृष्णा

(c) समाधि (d) निर्वाण

The cessation of Avidya and its effects are called:

(a) Avidya (b) Trishna

(c) Samadhi (d) Nirvana

21. निम्न में कौन अभाव का प्रकार है-

(a) संसर्गाभाव (b) अन्योन्याभाव

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Which of following is kind of Abhaava

(a) Sansargabhaava (b) Anyonyabhaava

(c) Both a and b (d) None of these

22. लॉक के अनुसार गुणों को किस प्रकार जानते हैं-

(a) प्रत्यक्ष द्वारा (b) तर्क द्वारा

(c) ईश्वर भक्ति द्वारा (d) कल्पना द्वारा

According to Locke, attributes are known through

(a) Perception (b) Logic

(c) Devotion to God (d) Imagination

23. लाइबनिज के अनुसार अचेतन चिद्बिन्दु है-

(a) मनुष्य (b) ईश्वर

(c) पशु (d) जड़ जगत

Unconscious Monad according to Leibnitz, is

(a) Man (b) God

(c) Animal (d) Non-living

24. कारणकार्य नियम है-

(a) दार्शनिक (b) वैज्ञानिक

(c) सामान्य (d) ये सभी

The Law of Causation is

(a) Philosophical (b) Scientific

(c) Universal (d) All of these

25. नव्य न्याय दर्शन है-

(a) प्राचीन काल का न्याय दर्शन (b) आधुनिक काल का न्याय दर्शन

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Navya Nyaya Philosophy is

(a) Nyaya Philosophy of Ancient Age (b) Nyaya Philosophy of Modern Age

(c) Both (d) None of these

26. नव्य न्याय दर्शन में 'ज्ञान का ज्ञान' किसे कहा है ?

(a) ज्ञान (b) ज्ञेय

(c) आत्मा (d) ईश्वर

'Knowledge of Knowledge' in Navya Nyaya is called

(a) Knowledge (b) Object of Knowledge

(c) Soul (d) God

27. लोकसंग्रह सिद्धान्त है-

(a) सुखवाद (b) सर्वकल्याणवाद

(c) पूर्णतावाद (d) ये सभी

Lokasangraha is a theory of

(a) Hedonism (b) All welfare

(c) Perfectionism (d) All of these

28. भगवान बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश कहाँ दिए-

(a) कपिल वस्तु (b) कौशाम्बी

(c) गया (d) सारनाथ

The first preaching of Lord Buddha is deliverd at

(a) Kapilvastu (b) Kaushambi

(c) Gaya (d) Sarnath

29. लोक संग्रह का साधन है-

(a) सकाम कर्म (b) निष्काम कर्म

(c) अकर्म (d) विकर्म

The means of Lokasangraha

(a) Sakaam Karma (b) Nishkaam Karma

(c) Akarma (d) Vikarma

30. बौद्ध दर्शन के अनुसार मोक्ष (निर्वाण) अवस्था है-

(a) आनन्द की (b) दुःख रहित

(c) अनुभवरहित (d) सुख की

Nirvana, according to the Buddhist Philosopy, is a stage of-

(a) Aananda (b) Absence of Pains

(c) Absence of Experience (d) Pleasure

31. आत्मा की सत्यता कौन सी है ?

(a) व्यावहारिक (b) पारमार्थिक

(c) प्रातिभाषिक (d) इनमें से कोई नहीं

Truth of Soul is

(a) Vyavharika (b) Paarmarthika

(c) Pratibhashika (d) None of these

32. निम्नलिखित में से अनुभववादी तर्कशास्त्री कौन हैं-

(a) लॉक (b) बर्कले

(c) ह्यूम (d) ये सभी

Who amog the following is an Empirisist Logician?

(a) Locke (b) Berkeley

(c) Hume (d) All of these

33. अनासक्ति योग नामक ग्रन्थ की रचना किसने की ?

(a) तिलक (b) महात्मा गाँधी

(c) डॉ. राधाकृषणन (d) इनमें से कोई नहीं

'Anasakti Yoga' is written by

(a) Tilak (b) Mahatma Gandhi

(c) Dr.Radhakrishnan (d) None of these

34. इनमें से कौन अभाव पदार्थ नहीं है-

(a) प्रागाभाव (b) ध्वंसाभाव

(c) अन्योन्याभाव (d) समवाय

Which of the following is not Abhaav?

(a) Pragabhava (b) Dhwansabhaava

(c) anyonyabhaava (d) Samvaya

35. जन्मजात प्रत्यय संबंधी सिद्धान्त का खंडन किया है-

(a) **बर्कले** (b) **काण्ट**

(c) **लॉक** (d) **इनमें से कोई नहीं**

Who among the following did refute the Innate Ideas?

(b) Berkeley (b) Kant

(c) Locke (d) None of these

36. वैशेषिक दर्शन के प्रणेता कौन हैं-

(a) **महावीर** (b) **कणाद**

(c) **बर्कले** (d) **दुर्वासा**

Who is the founder of Vaisesika Philosophy?

(a) Mahavir (b) Kanad

(c) Berkeley (d) Durwasa

37. किसके द्वारा प्राप्त ज्ञान सार्वभौम एवं अनिवार्य होता है-

(a) अनुभववाद (b) बुद्धिवाद

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Universal and necessary knowledge is claimed to attain in:

(a) Empiricism (b) Rationalism

(c) Both a & b (d) None of these

38. देकार्त है-

(a) बुद्धिवादी (b) अनुभववादी

(c) समीक्षावादी (d) इनमें से कोई नहीं

Descartes is:

(a) Rationalist (b) Empiricist

(c) Criticism (d) None of these

39. धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष है-

(a) योग के चार सोपान (b) कर्म सिद्धान्त

(ब) चार पुरुषार्थ (क) नैतिकता

Dharma, Artha, Kaam and Moksha are-

(a) Stages in Yoga (b) Law of Karma

(c) Four Purushartha (d) Morality

40. 'ज्ञान संश्लेषणात्मक अनुभवपूर्ण निर्णय है': किस सिद्धांत से संबंधित है-

(a) बुद्धिवाद (b) अनुभवाद

(c) समीक्षावाद (d) इनमें से कोई नहीं

'Knowledge is a synthetic judgement a priori'- relates to:

(b) Rationalism (b) Empiricism

(c) Criticism (d) None of these

भाग–II

Section-II

(गैर वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

(Non-Objective Type Questions)

Group-B

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

(Short Answer Type Questions)

सभी प्रश्नों के उत्तर दें : **10 × 3 = 30**

Answer All Questions : **10 × 3 = 30**

1. पुरुषार्थ के रूप में 'अर्थ' के महत्व पर संक्षिप्त प्रकाश डालें।

   As a Purusartha, throw a brief light on Artha.

2. भारतीय दर्शन में कर्म कितने प्रकार के माने गये हैं ?

   How many types of Karma are there in Indian Philosophy ? Write their names.

3. बौद्ध दर्शन में आत्मा को क्या माना गया है ?

   What position has been taken about Atma in the Buddhist Philosophy ?

4. जैन दर्शन में अस्तिकाय द्रव्य कितने प्रकार के हैं ?

   What are the types of extended substances of Jaina philosophy ?

5. कारणता के संदर्भ में पूर्ववर्तिता सिद्धांत से आप क्या समझते हैं ?

   What do you understand by the theory of entailment in the context of causation.

6. ईश्वरीय अस्तित्व के प्रमाण से क्या अभिप्राय है ?

   What is the meaning of proofs for existence of God ?

7. ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए विश्वमीमांसीय युक्ति की संक्षिप्त व्याख्या करें।

   Briefly explain the cosmological argument to prove the existence of God.

8. एकेश्वरवाद का क्या अर्थ है तथा शुद्ध भौतिकवादी सिद्धांत क्या है ?

   What is meant by Monotheism and what is pure phyiscal theory ?

9. पर्यावरण का संबंध किससे है तथा पर्यावरण कितने प्रकार के हैं ? नाम लिखें।

   With whom environment is related to ? What are the types of environment ? Write their names.

10. पर्यावरण नीतिशास्त्र में मनुष्य के कर्मों के संबंध में पीटर सिंगर का क्या मत है ?

    What does Peter Singer say about human actions in environmental ethics ?

खण्ड-स

Group - C

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

(Long Answer Type Questions)

11. भारतीय दर्शन की मूलभूत विशेषताएँ क्या है ? इसपर प्रकाश डालिए।

    What are the basic characteristics of Indian Philosophy ? Throw light on it.

12. बौद्ध-दर्शन का चतुर्थ आर्यसत्य क्या है ? व्याख्या करें।

    What is the fourth Noble Truth in te Buddhist Philosophy ? Explain.

13. जीव की समीक्षात्मक विवेचना कीजिए ?

    Discuss critically of Jiva.

14. न्याय-दर्शन के प्रर्वतक गौतम के न्याय-सूत्र में किन पदार्थों का वर्णन हुआ है ? सविस्तार चर्चा कीजिए।

    What substances are described in Nyaya Sutra by Gautam, the founder of Nyaya Philosophy?

15. शिक्षण नीतिशास्त्र क्या है ? व्याख्या करें।

    What is the educational ethics ? Explain.

- ANSWER -

1. (a)	2. (c)	3. (c)	4. (b)	5. (a)	6. (d)
7. (c)	8. (d)	9. (d)	10. (a)	11. (b)	12. (d)
13. (a)	14. (c)	15. (a)	16. (c)	17. (d)	18. (d)
19. (b)	20. (d)	21. (c)	22. (a)	23. (d)	24. (d)
25. (b)	26. (c)	27. (b)	28. (d)	29. (b)	30. (b)
31. (b)	32. (d)	33. (c)	34. (d)	35. (c)	36. (b)
37. (b)	38. (b)	39. (c)	40. (c)		

- ANSWER -

1. जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति आवश्यक है। चाणक्य ने कहा है-"अर्थार्थ प्रवर्त्तते लोकः" अर्थात् अर्थ के लिए ही यह संसार है। अतः, पुरुषार्थ के रूप में 'अर्थ' को अपना कर यह संदेश दिया गया है कि मनुष्य को धन प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए।
2. भारतीय दर्शन में तीन प्रकार के कर्म माने गये हैं। उनके नाम निम्न प्रकार हैं-प्रारब्ध कर्म, संचित कर्म और क्रियमान कर्म।
3. बौद्ध दर्शन में आत्मा को अनित्य माना गया है। आत्मा चेतना का अविच्छिन्न प्रवाह है।
4. जैन दर्शन में अस्तिकाय द्रव्य दो प्रकार के हैं-(1) जीव-चेतना जीव का प्रमुख गुण है, जो हमेशा उसमें विद्यमान रहता है। (2) अजीव-जिसमें चेतना नहीं होता वह अजीव है।
5. पूर्ववर्त्तिता सिद्धांत के अनुसार कारण कार्य का पूर्ववर्ती होता है। इसका तात्पर्य यह है कि कार्य आवश्यक रूप से कारण द्वारा नियमित होता है। दूसरे शब्दों में, पूर्ववर्त्तिता सिद्धांत कारण कार्य सम्बन्ध में तार्किक अनिवार्यता को स्वीकारता है।
6. ईश्वरमीमांसीय समस्या का आरम्भ इस प्रश्न से होता है कि ईश्वर का अस्तित्व है कि नहीं। ईश्वरवादियों ने ईश्वर को अस्तित्ववान माना है और उसके लिए कुछ तर्क प्रस्तुत करते हैं। इन्हीं तर्कों को ईश्वरीय अस्तित्व के प्रमाण कहा जाता है।
7. विश्वमीमांसीय युक्ति के अनुसार विश्व एक घटना या कार्य है। प्रत्येक घटना या कार्य का कोई न कोई कारण अवश्य होता हैं। विश्व का कारण ढूढ़ने में अनन्तता से बचने के लिए हम जिस बिन्दु पर रुकते हैं वह ईश्वर है। उसका कोई कारण नहीं होता।
8. एकेश्वरवाद केवल एक ईश्वर की सत्ता स्वीकार करता है तथा शुद्ध भौतिकवादी सिद्धांत ईश्वरीय अस्तित्व को नहीं मानता।
9. पर्यावरण का संबंध मनुष्यों, पशु-पक्षियों तथा वनस्पतियों से हैं। पर्यावरण के तीन प्रकार हैं-(i) भौतिक (ii) मानसिक तथा (iii) अध्यात्मिक।

10. पर्यावरणीय नीतिशास्त्र में मनुष्य के कर्मों के संबंध में पीटर सिंगर का मत है कि मनुष्य को वे कार्य करने चाहिए जिनसे पर्यावरण को सुरक्षित रखा जा सके।
11. भारतीय दर्शन वैविध्यपूर्ण है। इसके विभिन्न संप्रदाय विभिन्न विचारधाराओं के समर्थक हैं। इनमें कुछ आस्तिक है, तो कुछ नास्तिक। फिर भी, कुछ ऐसी सामान्य बातें अवश्य है, जिसपर सभी भारतीय संप्रदाय एकमत है। इन्हीं सामान्य बातों को भारतीय दर्शन की प्रमुख विशेषताओं की संज्ञा दी जाती है। ये प्रमुख विशेषताएँ निम्नांकित हैं-
    (1) जीवन के प्रति निश्चित दृष्टिकोण- पाश्चात्य विचारकों के लिए दर्शन एक मानसिक व्यायाम मात्र है। किन्तु भारतीय दर्शन के अनुसार बुद्धि को संतुष्ट करना ही इसका लक्ष्य न हीं है, बल्कि ज्ञान के प्रकाश से जीवन को सुव्यविस्थत बनाना इसका मुख्य उद्देश्य है।
    (2) भारतीय दर्शन की उत्पत्ति आध्यात्मिक असंतोष के कारण होता है- भारतीय विचारकों का प्रधान लक्ष्य मानव को दु:खों से मुक्त करना है। भारतीय दर्शन का आरंभ भले ही निराशावाद से होता हो, किन्तु इसका अंत आशावाद से होता है।
    (3) विश्व को एक नैतिक रंगमंच मानना- जिस प्रकार किसी रंगमंच पर पात्र विभिन्न वस्त्रों में सज-धजकर अपना पार्ट अदा करते हैं और उसके बाद रंगमंच से अलग हो जाते हैं, ठीक उसी प्रकार विश्वव्यापी मंच पर भी विभिन्न प्राणी अपने कर्मों का प्रभाव दिखाकर विदा हो जाते हैं।
    (4) विश्व की शाश्वत नैतिक व्यवस्था में विश्वास- जिस प्रकार भौतिक जगत की व्यवस्था की व्याख्या कार्य-कारण नियम के आधार पर की जाती है, उसी प्रकार नैतिक जगत की व्याख्या कर्म-सिद्धांत द्वारा ही संभव है।
    (5) आत्मा के आस्तिक में विश्वास- चार्वाक और बौद्ध को छोड़कर संपूर्ण भारतीय दर्शन आत्मा की सत्ता में अखंड विश्वास रखता है।
    (6) अज्ञान दु:ख एवं बंधन को उत्पन्न करता है और ज्ञान से मोक्ष मिलता है।
    (7) आत्मनियंत्रण एवं एकाग्रचिंतन पर जोर।
    (8) जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है। चार्वाक के सिवा संपूर्ण भारतीय दर्शन मोक्ष को ही जीवन का चरम लक्ष्य मानता है। मोक्ष दो प्रकार के होते हैं- जीवन मुक्ति और विदेह मुक्ति।
12. बुद्ध ने अपने तृतीय आर्यसत्य में निर्वाण प्राप्ति को संभव बताया है। निर्वाण प्राप्ति के मार्ग में आठ सीढ़ियाँ हैं। इसलिए इसे 'अष्टांगमार्ग' या 'अष्टांगिक मार्ग' कहते हैं।
    अष्टांगमार्ग के निम्नलिखित आठ सोपान हैं-
    (1) उचित दृष्टि- दु:ख का मूल कारण अविद्या है, इसलिए दु:ख दूर करने के लिए सर्वप्रथम अविद्या का नाश एवं ज्ञान का उदय आवश्यक है। चार आर्यसत्यों का ज्ञान ही उचित दृष्टि है।
    (2) उचित संकल्प- केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त कर लेने से ही व्यक्ति निर्वाण के मार्ग पर अग्रसर नहीं हो जाता। 'उचित दृष्टि' प्राप्त होने पर उसे इस ज्ञान के प्रकाश में सतत् आगे बढ़ने का संकल्प करना चाहिए।
    (3) उचित वचन या सम्यक् वाक्- बौद्ध-दर्शन में आत्मशुद्धि की अत्यधिक महत्वपूर्ण माना गया है। इसके लिए सर्वप्रथम वचन की पवित्रता आवश्यक है।

(4) उचित कर्म या सम्यक् कर्मात्– साधक को उचित कर्म करना चाहिए। उचित कर्म के अंतर्गत अहिंसा, अस्तेय और इंद्रियसंयम आते हैं।

(5) उचित जीविका का सम्यक आजीव– बौद्ध के अनुसार निर्वाण की इच्छा रखने वाले व्यक्ति को रिश्वत, धोखा, लूट, अत्याचार आदि बुरे कर्मों को जीवन निर्वाह का साधन नहीं बनाना चाहिए।

(6) उचित प्रयत्न या सम्यक् व्यायाम्– इसके अंतर्गत साधक और मस्तिष्क से बुरे विचार निकालर उसमें अच्छे विचार करना आवश्यक है। यहाँ मानसिक जीवन की शुद्धि पर विशेष जोर दिया गया है।

(7) उचित स्मृति या सम्यक् स्मृति– सीखे हुए विषय का सतत् स्मरण रखना आवश्यक है। निर्वाण के इच्छुक को सदैव शरीर की नश्वरता का स्मरण रखना चाहिए।

(8) उचित समाधि या सम्यक समाधि– 'चित्त' की एकाग्रता की समाधि है। बौद्ध-दर्शन के अनुसार 'सम्यक् समाधि' द्वारा मन के विक्षेपों को त्यागा जा सकता है।

अष्टांगमार्ग में उपर्युक्त सोपानों को केवल तीन वर्गों के अंतर्गत रखा जा सकता है। ये हैं– प्रज्ञा, शील और पूर्ण समाधि।

13. सभी आस्तिक दर्शन किसी-न-किसी रूप में आत्मा या जीव की सत्ता स्वीकार करते हैं, किन्तु आत्मा या जीव के स्वरूप के बारे में मतभेद पाया जाता है। सांख्य और वेदांत आत्मा को नित्य और अविकारी मानते हैं। न्याय और वैशेषिक दर्शन भी आत्मा को एक और नित्य बताते हैं। बौद्ध-दर्शन ने आत्मा को 'क्षणिक परिवर्तनों का प्रवाह' कहा जाता है। जैन दर्शन न तो आत्मा को पूर्णतया नित्य मानता है और न पूर्णतया परिवर्तनशील ही। इसके अनुसार आत्मा अपने स्वरूप को कभी नहीं छोड़ने के कारण 'नित्य है' है और सदैव स्वरूप में नहीं रहने कारण 'परिवर्तनशील' भी है। यह आत्मा कर्त्ता, भोक्ता और ज्ञानी है। यह सूर्य की भाँति स्वयं प्रकाशयुक्त होते हुए दूसरों को भी प्रकाशित करती रहती है।

जीव या आत्मा स्थान घेरनेवाला वह द्रव्य है जिसमें प्राण या जीवन पाया जाता है। जैनों ने आत्मा और जीव को एक ही अर्थ में स्वीकार किया है। जीव का आवश्यक गुण चैतन्य है। चैतन्य सभी जीवों में पाया जाता है किन्तु किसी में विकसित अवस्था में रहता है, तो किसी में अविकसित अवस्था में

आत्मा या जीव की विशेषताएँ

(1) आत्मा का प्रधान लक्षण चैतन्य है। इसे अन्य वस्तुओं की चेतना तो रहती ही है, अपनी चेतना भी रहती है।

(2) आत्मा सदैव ज्ञाता है। इसे कभी ज्ञान का विषय नहीं बनाया जा सकता है।

(3) यह कर्त्ता है। अपने कर्मों द्वारा यह अपना भाग्यविधाता स्वयं है।

(4) यह भोक्ता है। अपने कर्मों का फल यही भोक्ता है।

(5) आत्मा का स्वरूप सदैव अपरिवर्तित होने के कारण इसे नित्य कहा जाता है और इसकी अवस्थाओं में परिवर्तन होते रहते के कारण इसे परिवर्तनशील भी कहा जाता है।

(6) जीव संख्या में एक नहीं, बल्कि अनेक है।

(7) आत्मा स्थान घेरती है। यह संपूर्ण शरीर में व्याप्त है। भौतिक पदार्थ जिस रूप से स्थान घेरते हैं, उस रूप में आत्मा स्थान नहीं घेरती। एक ही समय एक ही स्थान में एक से अधिक आत्माएँ रह सकती है।

(8) जैन दर्शन के अनुसार आत्मा का अपना कोई आकार नहीं होता। यह जिस शरीर में रहती है, उसी का आकार ले लेती है।

14. न्याय-दर्शन का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है। इसके लिए संपूर्ण जीवन, जगत एवं वातावरण सभी पदार्थों का सम्यक ज्ञान आवश्यक है। पदार्थ अनगिनत है। किन्तु, न्यायदर्शन में सोलह पदार्थों का वर्णन हुआ है। वे पदार्थ निम्नलिखित हैं-

(a) **प्रमाण**- जिस साधन से यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति हो, उसे 'प्रमाण' कहते हैं। प्रमाण पर अत्यधिक जोर देने के कारण ही न्याय दर्शन कभी-कभी प्रमाणशास्त्र भी कहा जाता है। न्यायदर्शन के प्रवर्तक गौतम ने चार प्रमाणों को स्वीकार किया है- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द। बाद में नैयायिकों ने दो और प्रमाणों की चर्चा की है- वे हैं- अर्थापति और अनुलब्धि।

(b) **प्रमेय**- प्रमाण के द्वारा जिस विषय का ज्ञान हो, उसे 'प्रमेय' कहते हैं। न्यायसूत में बारह प्रकार के प्रमेय बताए गए है।

(c) **संशय**- 'तर्कसंग्रह' के अनुसार जब किसी एक ही वस्तु के विषय में कई विरोधी विकल्प उठ खड़े हों और यह पता न चले कि इनमें कौन विकल्प सही है, तो इसे 'संशय' कहते हैं।

(d) **प्रयोजन**- जिस लक्ष्य के लिए कोई कार्य किया जाय, उसे ही प्रयोजन कहा जाता है।

(e) **दृष्टांत**- जिसे देखकर किसी बात का निर्णय कर लिया जाए, उसे 'दृष्टांत' कहते हैं।

(f) **सिद्धांत**- पूर्वस्थापित निर्णय को ही सिद्धांत कहा जाता है।

(g) **अवयव**- 'पंचावयव न्याय' में पाँच अवयव होते हैं- प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, अपनय और निगमन।

(h) **तर्क**- व्याप्त के आधार पर व्यापक को प्रमाणित करना ही 'तर्क' है।

(i) **निर्णय**- किसी विषय के संबंध में संशय उत्पन्न होने पर हम विषय के पक्ष या विपक्ष में दिए गए तर्कों पर विचार करने के बाद जिस निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, उसे ही 'निर्णय' कहते हैं।

(j) **वाद**- वाद एक प्रकार का विचार-विमर्श है जिसका लक्ष्य सत्य की परीक्षा एवं प्राप्ति है।

(k) **जल्प**- केवल जीत के लिए वाद-विवाद किया जाए, उसे 'जल्प' कहते हैं।

(l) **वितंडा**- अपना मुख्य लक्ष्य बनाकर वाद-विवाद में शरीक होना, वितंडा है।

(m) **हेत्वाभास**- अवास्तविक हेतु का वास्तविक हेतु जैसा दीख पड़ना।

(n) **छल**- प्रतिवादी के कथन का अर्थ बदलकर उसे परास्त करने का प्रयत्न छल है।

(o) **जाति**- असंगत उपमान के प्रयोग सारा अपनी बात सिद्ध करना ही 'जाति' है।

(p) **निग्रहस्थान**- 'पराजय' या तिरस्कार का स्थान। साधारणतः अज्ञान या असंगत ज्ञान के कारण यह दोष होता है।

15. शैक्षिक क्षेत्र में प्रथम शर्त्त अनुशासन है, क्योंकि स्वयं ही कुछ प्रेरित करके दूसरों को कुछ समझाया जा सकता है। अनुशासन ही मानव को भौतिक मूल्यों की सीमा में बाँधे रखते हैं। ये गुण बहुत सारे हैं, जिनमें ये प्रमुख हैं- ईमानदारी, कर्त्तव्यनिष्ठता, सत्यवादिता, विनम्रता, दयालुता, प्रेम आदि।

ये सभी मानव के आन्तरिक मूल्य है जिनका विकास अवश्यभावी है परन्तु यदि आज की परिस्थितियों पर दृष्टिपात करें तो हम पायेंगे कि आज के समय में इसका स्तर गिर गया है।

एक समय ऐसा था कि जब शिक्षक या गुरु या परमेश्वर का दर्जा दिया जाता था। शिक्षक को इतना महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था कि छात्र अपना विद्यार्थी जीवन उसी के सानिध्य में गुरुकुल पद्धति में रहकर गुजरते थे। गुरु भी छात्रों के केवल शिक्षा-दीक्षा की ही नहीं बल्कि रहन-सहन, खाने-पीने व उनके व्यक्तित्व के समग्र विकास का समुचित प्रबन्ध करते थे।

परंतु धीरे-धीरे सामाजिक व्यवस्था में अत्यन्त परिवर्तन आने प्रारंभ हो गेय। उपभोक्तावाद की श्रेणी में आज शिक्षण भी आ गया है। विद्यार्थी की सोच शिक्षा द्वारा ज्ञान प्राप्त करने की नहीं है, बल्कि पढ़-लिखकर कोई नौकरी ढूँढने में है। जीविकोपार्जन शिक्षा का एक उद्देश्य हो सकता है, परन्तु लक्ष्य नहीं।

शिक्षण को व्यवसाय ही मान लिया गया है। अध्यापक भी वेतन पाने की आकांक्षा से इस व्यवसाय की ओर भागते हैं। उन्हें जब वेतन कम मिलता है तो वे अनुचित साधनों के द्वारा धन कमाना चाहते हैं। इसके लिए सबसे प्रथम काम होता है कोचिंग द्वारा धन कमाना। अध्यापक विद्यालयों में छात्रों पर अनैतिक दबाव डालते हैं। वे छात्रों को धमकाते हैं कि यदि वे उनसे नहीं पढ़ेगे तो परीक्षा में फेल कर दिये जायेंगे। छात्रों को उत्तीर्ण करने के लिए पैसा लेना, उन्हें पेपर बताना आदि घटनाएँ तो जैसे दैनिक जीवन का अंग बन चुकी है।

क्या शिक्षा में परिवर्तन के लिए फिर कोई सुकरात, अरस्तु, वेदव्यास जैसे महापुरुष इस धरती पर जन्म लेंगे।

❑

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

PHILOSOPHY

Set-VIII

MODEL PAPER - VIII

कुल प्रश्नों की संख्या : 40 + 10 + 5 = 55

Total No. of Questions : 40 + 10 + 5 = 55

कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 24

Total No. 1 of Printed Pages : 24

PHILOSOPHY

A.-PHL. (OPT)

समय : 3 घंटे 15 मिनट] [पूर्णांक : 100

Time : 3 Hours 15 Minutes] [Marks : 100

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

Instructions to the candidate :

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

   Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.

2. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

   Figures in the right hand margin indicate full marks.

3. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ भाग संख्या, खण्ड संख्या और प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

   Write Section number, Group number and Question number with every answer.

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में दो भाग-भाग-I एवं भाग-II हैं। भाग-I में खण्ड-अ एवं भाग-II में खण्ड-ब एवं खण्ड-स हैं।

भाग-I : भाग-I के खण्ड-अ के प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रकार के हैं। इस खण्ड के प्रश्न संख्या 1 से 40 तक प्रत्येक 1 अंक का है।

भाग-II : भाग-II के सभी प्रश्न गैर-वस्तुनिष्ठ हैं। भाग-II के खण्ड-ब के प्रश्न लघु उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी 10 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है। भाग-II के खण्ड-स के प्रश्न दीर्घ उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी 5 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का है।

***Instructions* :**

This paper consists of two Sections - Section - I and II. Section - I consists of Group - A and Section - II consists of Group-B & Group - C.

***Section*-I :** Group A of Section - I are Objective Type Questions. In this group Question Nos. 1 to 40 carry 1 mark each.

***Section*-II :** All Questions of Section - II are Non-Objective Type. Group -B of Section-II are Short Answer Type questions. Answer all 10 questions. Each question carries 6 Marks. Group-C of Section-II are Long Answer Type Questions. Answer all 5 questions. Each question carries 6 marks.

Model Paper - VIII

भाग-I

Section - I

खण्ड–अ

Group - A

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(Objective Type Questions)

सभी 40 प्रश्नों के उत्तर दें। सही उत्तर का चयन करते हुए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दें:

40 × 1 = 40

Answer all the questions. Answer each questions by Selecting the correct answer

40 × 1 = 40

1. सांख्य दर्शन के प्रवर्तक हैं-

(a) गौतम (b) कपिल

(c) पतंजलि (d) रामानुज

The founder of Sankhya philosophy is-

(a) Gautam (b) Kapil

(c) Patanjali (d) Ramanuj

2. स्याद्वाद है-

(a) ज्ञान शास्त्रीय सिद्धान्त (b) तत्वशास्त्रीय सिद्धान्त

(c) दोनों (d) कोई नहीं

Syandvada is-

(a) An epistemological Theory (b) a metaphysical theory

(c) both a & b (d) None of these

3. बुद्ध के चतुर्थ आर्य सत्य को कहते हैं-

(a) दुःख समुदाय (b) दुःख है

(c) दुःख निरोध मार्ग (d) दुःख निरोध

The fourth Noble Truth of Buddha is called-

(a) Dukh Samudaya (b) Dukh

(c) Dukh Nirodh Marg (d) Dukh Nirodh

4. न्याय के अनुसार प्रत्यक्ष के लिए आवश्यक है-

(a) इन्द्रिय (b) विषय

(c) सन्निकर्ष (d) सभी

According Nyaya, it is essential for perception-

(a) Sense organ (b) Object

(c) Contact (d) All the above

5. प्रतीत्य समुत्पाद सिद्धान्त का आधार है-

(a) धार्म सिद्धान्त (b) नैतिक सिद्धान्त

(c) कारण-कार्य सिद्धान्त (d) इनमें से कोई नहीं

The basis of the Dependent Origination-

(a) Religious theory (b) Moral theory

(c) Causation theory (d) None of the above

6. स्याद्वाद सिद्धांत का संबंध है-

(a) जैन दर्शन (b) बौद्ध दर्शन

(c) दोनों (d) वेदान्त

The theory of Syadvada is related to-

(a) Jaina philosophy (b) Buddhist philosophy

(c) Both the above (d) Vedanta

7. **सत्ता अनुभवमूलक है, यह कथन है-**

(a) बर्कले (b) लॉक

(c) काण्ट (d) ह्यूम

'Reality is Experienced-based'-this statement relates to -

(a) Berkeley (b) Locke

(c) Kant (d) Hume

8. ऋत् की अवधारणा का वर्णन है-

(a) वेद में (b) उपनिषद में

(c) पुराण (d) इनमें से कोई नहीं

The concept of Rta is explained in-

(a) The Vedas (b) Upanishadas

(c) Purana (d) None of these

9. परम पुरुषार्थ है-

(a) काम (b) अर्थ

(c) धर्म (d) मोक्ष

Which is the highest Purusartha-

(a) Kama (b) Artha

(c) Dharma (d) Moksha

10. निष्काम कर्म का मूल सिद्धान्त है-

(a) सुख के लिए (b) कर्तव्य के लिए

(c) शुभ फल प्राप्ति के लिए (d) इनमें से कोई नहीं

The theory of Nishkaama Karma (non-attached actions) is -

(a) For pleasure (b) for duty sake

(c) to attain good results (d) None of these

11. 'मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ' कथन है-

(a) देकार्त (b) स्पिनोजा

(c) काण्ट (d) इनमें से कोई नहीं

'I think therefore I am', the statement belongs to-

(a) Descartes (b) Spinoza

(c) Kant (d) None of these

12. निम्न में से कौन नास्तिक है-

(a) न्याय दर्शन (b) सांख्य दर्शन

(c) चार्वाक (d) योग दर्शन

Who among the following is heterodox:-

(a) Nyaya Philosophy (b) Samkhya

(c) Charvak (d) Yoga

13. व्यापार नीतिशास्त्र अध्ययन है-

(a) मूल्यों का (b) आदर्शो का

(c) लाभ का (d) नैतिकता का

Professional Ehics is the study of:-

(a) Values (b) Ideals

(c) Profit (d) Morality

14. भौतिकवाद के अनुसार परम सत्ता है-

(a) वृक्ष (b) जड़

(c) चेतना (d) इनमें से कोई नहीं

According to Materialism, the Ultimate Reality is-

(a) Plants (b) Matter

(c) Consciousness (d) None of these

15. समीक्षात्मक किसका सिद्धान्त है ?

(a) काण्ट (b) लॉक

(c) बर्कले (d) इनमें से कोई नहीं

The founder of Criticism is-

(a) Kant (b) Locke

(c) Berkeley (d) None of these

16. जन्मजात प्रत्यय की सत्ता को स्वीकार करता है-

(a) देकार्त (b) लॉक

(c) बर्कले (d) इनमें से कोई नहीं

The existence of Innate Idea is accepted by:

(a) Descartes (b) Locke

(c) Berkeley (d) None of these

17. Cagito ergo sum किसने कहा ?

(a) देकार्त (b) काण्ट

(c) बर्कले (d) लॉक

Who said Cogito ergo sum?

(a) Descartes (b) Kant

(c) Berkeley (d) Locke

18. अष्टांग योग संबंधित है-

(a) भगवान बुद्ध (b) योग दर्शन

(c) वैशेषिक (d) इनमें से कोई नहीं

Eightfold Yog is related to:

(a) Lord Buddha (b) Yog Philosophy

(c) Vaisesika (d) None of these

19. नैतिक कर्म के लिए आवश्यक है-

(a) शुभ (b) उचित

(c) इच्छा स्वातंत्र्य (d) कर्म सम्पादन

Which of the following is essential for Moral Actions?

(a) Good (b) Right

(c) Freedom of Will (d) Performing actions

20. गीता का उपदेश है-

(a) सकाम कर्म (b) निष्काम कर्म

(c) कर्म में संन्यास (d) इनमें से कोई नहीं

The Preaching of the Gita is:

(a) Sakaam Karma (b) Nishkaam Karma

(c) Sanyas in Action (d) None of these

21. न्याय दर्शन के प्रणेता है-

(a) गौतम (b) कणाद

(c) जैमिन (d) कपिल

The founder of Nyay Philosophy:

(a) Gautam (b) Kanad

(c) Jaimini (d) Kapil

22. बुद्ध के अनुसार दुःख का मुख्य कारण है-

(a) तृष्णा (b) जाति

(c) नामरूप (d) अविद्या

The prime cause of suffering according to Buddha is:

(a) Trishna (b) Jati

(c) Naamroop (d) Avidya

23. ब्रह्म है-

(a) अनेक (b) अचेतन

(c) अनिर्वचनीय (d) इनमें से कोई नहीं

Brahm is:

(a) Many (b) Unconscious

(c) Anirvachniya (d) None of these

24. सामान्यतः हमारे आस-पास का सम्पूर्ण परिवेश कहलाता है-

(a) भौतिक (b) ऊर्जा

(c) पर्यावरण (d) इनमें से कोई नहीं

Our surroundings is generally called:

(a) Physical (b) Energy

(c) Environment (d) None of these

25. अंतःक्रियावाद किसका सिद्धांत है-

(a) देकार्त का (b) स्पिनोजा

(c) लॉक (d) इनमें से कोई नहीं

Interactionalism is a theory given by:

(a) Descates (b) Spinoza

(c) Locke (d) None of these

26. 'ज्ञान संश्लेषणात्मक अनुभव निरपेक्ष निर्णय है' सिद्धान्त संबंधित है-

(a) बुद्धिवादी (b) अनुभववादी

(c) समीक्षावादी (d) इनमें से कोई नहीं

'Knowledge is a synthetic judgment a priori' relates to:

(a) Rationalism (b) Empiricism

(c) Criticism (d) None of these

27. व्यापार व्यवसाय है-

(a) क्रूर (b) लाभोन्मुखी

(c) अनैतिक (d) इनमें से कोई नहीं

Profession is a business-

(a) Cruel (b) Profit-oriented

(c) Unethical (d) None of these

28. निम्नलिखित में से कौन-सा दर्शन बौद्धिक है-

(a) भारतीय दर्शन (b) पश्चिमी दर्शन

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Which of the following is rational?

(a) Indian Philosophy (b) Western Philosophy

(c) Both a & b (d) None of these

29. धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष किसके प्रकार हैं-

(a) कर्म (b) पुरुषार्थ

(c) आश्रम (d) वर्ण

Dharma, Artha, Kaam and Moksha are types of:-

(a) Karma (b) Purushartha

(c) Ashram (d) Varna

30. ऋत् का स्वामी है-

(a) वरुण (b) इन्द्र

(c) अग्नि (d) ये सभी

The guardian of Rta:

(a) Varuna (b) Indra

(c) Fira (d) All of these

31. आत्मा की सत्यता कौन सी है ?

(a) व्यावहारिक (b) पारमार्थिक

(c) प्रातिभाषिक (d) इनमें से कोई नहीं

Truth of Soul is

(a) Vyavharika (b) Paarmarthika

(c) Pratibhashika (d) None of these

32. निम्नलिखित में से अनुभववादी तर्कशास्त्री कौन हैं-

(a) लॉक (b) बर्कले

(c) ह्यूम (d) ये सभी

Who amog the following is an Empirisist Logician?

(a) Locke (b) Berkeley

(c) Hume (d) All of these

33. अनासक्ति योग नामक ग्रन्थ की रचना किसने की ?

(a) तिलक (b) महात्मा गाँधी

(c) डॉ. राधाकृषणन (d) इनमें से कोई नहीं

'Anasakti Yoga' is written by

(a) Tilak (b) Mahatma Gandhi

(c) Dr.Radhakrishnan (d) None of these

34. इनमें से कौन अभाव पदार्थ नहीं है-

(a) प्रागाभाव (b) ध्वंसाभाव

(c) अन्योन्याभाव (d) समवाय

Which of the following is not Abhaav?

(a) Pragabhava (b) Dhwansabhaava

(c) anyonyabhaava (d) Samvaya

35. कर्म सिद्धान्त कारणतावाद है-

(a) नैतिक (c) प्राकृतिक

(c) तार्किक (d) इनमें से कोई नहीं

Karma Theory is

(a) Moral (b) Natural

(c) Logical (d) None of these

36. त्रिपिटक किस दर्शन से संबंधित है-

(a) जैन (b) बौद्ध

(c) न्याय (d) इनमें से कोई नहीं

Tripitak is concerned with

(a) Jaina (b) Bauddha

(c) Nyaya (d) None of these

37. अनुमान के लिए व्याप्ति आवश्यक है-

(a) नहीं (b) हाँ

(c) संशयपूर्ण (d) इनमें से कोई नहीं

Vyapti for Anumana (Inference) is essential

(a) No (b) Yes

(c) Dubious (d) None of these

38. किस ज्ञान द्वारा वस्तु के अनन्त धर्मों का ज्ञान प्राप्त होता है-

(a) केवल्य ज्ञान (b) मन: पर्याय ज्ञान

(c) मति ज्ञान (d) इनमें से कोई नहीं

Infinite Attributes of objects are known through

(a) Kevalya Jnan (b) Manah Paryaya Jnan

(c) Mati Jnan (d) None of these

39. ऋत का अर्थ है-

(a) प्राकृतिक व्यवस्था (c) न्यायिक व्यवस्था

(c) नैतिक व्यवस्था (d) इनमें से कोई नहीं

The meaning of Rta is

(a) Natural System (b) Judicial System

(c) Moral system (d) None of these

40. सात्विक अहंकार में किस गुण की प्रधानता रहती है ?

(a) सत्व गुण (b) तमो गुण

(c) रजो गुण (d) इनमें से कोई नहीं

Which attribute prevails in Satvik Ahankar?

(a) Satva Guna (b) Tamo Guna

(c) Rajo guna (d) None of these

भाग–II

Section-II

(गैर वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

(Non-Objective Type Questions)

Group-B

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

(Short Answer Type Questions)

सभी प्रश्नों के उत्तर दें : **10 × 3 = 30**

Answer All Questions : **10 × 3 = 30**

1. धर्म शब्द 'धृ' धातु से बना है। इसका क्या अर्थ होता है। व्यापक रुप में धर्म का क्या अर्थ है?
   The term dharma is originated from the root verb 'dhr'. What does it mean? What is the wider meaning of dharm ?
2. चार आश्रमों के नाम बताइए। किस आश्रम में पाँच प्रकार के यज्ञ कर्म किये जाते हैं ?
   Name four Asramas. In which asram five types of Yanja Karma are performed?
3. जैन दर्शन के सम्यक् ज्ञान का क्या अर्थ है ?
   What is the the meaning of Samayak Jnan is Jaina Philosophy ?
4. व्याप्ति का ज्ञान किससे होता है ? व्याप्ति ज्ञान की प्राप्ति तिने विधयों से होती है?
   From which the knowledge of Vyapti is gained? From how many methods the knowledge of Vyapti is gained ?
5. आप्तपुरुष से आप क्या समझते हैं ? न्यायसूत्र में शब्द की क्या परिभाषा दी गई है?
   What do you mean by Aapt Purusha ? What definition of Sabda has been given in Nyayasutra ?
6. ज्ञान क्या है ? लॉक ने मन को क्या कहा है ?
   What is knowledge? What has Locke said about mind?
7. कारण–कार्य संबंध में नियमितता सिद्धांत से आप क्या समझते हैं ?
   What do you mean by the Theory of Regularity in cause-effect relationship?
8. ईश्वर की अवधारणा की चर्चा करें।
   Explain briefly the concept of God.
9. शिक्षण में उपभोक्तावादी दृष्टि का क्या प्रभाव पड़ रहा है? संक्षेप में बतायें।

Briefly sketch the impact of consumerist viewpoint into our education system.

10. नकदी रहित अर्थव्यवस्था के नीति शास्त्रीय आधारों की चर्चा करें।
    Briefly explain the ethical foundations of Cashless Economy.

खण्ड-स

Group - C

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

(Long Answer Type Questions)

11. मन देकार्त के एवं शरीर के संबंध की समस्या क्या है ? स्पष्ट कीजिए।
    What is the problem of Descartes' Mind and Body ? Explain.
12. प्रयोजनवादी तर्क की निबंधात्मक व्याख्या कीजिए।
    Describe in detail the teleological argument ?
13. आत्मा का स्वरूप क्या है ? इसके अस्तित्व को सिद्ध करने संबंधी प्रमाणों की चर्चा कीजिए।
    What is the nature of Atman ? Discuss the proofs related with the existence.
14. विशेष क्या है ? इसकी अवधारणा एवं स्वरूप पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालिए।
    What is Vishesa ? Discuss its concept and nature.
15. व्यवसायिक नीतिशास्त्र क्या है ?
    What is professional ethics ?

- ANSWER -

1. (b)	2. (a)	3. (c)	4. (d)	5. (c)	6. (c)
7. (a)	8. (a)	9. (d)	10. (c)	11. (a)	12. (c)
13. (a)	14. (b)	15. (a)	16. (a)	17. (a)	18.(b)
19. (c)	20. (b)	21. (a)	22. (d)	23. (c)	24. (c)
25. (a)	26. (c)	27. (b)	28. (b)	29. (b)	30. (a)
31. (b)	32. (d)	33. (c)	34. (d)	35. (a)	36. (b)
37. (a)	38. (c)	39. (a)	40. (a)		

- ANSWER -

1. धर्म शब्द 'धृ' धातु से बना है। इसका अर्थ है 'धारण करना।' धर्म का व्यापक अर्थ कर्तव्य है।
2. चार आश्रमों के नाम इस प्रकार हैं- ब्रह्मचर्य आश्रम, गार्हस्थ आश्रम, वानप्रस्थ तथा संन्यास आश्रम। गार्हस्थ आश्रम में पाँच प्रकार के यज्ञ कर्म किये जाते हैं।
3. जैन दर्शन में सम्यक् ज्ञान उसे कहते हैं जिसके द्वारा जीव और अजीव के मूल तत्वों का पूर्ण ज्ञान होता है। यह ज्ञान दोषरहित होता है।
4. व्याप्ति का ज्ञान अनुमान से होता है। व्याप्ति का ज्ञान दो प्रकार- अन्वय विधि और व्यतिरेक विधि से होता है।
5. विश्वसनीय व्यक्ति को आप्त पुरुष कहते हैं। न्याय सूत्र के अनुसार आप्त पुरुष के वचन को शब्द कहते है- आप्तोदेशः शब्दः।
6. ज्ञान एक मानसिक प्रक्रिया है। लॉक ने मन को टैबुला रशा यानी खाली स्लेट कहा है।
7. नियमितता सिद्धांत के अनुसार कारण कार्य में नियमितता का संबंध रहता है। इसका तात्पर्य यह है कि जब-जब कारण उपस्थित होता है, जब-जब कार्य भी उपस्थित होता है। जैसे- जब-जब आसमान में काले बादल दिखायी देंगे, तब-तब वर्षा होगी।
8. विश्व की समस्त वस्तुओं का निर्माण स्वरूप तथा द्रव्य के संयोग से हुआ है। संसार के विकास के लिए गति अनिवार्य है। इस गति का प्रवर्तक ईश्वर है।
9. उपभोक्तावाद की दृष्टि में आज शिक्षण भी आ गया है। विद्यार्थी की सोच शिक्षा द्वारा ज्ञान प्राप्त करने की नहीं है; बल्कि पढ़-लिख कर नौकरी ढूँढ़ने की है। जीविकोपार्जन शिक्षा का एक उद्देश्य हो सकता है, परन्तु लक्ष्य नहीं।
10. कैशलेस अर्थव्यवस्था के नीतिशास्त्रीय आधार निम्नवत् है- सहमति, सच्चाई, ईमानदारी, लाभ और सुरक्षा।

11. देकार्त द्वैतवादी विचारक माने जाते हैं क्योंकि इन्होंने कई क्षेत्रों में द्वैत स्वीकार किया है। देकार्त के अनुसार पदार्थ दो प्रकार के हैं- सापेक्ष और निरपेक्ष। पदार्थ सदा आत्म निर्भर, स्वयंभू, स्वतंत्र तथा निरपेक्ष होता है। निरपेक्ष पदार्थ एक है जो ईश्वर है। निरपेक्ष पदार्थ अपने अर्थ को स्पष्ट करने के लिए सापेक्ष पदार्थ की अपेक्षा रखता है। इस तरह देकार्त ने निरपेक्ष और सापेक्ष पदार्थों का द्वैत माना।

    सापेक्ष पदार्थ भी दो हैं- आत्मा और शरीर। आत्मा का गुण चेतना तथा शरीर का गुण विस्तार है। चेतना और विस्तार परस्पर विरोधी है। चेतना देश-काल में नहीं है, परन्तु विस्तार देश-काल घेरता है। दोनों इतने विरोधी हैं कि चेतना अपनी व्याख्या के लिए विस्तार की अपेक्षा नहीं रखती। उसी प्रकार विस्तार को भी चेतना की अपेक्षा नहीं है।

    आत्मा और शरीर का द्वैत का सबसे सुंदर उदाहरण मनुष्य है। आत्मा और शरीर का यह कृत्रिम संबंध हमारे अनुभव की बात है। देकार्त शरीर और आत्मा में क्रिया-प्रतिक्रिया का संबंध मानते हैं। सर्वप्रथम वस्तु के साथ हमारी इन्द्रियों का संबंध होता है। ये सबंध से हमारी इन्द्रियों में संवेदनाएँ उत्पन्न होती है। ये संवेदनायें हमारी स्नयुओं से होते हुए जीवंतधारा को गतिशील करती है। यह जीवंतधारा हमारे मस्तिष्क के केन्द्र में स्थित मस्तिष्क रंध्र या पीनियल ग्रंथि में पहुँचती है। मस्तिष्क रंध्र आत्मा को किसी-न-किसी प्रकार से छूती है और तब वस्तु की चेतना आत्मा को होती है। वस्तु को ही प्रत्यक्षीकरण कहा जाता है। प्रत्यक्षीकरण के बाद हमारी शारीरिक क्रियाएँ वातावरण से अभियोजन कर लेती है। भौतिक शारीरिक क्रियाएँ वातावरण संबंध प्राय: इसी तरह से होता है।

12. सन्त थामस एक्वायनस के अनुसार ईश्वर शुद्ध रूप अथवा यथार्थता है। उसे आत्मा से जाना जा सकता है। यद्यपि उसका प्रत्यक्ष और प्रमाणित ज्ञन संभव नहीं है किन्तु फिर भी हम जगत् के कुछ तथ्यों से उसके अस्तित्व अन्सलेम के ईश्वर विषय तर्क का खण्डन करते हुए ईश्वर की सत्ता के पक्ष में अपनी ओर से निम्नलिखित चार तर्क दिये हैं-

    (1) मूल चालक से तर्क

    (2) प्रथम कारण से तर्क

    (3) पूर्णता से तर्क

    (4) प्रयोजनवादी तर्क

    इस दुनिया में प्रत्येक वस्तु कुछ प्राप्त करने के लिये प्रयास कर रही है जो अनभिव्यक्त है वह अभिव्यक्त होने का प्रयास करता है। अर्थात् जगत् का एक प्रयोजन होना चाहिये। यह प्रयोजन जगत् के अंदर नहीं हो सकता। इस प्रकार ईश्वर है।

    यह तर्क देने के बाद संत थामस इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि ईश्वर ने शून्य से इस जगत् की रचना की है। अपने रूप और पदार्थ दोनों ही उत्पन्न किये हैं क्योंकि यदि वह केवल रूप उत्पन्न करता और पदार्थ नहीं तो उसके सामान्तर कोई दूसरा तत्व हो जाता जो कि पदार्थ के जन्म का कारण माना जाता है और इस प्रकार वह सर्व शक्तिशाली नहीं कहा जा सकता था परंतु जहाँ तक इन प्रश्नों की बात है कि बोध पर निर्भर होते हैं। बोध से ही हमें यह पता चलता है कि जगत शाश्वत नहीं है और वह काल में उत्पन्न हुआ है और ईश्वर की रचना शाश्वत है। इन सत्यों को विवेक से प्रमाणित नहीं किया जा सकता और न इनकी

दार्शनिक जाँच की जा सकती है। यह तर्क के क्षेत्र के परे हैं। यद्यपि उसके विरुद्ध नहीं है। इन सत्यों को बोध के आधार पर मान्यता दी जानी चाहिए।

13. शंकर अद्वैतवाद के प्रवर्त्तक है। इनके अनुसार परमसत्ता एक ही है। इसे ब्रह्म या आत्मा कहते हैं। वेदांत दर्शन में आत्मा का अध्ययन स्वतंत्र रूप से किया गया है, क्योंकि हम साधारणत: अपनी आत्मा को ब्रह्म से पृथक सत्ता मान लेते हैं। वास्तव में, ब्रह्म और आत्मा दोनों एक ही है। शंकर आत्मा को स्वयंसिद्ध मानते हैं। इसे सिद्ध करने के लिए तर्क की आवश्यकता नहीं पड़ती। जब कोई कहता है, 'मैं हू' या 'मैं नहीं है' तब दोनों ही कथनों से आत्मा का अस्तित्व प्रकट होता है। इन कथनों पर कोई संदेह नहीं कर सकता है, क्योंकि संदेह करने के लिए भी 'कर्त्ता' की आवश्यकता पड़ती है और यह कर्त्ता 'मैं' या 'आत्मा' है। इस प्रकार, आत्मा की सत्ता निर्विवाद रूप से सत्य है।

अज्ञान के कारण व्यक्ति इन दोनों में अंतर पाता है। जिस प्रकार अज्ञानी विश्व को वास्तविक सत्ता मान लेता है, उसी प्रकार तत्व ज्ञान के अभाव में व्यक्ति आत्मा को ब्रह्म से भिन्न मान लेता है। तत्वज्ञानी आत्मा और ब्रह्म में कोई भिन्नता नहीं पाते।

साधारणत: व्यक्ति अज्ञान के वशीभूत होकर आत्मा को शरीर या इंद्रिय समझने की भूल कर बैठता है। वह अक्सर कहा करता है- 'मैं मोटा हूँ', इत्यादि। ये कथन आत्मा को शरीर बताते हैं। व्यावहारिक दृष्टिकोण से केवल इतना ही कहा जा सकता है कि आत्मा शरीर युक्त है आर इस शरीर में इंद्रियाँ रहती है।

शंकर सांख्य की भाँति दो प्रकार का शरीर मानते हैं- (a) स्थूल शरीर, और (b) सूक्ष्म शरीर। स्थूल शरीर मृत्यु के साथ ही नष्ट हो जाता है, किन्तु सूक्ष्म शरीर मृत्यु के बाद भी आत्मा के साथ कायम रहता है।

आत्मा और ब्रह्म दोनों एक ही है। ब्रह्म 'सच्चिदानंद' है, इसलिए आत्मा भी सच्चिदानंद है। 'सच्चिदानंद' तीन शब्द खंडों से बना है- सत्, चित् और आनंद। ब्रह्म सत्ता, चेतना एवं आनंद से युक्त है। शंकर का आत्मा संबंधी यह विचार अन्य सभी भारतीय विचारधाराओं से अधिक पूर्ण दीख पड़ता है।

14. वैशेषिक दर्शन में 'विशेष' को विशिष्ट अर्थ में लिया गया है। इसके अनुसार 'नित्य तथा निरवयव द्रव्यों के विशिष्ट व्यक्तित्व, जिसके कारण वे पहचाने जाते हैं, को 'विशेष' कहा जाता है। इस प्रकार के नित्य एवं निरवयव द्रव्य ये हैं- दिक्, काल, आकाश, आत्मा, मन और चार भूतों (पृथ्वी, पानी, पवन एवं अग्नि) के परमाणु। विशिष के आधार पर ही एक आत्मा दूसरी आत्मा से भिन्न जान पड़ती है। 'विशेष नित्य पदार्थों की विशेषता है।'

कणाद ने 'विशेष' को विशिष्ट अर्थ में रखते हुए इसका क्षेत्र केवल नित्य एवं निरवयव द्रव्यों तक ही सीमित रखा है। इससे केवल इन्हीं द्रव्यों की पहचान एवं इनमें परस्पर भेद समझा जा सकता है। नित्य निरवयव होते हैं। इनका विश्लेषण अवयवों में नहीं हो सकता, इसलिए इनके पारस्परिक भेद में समझने के लिए कणाद ने 'विशेष' का सहारा लिया है।

वैशेषिकदर्शन के अनुसार, 'विशेष' सभी नित्य द्रव्यों में नहीं रहता। यह केवल उसी नित्य द्रव्य में रहता है, जहाँ इस प्रकार के अनेक द्रव्य होते हैं। 'विशेष' उस नित्य द्रव्य में नहीं रह सकता, जो अपने प्रकार का अकेला है। जैसे- 'आकाश' एक नित्य द्रव्य है किन्तु उसका गुण 'शब्द' केवल आकाश का ही गुण है, न कि किसी अन्य द्रव्य का। इसीलिए, इसी गुण के कारण यह अन्य द्रव्यों से भिन्न समझ लिया जाता है। यहाँ 'विशेष' की आवश्यकता नहीं पड़ती। इसलिए आकाश में विशेष नहीं पाया जाता।

विशेष नित्य है, क्योंकि यह नित्य द्रव्यों की विशेषता है। विशेष जिन नित्य द्रव्यों में पाया जाता है, उसकी संख्या अनेक हैं।

वैशेषिक दर्शन में 'विशेष' को निम्नलिखित कारणों से स्वतंत्र पदार्थ माना गया है-

(a) 'विशेष' एक वास्तविक पदार्थ है। वास्तविक होने पर इसे स्वतंत्र पदार्थ मानना स्वाभाविक है।

(b) 'विशेष' अन्य सभी पदार्थों से सर्वथा भिन्न है। यह न तो द्रव्य है, न कर्म है, न सामान्य है, न समवाय। इसे अन्य किसी भी पदार्थ में अंतर्भूत नहीं किया जा सकता। इस कारण भी 'विशेष' को एक स्वतंत्र पदार्थ कहा गया है। 'विशेष' को अत्यधिक महत्वपूर्ण मानने के कारण ही इस दर्शन को 'वैशेषिक दर्शन' कहा जाता है।

15. मानव को जन्म तो मिल गया, लेकिन जीवन-यापन के लिये अर्थ की आवश्यकता होती है। सबसे प्रथम आवश्यकता तो भोजन की ही होती है। यह भोजन बिना रुपये पैसे की व्यवस्था किये बिना तो संभव नहीं है। मानव जीवन की तीन मूलभूत आवश्यकताएँ हैं- रोटी, कपड़ा, मकान। इन तीनों ही मूलभूत आवश्यकताओं के लिए धन की आवश्यकता है। यह धन की आवश्यकता कुछ-न-कुछ व्यवसाय करके ही पूरी हो सकती है। व्यवसाय की भी कई श्रेणियाँ हैं- सरकारी व्यवसाय तथा व्यक्तिगत व्यवसाय।

धीरे-धीरे सभ्यता के विकास के साथ-साथ जनता की माँग बढ़ी जिस कारण नये-नये व्यवसायों ने जन्म लिया। ये व्यवसाय विभिन्न कार्यकुशलताएँ, लिए हुए लोगों की माँग करने लगे। ये माँगे विभिन्न नये-नये व्यावसायिक पाठ्यक्रमों द्वारा पूरा की जाने लगी।

धर्म का पालन करते हुए अर्थ अर्थात् धन कमाना, यह शर्त भारतीय दर्शन में लगा दी गई ताकि यदि कोई व्यक्ति अनैतिक रूप से अर्थ कमाता है तो वह धर्म नहीं है।

जैन धर्म में तो बारह महासिद्धांतों के अंतर्गत कहा गया है कि गलत नाप-तौल का व्यापार में सहारा न लें। प्रत्येक कार्य-व्यापार में कुछ नैतिक मूल्य भी पाये जाते हैं। ये नैतिक मूल्य मानव को उसकी सीमा से बाहर नहीं जान देते परंतु यदि आज के समय पर दृष्टिपात करें तो हम पायेंगे कि आज किसी भी विषय में नैतिक मूल्य नहीं रह गया है। बेईमानी, चोरी, फरेब, झूठ तो जैसे लक्ष्य की तरह से बन गये हैं। मानव को इस बात का डर ही नहीं है कि उसका कोई भी अनैतिक कृत्य उसे पतन के मार्ग पर ले जायेगा। हर व्यवसाय में मानो जैसे कि विशेष रूप से बेईमानी करने के विशेष मार्ग हैं- बेईमान के विशेष रूप है।

❑

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

PHILOSOPHY

Set-IX

MODEL PAPER - IX

कुल प्रश्नों की संख्या : ४० + १० + ५ = ५५

Total No. of Questions : 40 + 10 + 5 = 55

कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : २४

Total No. 1 of Printed Pages : 24

PHILOSOPHY

A.-PHL. (OPT)

समय : ३ घंटे १५ मिनट] [पूर्णांक : १००

Time : 3 Hours 15 Minutes] [Marks : 100

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

Instructions to the candidate :

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

   Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.
2. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

   Figures in the right hand margin indicate full marks.
3. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ भाग संख्या, खण्ड संख्या और प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

   Write Section number, Group number and Question number with every answer.

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में दो भाग-भाग-I एवं भाग-II हैं। भाग-I में खण्ड-अ एवं भाग-II में खण्ड-ब एवं खण्ड-स हैं।

भाग-I : भाग-I के खण्ड-अ के प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रकार के हैं। इस खण्ड के प्रश्न संख्या १ से ४० तक प्रत्येक १ अंक का है।

भाग-II : भाग-II के सभी प्रश्न गैर-वस्तुनिष्ठ हैं। भाग- II के खण्ड-ब के प्रश्न लघु उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी १० प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न ३ अंक का है। भाग- II के खण्ड-स के प्रश्न दीर्घ उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी ५ प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न ६ अंक का है।

***Instructions* :**

This paper consists of two Sections - Section - I and II. Section - I consists of Group - A and Section - II consists of Group-B & Group - C.

***Section*-I :** Group A of Section - I are Objective Type Questions. In this group Question Nos. 1 to 40 carry 1 mark each.

***Section*-II :** All Questions of Section - II are Non-Objective Type. Group -B of Section-II are Short Answer Type questions. Answer all 10 questions. Each question carries 3 marks. Group-C of Section-II are Long Answer Type Questions. Answer all 5 questions. Each question carries 6 marks.

Model Paper - IX

भाग-I

Section - I

खण्ड–अ

Group - A

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(Objective Type Questions)

सभी 40 प्रश्नों के उत्तर दें। सही उत्तर का चयन करते हुए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दें:

40 × 1 = 40

Answer all the questions. Answer each question by Selecting the correct answer

40 × 1 = 40

1. सेश्वर सांख्य कौन हैं ?

(a) जैन (b) बौद्ध

(c) योग (d) सांख्य

Which among the following is called Seshwar samkhya?

(a) j (b) j

(c) j (d) j

2. घोर नास्तिक कौन हैं ?

(a) चार्वाक (b) बौद्ध

(c) जैन (d) इनमें से कोई नहीं

Which of the following is called Head of the Heterodox School?

(a) Charvak (b) Bauddha

(c) Jaina (d) None of these

3. निम्न में से आस्तिक कौन हैं ?

(a) जैन (b) बौद्ध

(c) वेदान्त (d) इनमें से कोई नहीं

Which of the following is Orthodox?

(a) Jaina (b) Bauddha

(c) Vedanta (d) none of these

4. चार्वाक कितने प्रमाण को मानता है?

(a) दो (b) एक

(c) तीन (d) इनमें से कोई नहीं

How many Pramanas are accepted by Charvak?

(a) Two (b) One

(c) Three (d) None of these

5. निम्न में आस्तिक कौन हैं ?

(a) सांख्य (b) योग

(c) मीमांसा (d) जैन

Which of the following is Orthodox?

(a) Samkhya (b) Yoga

(c) Mimansa (d) Jaina

6. किस दर्शन में पुरुष और प्रकृति का वर्णन हैं-

(a) न्याय (b) सांख्य

(c) जैन (d) मीमांसा

Which philosophy deals with Purush and Prakriti?

(a) Nyaya (b) Samkhya

(c) Jaina (d) Mimansa

7. निम्न में से कौन बुद्धिवादी है ?

(a) लॉक (b) बर्कले

(c) देकार्त (d) इनमें से कोई नहीं

Which of the following is Rationalist?

(a) Locke (b) Berkeley

(c) Descartes (d) None of these

8. निम्न में से कौन अनुभववादी है ?

(a) देकार्त (b) स्पिनोजा

(c) लॉक (d) इनमें से कोई नहीं

Which of the following is an Empiricist?

(a) Descartes (b) Spinoza

(c) Locke (d) None of these

9. जैन नीतिशास्त्र में ब्रह्मचर्य का अर्थ है-

(a) ऐन्द्रिय एषणा का त्याग (b) स्वाहितवादी एषणा का त्याग

(c) मनः एषणा का त्याग (d) समस्त एषणाओं का त्याग

Celebacy in the Jaina Ethics means-

(a) Renouncing one's sensual desires (b) Renouncing one's desire

(c) Renouncing one's inwardly desires (d) Renouncing all the desires

10. जैन मत में कर्म पुद्गलों का जीवों की ओर बहना क्या कहलाता है ?

(a) आश्रव (b) बन्धन

(c) संवर (d) निर्जरा

The flow of Karma Pudgal to jivas in Jaina Philosophy is called-

(a) Aashrawa (b) bondage

(c) Sanwar (d) Nirjara

11. जैन दर्शन में प्रमाद का अर्थ है-

(a) अहंकार (b) उचित अनुचित में भेद का अभाव

(c) अपराध (d) मोह

The meaning of Pramaad in Jaina Philosophy is:

(a) Ahankar

(b) Absence of discretion between Right and Wrong

(c) Crime

(d) Lust or Moha

12. जीवात्मा और परमात्मा रूप है

(a) ब्रह्म के

(b) ईश्वर के

(c) आत्मा के

(d) इनमें से कोई नहीं

Jivatma and Parmatma are forms of

(a) Brahma

(b) God

(c) Aatma

(d) None of these

13. योग का प्रमुख तत्व क्या है ?

(a) ईश्वर

(b) चित्त

(c) मनस

(d) समाधि

The main element in Yoga is

(a) Ishwar

(b) Chitta

(c) Manas

(d) Samadhi

14. अधिकार एवं कर्तव्य-

(a) सापेक्ष है

(b) निरपेक्ष है

(c) दोनों

(d) इनमें से कोई नहीं

Rights and Duties are-

(a) relative

(b) absolute

(c) both a and b

(d) none of these

15. प्रकृति में कौन गुण पाये जाते हैं ?

(a) सात्विक

(b) रजस्

(c) तमस्

(d) ये सभी

Which attribute is found in Prakriti?

(a) Saatvika (b) Rajas

(c) Tamasa (d) All of these

16. अनुभववादी कौन है ?

(a) देकार्त (b) स्पिनोजा

(c) लॉक (d) इनमें से कोई नहीं

Who among the following is an Empirisist Philosopher?

(a) Descartes (b) Spinoza

(c) Locke (d) None of these

17. कौन आस्तिक दर्शन है ?

(a) जैन (b) वेदान्त

(c) बौद्ध (d) इनमें से कोई नहीं

Who among the following is an Orthodox Philosophy?

(a) Jaina (b) Vedanta

(c) Bauddha (d) None of these

18. इनमें से कौन बुद्धिवादी है ?

(a) लॉक (b) बर्कले

(c) देकार्त (d) इनमें से कोई नहीं

Who among the following is a Rationalist Philosopher?

(a) Locke (b) Berkeley

(c) Descartes (d) None of these

19. दर्शन शब्द की उत्पत्ति निम्न में से किस धातु से हुई है ?

(a) कृ धातु से (b) दृश् धातु से

(ब) लृ धातु से (d) इनमें से कोई नहीं

The term *darshan* is originated from the root verb:-

(a) Kri (b) drish

(c) Lri (d) None of these

20. सर्वोच्च शुभ किसे कहा जाता है?

(a) सापेक्ष शुभ को (b) निरपेक्ष शुभ को

(c) सापेक्ष और निरपेक्ष शुभ को (d) इनमें से कोई नहीं

The Highest Good is:-

(a) Relative Good (b) Categorical Good

(c) Both a & b (d) None of these

21. निम्नलिखित में कौन दण्ड के सिद्धान्त हैं ?

(a) निरोधात्मक (b) सुधार का सिद्धान्त

(c) प्रतिकारात्मक सिद्धान्त (d) ये सभी

Which of the following is a theory of Punishment?

(a) Deterrent Theory (b) Reformative Theory

(c) Retributive Theory (d) All of these

22. 'ऐसे ईस्ट परसिपी' किसका सिद्धान्त है?

(a) लॉक (b) बर्कले

(c) देकार्त (d) इनमें से कोई नहीं

Who gave the theory *esse est percipi*

(a) Locke (b) Berkeley

(c) Descartes (d) None of these

23. ब्रह्मसूत्र की रचना किसने की

(a) वादरायण (b) शंकर

(c) गौतम (d) इनमें से कोई नहीं

Brahmsutra is authored by

(a) Vadrayan (b) Sankar

(c) Gautam (d) None of these

24. अनुभववाद के समर्थक हैं-

(a) लॉक (b) बर्कले

(c) ह्यूम (d) इनमें से सभी

Who among the following supports Empiricism?

(a) Locke (b) Berkeley

(c) Hume (d) All of these

25. किसके अनुसार 'गीता माता' है-

(a) बाल गंगाधर तिलक (b) विनोबा भावे

(c) श्री अरविन्दो (d) महात्मा गाँधी

Who asserts the Gita as mother?

(a) Bal Gangadhar Tilak (b) Binoba Bhave

(c) Sri Aurobindo (d) mahatma Gandhi

26. अनेकान्तवाद की आधारशिला है-

(a) नयवाद (b) स्याद्वाद

(c) मोक्षवाद (d) पुद्गलवाद

The foundation of Anekantvaad is:

(a) Nayavaad (b) Syadvaad
(c) Mokshavaad (d) Pudgalvaad

27. जैन दर्शन के २४वें तीर्थंकर कौन हैं-

(a) महावीर (b) ऋषभदेव
(c) पार्श्वनाथ (d) इनमें से कोई नहीं

Who is the 24th Tirthankar in the Jaina School?

(a) Mahavir (b) Rishabhdev
(c) Parshwanath (d) None of these

28. प्रतीत्यसमुत्वाद किसका सिद्धान्त है-

(a) वेदान्त (b) बौद्ध
(c) जैन (d) मीमांसा

The Theory of Dependent Origination belongs to:-

(a) Vedanta (b) Buddhism
(c) Jainism (d) Mimansa

29. लोक संग्रह का सिद्धान्त है-

(a) सुखवाद (b) सर्व कल्याणवाद
(c) पूर्णतावाद (c) ये सभी

The Theory of Lok Sangraha is-

(a) Hedonism (b) Theory for All Welfare
(c) Perfectionism (d) All the above

30. बुद्ध के अनुसार कितने आर्य सत्य हैं-

(a) दो (b) चार
(c) तीन (d) इनमें से कोई नहीं

The number of The Noble Truths according to Buddha is:

(a) Two (b) Four
(c) Three (d) none of these

31. अरस्तु के अनुसार कारण है-

(a) उपादान (b) आकारिक
(c) अन्तिम (d) इनमें से सभी

Cause, according to Aristotle is-

(a) Material (b) Formal
(c) Final (d) All of these

32. निम्न में कौन पुरुषार्थ नहीं है-

(a) अर्थ (b) काम
(c) धर्म (d) ईश्वर

Which of following is not Purushartha?

(a) Artha (b) Kaam

(c) Dharma (d) God

33. प्रथम आर्य सत्य है-

(a) दुःख है (b) दुःख का कारण

(c) आनन्द (d) इनमें से कोई नहीं

The first Noble Truth is-

(a) There is sufferin (b) There is cause to suffering

(c) There is pleasure (d) None of these

34. पूर्व स्थापित सामंजस्यवाद किसके द्वारा दिया है-

(a) देकार्त (b) स्पिनोजा

(c) लाइबनीज (d) इनमें से कोई नहीं

The theory of Pre-Eshtablished Harmony is given by-

(a) Descartes (b) Spinoza

(c) Leibnitz (d) None of these

35. जैन मत के अनुसर त्रिरत्न हैं :

(a) सम्यक् दर्शन (b) सम्यक् चरित्र

(c) सम्यक् ज्ञान (d) उपरोक्त सभी

Triratnas according to the Jainas, are-

(a) Right vision (b) Right conduct

(c) Right knowledge (d) All the these

36. स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य हैं-

(a) आत्मा (b) ईश्वर

(c) जड़ तत्व (d) इनमें से कोई नहीं

According to Spinoza, substance is -

(a) Soul (b) God

(c) Matter (d) None of these

37. कारण कार्य नियम है-

(a) दार्शनिक (b) वैज्ञानिक

(c) सामान्य (d) इनमें से कोई नहीं

The law of Causation is -

(a) Phiolosophical (b) Scientific

(c) General (d) All of these

38. आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद के समर्थक है-

(a) प्लेटो (b) बर्कले

(c) हीगेल (d) इनमें से कोई नहीं

The supporter of the Subjective Idealism is-

(a) Plato (b) Berkley

(c) Hegal (d) None of them

39. निम्न में कौन अभाव का प्रकार है ?

(a) संसर्गभाव (b) अन्योन्यावाभाव

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Which of the following is a type of non-existances

(a) Sansargabhava (b) Anyonyabhava

(c) Both a & b (d) None of the above

40. नीतिशास्त्र एवं समाज दर्शन के बीच सम्बन्ध है-

(a) घनिष्ठ (b) विरोधात्मक

(c) घनिष्ठ एवं विरोधात्मक (d) इनमें से कोई नहीं

The relationship between Ethics and Social Philosophy is-

(a) Close (b) Contrary

(c) Both close & contrary (d) None of these

भाग–II

Section-II

(गैर वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

(Non-Objective Type Questions)

Group-B

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

(Short Answer Type Questions)

सभी प्रश्नों के उत्तर दें : **10 × 3 = 30**

Answer All Questions : **10 × 3 = 30**

1. गृहस्थ जीवन के कर्त्तव्य क्या कहलाते हैं तथा स्वधर्म का वास्तविक संबंध किससे हैं ?

   What is the term assigned for the duties of Gaarhastha Asrama and with what Swadharma is related to?

2. गीता का मुख्य उपदेश क्या है ? 'गीता अनासक्त योग है' यह किसने कहा ?

   What is the main preaching of the Gita? Who said that the Gita is Anasakta Yoga ?

3. जैन दर्शन में सम्यक् दर्शन का क्या अर्थ है ?

   What is the meaning of Samyak Darsan in Jaina Philosophy ?

4. पंचावयव का क्या अर्थ है ? समझाइए ?

   What is meant by five constituents? Discuss.

5. वाक्यार्थ की कौन-सी शर्त्ते हैं ? नाम दें।

   Which are the conditions of Vakyartha ? Specify their names.

6. काण्ट के ज्ञान सिद्धान्त को क्या कहा जाता है ? प्रागनुभविक ज्ञान का संबंध किससे हैं ?

What is the term ascribed to the Knowledge Theory of Kant? With whom a priori knowledge is related to?

7. कारण का परिमाणात्मक लक्षण बताइए।

   Mention the quantitative character of cause.

8. ईश्वर के संबंध में प्रथम कारण तर्क क्या है ?

   What is the first cause Argument in relation to God ?

9. भ्रूण हत्या किस क्षेत्र की समस्या है ?

   To which field the problem of abortion is concerned ? What are the ideals of medical ethics?

10. नकदी रहित समाज के निर्माण में शैक्षिक दर्शन की क्या भूमिका हो सकती है ? संक्षेप में वर्णन करें।

    What role of Educational Ethics can there be in turning our society into a cashless one? Explain briefly.

खण्ड–स

Group - C

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

(Long Answer Type Questions)

11. क्या भारतीय दर्शन निराशावादी है ? स्पष्ट कीजिए।

    Is Indian Philosophy Pessimistic ? Explain.

12. बौद्ध दर्शन में निर्वाण क्या है ? व्याख्या करें।

    What is Nirvana in Buddha Philosophy ? Explain.

13. अनुभववाद की व्याख्या करें।

    Describe the Empiricism ?

14. ईश्वर का बौद्धिक स्वरूप है ? विस्तारपूर्वक स्पिनोजा के दर्शन की विवेचना कीजिए।

    What is the intelligence nature of God ? Describe in detail the Philosophy of Spinoza.

15. भौतिक पर्यावरण क्या है ? व्याख्या करें।

    What is the material environment ? Explain.

- ANSWER -

1. (c)	2. (a)	3. (c)	4. (b)	5. (d)	6. (b)
7. (c)	8. (c)	9. (d)	10. (a)	11. (b)	12. (a)
13. (b)	14. (a)	15. (d)	16. (c)	17. (b)	18. (c)
19. (b)	20. (b)	21. (d)	22. (b)	23. (a)	24. (d)
25. (d)	26. (b)	27. (a)	28. (b)	29. (a)	30. (b)
31. (d)	32. (d)	33. (a)	34. (c)	35. (d)	36. (b)
37. (d)	38. (b)	39. (c)	40. (a)		

- ANSWER -

1. गृहस्थ जीवन के कर्त्तव्य यज्ञ कहलाते हैं तथा स्वधर्म का वास्तविक संबंध वर्णाश्रम से है।
2. गीता का मुख्य उपदेश निष्काम कर्मयोग है। विनोबा भावे ने कहा है कि गीता अनासक्त योग है।
3. सत्य के प्रति श्रद्धा की भावना रखना जैन दर्शन में सम्यक् दर्शन कहलाता है अर्थात् श्रद्धा को ही यहाँ सम्यक दर्शन कहा गया है।
4. अनुमान जब दूसरों के सामने कुछ सिद्ध करने के उद्देश्य से किया जाता है, तब उसमें पाँच वाक्यों की आवश्यकता पड़ती है। इस अनुमान को पंचावयव कहते हैं। पंचावयव निम्नवत् हैं- प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण सहित व्याप्ति वाक्य, उपनय तथा निगमन।
5. वाक्यार्थ की शर्त्ते हैं- आकांक्षा, सन्निधि योग्यता एवं तात्पर्य।
6. काण्ट के ज्ञान सिद्धान्त को समीक्षावाद कहते हैं। प्रागनुभविक ज्ञान का संबंध अनुभव तथा बुद्धि दोनों से है।
7. कारण का परिमाणात्मक लक्षण यह है कि कारण एवं कार्य मात्रा में समान होते हैं।
8. सन्त थॉमस एक्वाइनस के अनुसार यह जगत् एक कार्य है। इसलिए उसका कोई कारण होना चाहिए। यह कारण जगत में नहीं हो सकता क्योंकि जगत में प्रत्येक वस्तु कार्य मात्र है। अत:, ईश्वर इस जगत् का प्रथम कारण है।
9. भ्रूण हत्या की समस्या चिकित्सा क्षेत्र से संबंधित है। मानव सेवा तथा मानव कल्याण चिकित्सा नीतिशास्त्र के आदर्श है।
10. विद्यार्थियों में रोजमर्रा के कार्यों में प्लास्टिक मनी के प्रयोग हेतु व्यावहारिक परिवर्तन को प्रोत्साहित कर शैक्षिक दर्शन कैशलेस समाज के निर्माण में अपनी भूमिका का निर्वहन कर सकता है।
11. भारतीय दर्शन में दु:खों की विस्तृत व्याख्या की गयी है। प्रत्येय भारतीय विचारक (चार्वाक को छोड़कर, दु:खों की व्यापकता देखकर इन्हें दूर करने के लिए ही दार्शनिक चिंतन आरंभ करता है। इसी आधार पर कुछ आलोचकों ने भारतीय दर्शन पर निराशावादी होने का आक्षेप किया है। किन्तु, यह आक्षेप निराधार एवं आयुक्ति पूर्ण है। इस आक्षेप की निस्सारत निम्नलिखित तर्कों से प्रमाणित हो जाती है-

(1) संपूण भारतीय दर्शन दु:खों के विवरण से भरा पड़ा है। यहाँ प्रत्येक विचारक दु:खों को दूर करना ही अपना सर्वप्रथम कर्त्तव्य मानता है। महात्मा बुद्ध ने तो दु:खों के आधार पर ही अपने 'चार आर्यसत्यों' की स्थापना की। जीवन में दु:ख के अस्तित्व को कोई अस्वीकार नहीं कर सकता। इसी आधार पर भारतीय दर्शन को निराशावादी कहा जाता है।

भारतीय दर्शन को निराशावादी तभी कहा जाता है, जब यह दु:खों का केवल भयानक चित्रण प्रस्तुत करें और इन्हें दूर करने का कोई मार्ग न बतायें। जैनों का त्रिरत्न, बौद्धों का अष्टांग-मार्ग, नैयायिकों का तत्वज्ञान, सांख्य का विवेकज्ञान, योग का अष्टांग, मीमांसा का कर्म मार्ग, वेदांत का ज्ञान मार्ग एवं गीता के कर्म मार्ग, ज्ञान मार्ग, भक्तिमार्ग इत्यादि दु:ख दूर करने के ही विभिन्न मार्ग हैं। अत: भारतीय दर्शन को निराशावादी नहीं कहा जा सकता।

(2) कभी-कभी निराशावाद का अर्थ पलायनवाद भी होता है। कर्मों से भागना ही पलायनवाद है। इस अर्थ में भारतीय दर्शन को निराशावादी कहा गया है।

महात्मा बुद्ध बोधि या निर्वाण की प्राप्त के बाद भी अस्सी वर्ष की उम्र तक 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' कर्म करते हैं। अत: इसे निराशावादी कहना अनुचित है।

(3) भारतीय दर्शन को कभी-कभी अति आध्यात्मिक होने के कारण भी निराशावादी कहा जाता है। मानव जीवन के पाशविक एवं आध्यात्मिक दोनों पक्षों के संतुलन पर इस दर्शन में जोर दिया गया है। यदि दर्शन अध्यात्मवादी है, तो इसे निराशावादी न कहकर आशावादी कहना अधिक उपयुक्त होगा।

यदि भारतीय दर्शन आशावाद की स्थापना के लिए निराशावाद को साधन के रूप में अपनाता है, तो यह कोई अनुचित कार्य नहीं कहा जा सकता। भारतीय दर्शन का आरंभ बिन्दु निराशावाद अवश्य है किन्तु इसका लक्ष्य आशावाद है।

अत: भारतीय दर्शन को निराशावादी कहना सर्वथा अनुचित एवं तर्कहीन है।

12. बुद्ध ने अपने द्वितीय आर्यसत्य में दु:खों का कारण बताया है। उनका कहना है कि यदि इन कारणों को नष्ट कर दिया जाय, तो दु:खरुपी कार्य का भी नाश हो जायेगा। दु:खरहित अवस्था को बौद्ध दर्शन में 'निर्वाण' कहा गया है। भारतीय दर्शन में 'मोक्ष' और 'निर्वाण' समनार्थक है। बौद्ध दर्शन के तृतीय आर्यसत्य में निर्वाण के स्वरूप की व्याख्या की गयी है।

बौद्ध दर्शन में 'निर्वाण' एक ऐसा अवस्था है के रूप में चित्रित किया गया है, जिसमें दु:ख का पूर्ण विनाश हो जाता है। बौद्ध दर्शन निर्वाण को जीवन का चरम लक्ष्य मानता है। यहाँ निर्वाण को दु:खरहित अवस्था के रूप में ग्रहण किया गया है।

निर्वाण का अर्थ 'बुझा हुआ' भी होता है। दु:खरूपी अग्नि का बुझ जाना ही निर्वाण कहा जा सकता है। पाणिनि के अनुसार 'निर्वाण' शब्द का अर्थ 'बहती हवा का रुक जाना' कहा गया है। निर्वाण को शांतवस्था भी कहा गया है। दु:ख के नष्ट होने पर एक अपूर्व शांति का अनुभव होता है। इसलिए निर्वाण को एक शांत अवस्था कहते हैं।

'निर्वाण' का शाब्दिक अर्थ 'बुझा हुआ' भी है। इसके आधार पर कुछ लोग इसे 'अस्तित्वविनाश' के अर्थ में लेते हैं। लेकिन निर्वाण अस्तित्व का नाश न हीं करता बल्कि दु:खों का नाश करता है। निवार्ण प्राप्त

व्यक्ति अपना अस्तित्व कायम रखते हुए लोक हित के कार्यों में संलग्न रह सकता है। भगवान बुद्ध स्वयं इसके उदाहरण हैं। निर्वाण प्राप्ति के बाद भी जीवन धारण करते हुए वह अस्सी वर्ष की उम्र तक जनकल्याण के कार्यों में सदैव बने रहे।

निर्वाण का स्वरूप अवर्णनीय है। शरीर धारण करते हुये इस जीवन में मुक्ति पाना 'निर्वाण' है और मृत्यु के बाद मुक्ति पाना 'परिनिर्वाण' है।

13. अनुभववाद के अनुसार ज्ञान-प्राप्ति का एकमात्र साधन अनुभव है। अनुभव के अतिरिक्त ज्ञान का कोई अन्य साधन नहीं है।

अनुभववाद के अनुसार संपूर्ण ज्ञान अनुभवजन्य है। ज्ञान का कोई भी अंश अनुभवनिरपेक्ष नहीं है। ज्ञान अनुभव द्वारा प्राप्त होता है इसलिए कोई भी ज्ञान जन्मजात नहीं है। इन लोगों ने मनुष्य के मस्तिष्क को प्रारंभिक अवस्था में साफ कागज या कोरी पटरी कहा है। अनुभव के पहले मस्तिष्क रिक्त रहता है। अनुभव के द्वारा ही मस्तिष्क में विचार अंकित होते हैं। अनुभववादी लॉक ने जन्मजात प्रत्ययों का जोरदार खंडन किया है और कहा है कि कोई भी प्रत्यय जन्मजात नहीं है। सब कुछ अर्जित है। ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो पहले इन्द्रियों में विद्यमान न थी। अत: सभी प्रकार के ज्ञान अनुभवजन्य होते हैं।

अनुभववाद बुद्धि को निष्क्रिय मानता है। इस सिद्धांत के अनुसार ज्ञान निर्णयों की समष्टि है। प्रत्ययों को संबंध करने से निर्णय बनते हैं। अत: ज्ञान के निर्णायक तत्व प्रत्यय है। प्रत्यय बुद्धि द्वारा उत्पन्न नहीं हो सकते। इनकी उत्पत्ति तो अनुभव द्वारा होती है। मन या बुद्धि प्रत्ययों को केवल ग्रहण करते हैं। इसलिए मन या बुद्धि को निष्क्रिय कहा जाता है।

ज्ञान प्राप्ति के लिए अनुभववाद आगमनात्मक विधि का सहारा लेता है। अनुभव से विशेषों का ज्ञान होता है, जिससे आगमनात्मक विधि द्वारा सामान्य ज्ञान प्राप्त होता है।

अनुभववाद वस्तुनिष्ठ विज्ञान को आदर्श मानता है। अनुभवजन्य ज्ञान में नवीनता का गुण विद्यमान रहता है। अनुभववाद के अनुसार ज्ञान संभाव्य होता है, पूर्ण निश्चित नहीं। सभी अनुभववादी अनुभ्ज्ञव को ज्ञान का उद्‌गम मानते हैं।

14. ईश्वर के बौद्धिक प्रेम में मनुष्य के सर्वोच्च शुभ को स्पिनोजा के दर्शन में देखा जा सकता है। स्पिनोजा कहते हैं जितना हम पदार्थों को समझते हैं उतना ही अधिक हम ईश्वर को समझते हैं।

इसलिए स्पिनोजा के अनुसार मनुष्य के मन की सबसे बड़ी श्रेष्ठता उसका सबसे बड़ा प्रयत्न पदार्थों को ईश्वर के विशिष्ट गुणों के प्रसंग में जानना है। यही मनुष्य को मानसिक सन्तुष्टि प्रदान करता है। कोई भी मनुष्य जितना अधिक इस प्रकार के ज्ञान में बड़ा होता है, उतना ही अधिक उसे अपना एवं ईश्वर का ज्ञान होता है और वह उतना ही अधिक पूर्ण तथा कृतार्थ होता है। ईश्वर एवं पदार्थों के प्रकार के ज्ञान से मनुष्य की प्रसन्नता बढ़ती है और उसे वह ज्ञान होता है कि ईश्वर का प्रत्यय कारण है। इस तीसरे प्रकार के ज्ञान से ईश्वर का बौद्धिक प्रेम उदित होता है क्योंकि इस ज्ञान में यह विचार लगा हुआ है कि ईश्वर कारण है। ईश्वर का प्रेम उसे विद्यमान जानकर नहीं वरन् नित्य जानकार होता है।

ईश्वर के प्रति मन का बौद्धिक प्रेम उस अनन्त प्रेम का भाग है जिससे ईश्वर के बौद्धिक प्रेम में मानव का मन ईश्वरीय बन जाता है वह बौद्धिक प्रेम ईश्वरीय प्रेम बन जाता है। इस प्रकार ईश्वर से बौद्धिक प्रेम करने में मनुष्य ईश्वर के अपने अति प्रेम में भाग लेता है।

स्पिनोजा का मानना है कि इससे यह नतीजा निकलता है कि ईश्वर जहाँ तक वह अपने आपसे प्रेम करता है, मनुष्यों से प्रेम करता है और इसके फलस्वरूप मनुष्यों से प्रेम करता है और इसके फलस्वरूप मनुष्यों के प्रति ईश्वर का प्रेम और ईश्वर के प्रति मनुष्य का बौद्धिक प्रेम एक ही वस्तु है। मानव के मन का सार ज्ञान में है जिसका मूल व आधार ईश्वर है।

15. हमारे चारों ओर की जो प्रकृति है, चारों ओर जो परिवेश दिखायी देता है, वह भौतिक पर्यावरण कहलाता है। प्रकृति क्या है ? पहाड़, नदियाँ, जंगल, सागर, झरने ये सब मानव निर्मित तो नहीं है। ये सब एक अज्ञात शक्ति के द्वारा ही बनाये गये हैं। इन सबको सम्मिलित रूप से प्रकृति कहते हैं।

    मानव को जीवन यापन के लिए भोजन, घर या भूमि, जल की आवश्यकता है। इन सबकी प्राप्ति प्रकृति प्रदत्त वस्तुएँ से होती है। प्रकृति इन सभी वस्तुओं की निष्काम भावना से जीव मात्र को प्रदान करती है। अत: इन वस्तुओं की रक्षा करने का दायित्व भी मनुष्य पर आता है क्योंकि मानव को इन प्राकृतिक संसाधनों का केवल उपभोक्ता है। अत: उपभोक्ता होने के नाते मनुष्य को इन प्राकृतिक उपहारों की रक्षा करती रहती है।

    मानव इन प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग करता है तो इनका अंधाधुंध दोहन भी करता है। इस अति दोहन के कारण प्राकृतिक पर्यावरण को अत्यन्त हानि होती है। पेट्रोल, कोयला लकड़ी के दुरुपयोग से इनका भंडार कम हो रहा है। ओजोन परत की हानिकारक सूर्य की किरणों की गैसों से हमारे वातावरण की रक्षा करती है परन्तु ओजोन परत के क्षय से वातावरण में जो हानियाँ उत्पन्न होती चली जा रही है। उसका आगे यदि परिणाम नहीं सोचा गया तो बहुत नुकसान होगा।

    ध्वनि प्रदुषण की बहुत हानिकारक है।। इसे रोकने के लिए ध्वनि पर नियंत्रण बनना बहुत आवश्यक है। अत: भौतिक पर्यावरण हमारे जीवन के ऊपर अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रभव डालता है। यदि जीवन में उन्नत, शान्तिपूर्ण व विकसित बनाना है तो भौतिक पर्यावरण को स्पष्ट रखना पड़ेगा। इसके लिए विभिन्न वातावरणीय प्रदूक्षणों को समाप्त करना अनिवार्य है।

❑

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

PHILOSOPHY

Set-X

MODEL PAPER - X

कुल प्रश्नों की संख्या : ४० + १० + ५ = ५५

Total No. of Questions : 40 + 10 + 5 = 55

कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : २४

Total No. 1 of Printed Pages : 24

PHILOSOPHY

A.-PHL. (OPT)

समय : ३ घंटे १५ मिनट] [पूर्णांक : १००

Time : 3 Hours 15 Minutes] [Marks : 100

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

Instructions to the candidate :

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

   Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.
2. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

   Figures in the right hand margin indicate full marks.
3. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ भाग संख्या, खण्ड संख्या और प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

   Write Section number, Group number and Question number with every answer.

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में दो भाग-भाग-I एवं भाग-II हैं। भाग-I में खण्ड-अ एवं भाग-II में खण्ड-ब एवं खण्ड-स हैं।

भाग-I : भाग-I के खण्ड-अ के प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रकार के हैं। इस खण्ड के प्रश्न संख्या १ से ४० तक प्रत्येक १ अंक का है।

भाग-II : भाग-II के सभी प्रश्न गैर-वस्तुनिष्ठ हैं। भाग- II के खण्ड-ब के प्रश्न लघु उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी १० प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न ३ अंक का है। भाग- II के खण्ड-स के प्रश्न दीर्घ उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी ५ प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न ६ अंक का है।

***Instructions* :**

This paper consists of two Sections - Section - I and II. Section - I consists of Group - A and Section - II consists of Group-B & Group - C.

***Section*-I :** Group A of Section - I are Objective Type Questions. In this group Question Nos. 1 to 40 carry 1 mark each.

***Section*-II :** All Questions of Section - II are Non-Objective Type. Group -B of Section-II are Short Answer Type questions. Answer all 10 questions. Each question carries 3 marks. Group-C of Section-II are Long Answer Type Questions. Answer all 5 questions. Each question carries 6 marks.

Model Paper - X

भाग-I

Section - I

खण्ड–अ

Group - A

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(Objective Type Questions)

सभी 40 प्रश्नों के उत्तर दें। सही उत्तर का चयन करते हुए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दें:

40 × 1 = 40

Answer all the questions. Answer each questions by Selecting the correct answer

40 × 1 = 40

1. देकार्त के दर्शन में संदेह है-

(a) साधन (b) साध्य

(c) साधन तथा साध्य (d) उपर्युक्त सभी

Doubt in the philosophy of Descartes is

(a) Means (b) End

(c) Both means and end (d) All the above

2. स्पिनोजा ने मन को बताया था-

(a) विचार (b) विस्तार

(c) विचार तथा विस्तार (d) इनमें से कोई नहीं

Spinoza attributed to mind-

(a) Thought (b) Extension

(c) Thought and Extension (d) None of these

3. नैतिक निर्णय का स्वरूप होता है-

(a) वणर्नात्मक (b) नियमात्मक

(c) सूचनात्मक (d) इनमें से कोई नहीं

The nature of Moral Judgment is

(a) Explanatory (b) Regulative

(c) Informative (d) None of these

4. Right (उचित) शब्द निम्नलिखित में किससे व्युत्पन्न है-

(a) Rectum (b) Rectus

(c) Retina (d) ये सभी

The term Right is originated from

(a) Rectum (b) Rectus

(c) Retina (d) All of these

5. Good शब्द व्युत्पन्न है-

(a) Gut से (b) Gout से

(c) God से (d) इनमें से कोई नहीं

The term Good is derived from

(a) Gut (b) Gout

(c) God (d) None of these

6. वस्तुवाद का आधार है-

(a) सामान्य ज्ञान (b) तार्किक ज्ञान

(c) इन्द्रियप्रत्यक्ष (d) विवेक

The basis of Realism is

(a) Common Sense (b) Logical Knowledge

(c) Perception (d) Reason

7. पुनर्जन्म असंभव है, कहता है-

(a) चार्वाक (b) महावीर

(c) बुद्ध (d) इनमें से कोई नहीं

***Rebirth is impossible,* it is supported by**

(a) Charvak (b) Mahavir

(c) Buddha (d) None of these

8. न्याय दर्शन प्रथम भारतीय है-

(a) तर्कशास्त्र (b) धर्मशास्त्र

(c) दर्शन (d) इनमें से कोई नहीं

Nyaya Philosophy is the first Indian-

(a) Logic (b) Scripture

(c) Philosophy (d) None of these

9. दुःख के प्रकार हैं-

(a) आध्यात्मिक (b) अधिभौतिक

(c) आधिदैविक (d) ये सभी

The Kinds of sufferings-

(a) Spiritual (b) adhibhautika

(c) Aadhidaivik (d) All of these

10. पाश्चात्य दर्शन का जनक है-

(a) सुकरात (c) प्लेटो

(c) अरस्तु (d) थेलिज

The father of Western Philosophy is-

(a) Socrates (b) Plato

(c) Aristotle (d) Thales

11. बुद्धिवादी ज्ञान का स्त्रोत है-

(a) सहज प्रत्यय (b) जन्मजात प्रत्यय

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

The source of Rationalist Knowledge is

(a) Sahaj Pratyaya (b) Innate Ideas

(c) Both a and b (d) None of these

12. बुद्धिवादी दार्शनिक हैं-

(a) देकार्त (b) स्पिनोजा

(c) लाइबनीज (d) से सभी

Rationalist Philosopher-

(a) Descartes (b) Spinoza

(c) Leibnitz (d) All of these

13. पर्यावरण शब्द किससे बना है-

(a) इन्विरॉनर (b) इन्वराटर

(c) इन्वनार (d) इनमें से कोई नहीं

The term Environment has been derived from

(a) Enviorner (b) Envoritor

(c) Envinor (d) None of these

14. मन-शरीर सम्बन्ध सम्बन्धी विचार दिया गया-

(a) अन्तर्क्रियावाद (c) सामान्तरवाद

(c) पूर्वस्थापित सामंजस्यवाद (d) ये सभी

The theory of Mind-Body relation has been dealt in

(a) Interactionalism (b) Parallelism

(c) Pre Established Harmony (d) all of these

15. सामानान्तरवाद सिद्धान्त है-

(a) लॉक (b) स्पिनोजा

(c) देकार्त (d) लाइबनीज

Parallelism is given by

(a) Locke (b) Spinoza

(c) Descartes (d) Leibnitz

16. हीगेल के अनुसार मन शरीर में सम्बन्ध है-

(a) तादात्मय (b) भिन्नता

(c) सामंजस्य (d) इसमें से कोई नहीं

Mind-Body relation according to Hegel is

(a) Identity (b) Different

(c) Harmony (d) None of these

17. नीतिशास्त्र मानव आचरण का विज्ञान है। किसने कहा ?

(a) मैकेंजी (b) जेम्स

(c) लिलि (d) सेठ

Ethics is the science of human conduct. Who said it?

(a) Mackenzi (b) James

(c) Lili (d) Seth

18. अनुभववाद की दार्शनिक विधि है-

(a) निगमनात्मक (b) आगमनात्मक

(c) ज्यामितिक (d) ये सभी

The philosophical method of empiricism is

(a) Deductive (b) Inductive

(c) Geometrical (d) All of these

19. Virtue (सद्गुण) होता है-

(a) जन्मजात (b) अर्जित

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Virtue is-

(a) Innate (b) acquired

(c) both a and b (d) none of these

20. दर्शनशास्त्र के विषय हैं-

(a) पृथ्वी (b) आकाश

(c) पाताल (d) ये सभी

The subject-matter of Philosophy is:

(a) Earth (b) Ether

(c) Pataal (d) All of these

21. 'कर्मण्येवाधिरस्ते मा फलेषु कदाचन्' यह किस ग्रन्थ का वचन है-

(a) गीता (b) ब्रह्मसूत्र

(c) कठ उपनिषद् (d) मनुस्मृति

The Scripture that asserts 'Karmanyevadhikaraste ma phaleshu kadachan' is-

(a) The Gita (b) Brahmasutra

(c) Kathopnisada (d) Mansmrti

22. गीता में स्वधर्म का अर्थ है-

(a) सामान्य धर्म (b) राजधर्म

(c) युग धर्म (d) वर्ण धर्म

The meaning of Swadharma is-

(a) General duty (b) Rajadharma

(c) Yugdharama (d) Varna Dharma

23. आत्मा की सत्यता के लिए निम्न में से कौन सही है-

(a) व्यावहारिक (b) पारमार्थिक

(c) प्रतिभाषिक (d) इनमें से कोई नहीं

Which of the following is the truth of Soul

(a) Practical (b) Parmarthika

(c) Pratibhasika (d) None of these

24. भारतीय दर्शन नहीं है-

(a) निराशावादी (b) अध्यात्मवादी

(c) प्राकृतिक (d) इनमें से कोई नहीं

Indian knowledge is not-

(a) Pessimistic (b) Spiritual

(c) Natural (d) None of these

25. सांख्यकारिका के रचयिता हैं-

(a) कपिल (b) कनाद

(c) गौतम (d) ईश्वर कृष्ण

Sankhya Karika is written by-

(a) Kapil (b) Kanada

(c) Gautam (d) Isvarkrishna

26. बुद्ध के अनुसर त्रिरत्न क्या है ?

(a) शील (b) समाधि

(c) प्रज्ञा (d) इनमें से कोई नहीं

What is Tri-Ratna according to the Buddha-

(a) Sila (b) Samadhi

(c) Prajna (d) All of the these

27. सांख्य दर्शन है :

(a) एकवादी (b) द्वैतवादी

(c) अनेकवादी (d) इनमें से कोई नहीं

Sankhaya Philosophy is-

(a) Monistic (b) Dualistic

(c) Polythestic (d) None of these

28. शंकराचार्य द्वारा रचित ग्रन्थ है-

(a) ब्रह्म सूत्र (b) सांख्यकारिका

(c) योग सूत्र (d) श्रीभाष्य

The book written by Shankaracharya-

(a) Brahma Sutra (b) Sankhya Karika

(c) Yogasutra (d) Sribhasya

29. न्याय दर्शन है-

(a) प्रत्ययवादी (b) प्रयोजनवादी

(c) वस्तुवादी (d) संशयवादी

Nyaya Philosophy is-

(a) Idealist (b) Teleological

(c) Realistic (d) Sceptic

30. इनमें से कौन जैन सम्प्रदाय है-

(a) हीनयान (b) महायान

(c) श्वेताम्बर (d) इनमें से सभी

Which of the following belongs to the Jaina school?

(a) Hinayana (b) Mahayana

(c) Swetambara (d) All of these

31. शंकराचार्य के अनुसार जगत् है-

(a) पारमार्थिक सत्य (b) व्यावहारिक सत्य

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

The World according to Shankaracharya is-

(a) Transcendental (b) Practical

(c) Both (d) None of these

32. मोक्ष के लिये निर्वाण शब्द किस दर्शन में प्रयुक्त हुआ है-

(a) सांख्य (b) मीमांसा

(c) बौद्ध (d) जैन

Which philosophy uses the term 'Nirvana' for liberation?

(a) Sankhya (b) Mimansa

(c) Buddhism (d) Jaina

33. पुरुषार्थ हैं-

(a) दो (b) तीन

(c) चार (d) इनमें से कोई नहीं

The types of Purushartha :

(a) Two (b) Three

(c) Four (d) None of these

34. उपनिषदों का सार है-

(a) रामायण (b) गीता

(c) महाभारत (d) इनमें से कोई नहीं

The essence of the Upanisadas-

(a) The Ramayana (b) The Gita

(c) The Mahabharata (d) None of these

35. आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद के समर्थक हैं-

(a) प्लेटो (b) बर्कले

(c) हीगेल (d) इनमें से कोई नहीं

The supporter of Subjective Idealism-

(b)Plato (b) Berkeley

(c) Hegal (d) None of these

36. फिलॉसफी का अर्थ है-

(a) नियमों का आविष्कार (b) ज्ञान के प्रति प्रेम

(c) ज्ञान के प्रति अरूचि (d) इनमें से कोई नहीं

The meaning of Philosophy is-

(a) Invention of Laws (b) Love for knowledge

(c) Non-interest to knowledge (d) None of these

37. शंकर के अनुसार सत्-चित्-आनंद कौन हैं?

(a) ईश्वर (b) माया

(c) ब्रह्म (d) इनमें से कोई नहीं

Who among the following is Sat-Cit-Anand according to Sankar

(a) God (b) Maya

(c) Brahma (d) None of these

38. आस्तिक दर्शन की संख्या है-

(a) आठ (b) छः

(c) तीन (d) पाँच

The number of Orthodox Philosophy is-

(a) Eight (b) Six

(c) Three (d) Five

39. पर्यावरणीय नीतिशास्त्र है-

(a) मनुष्य केन्द्रित (b) जीवन केन्द्रित

(c) पशु केन्द्रित (d) इनमें से कोई नहीं

Environmental Ethics is-

(a) Man-centric (b) Life-centric

(c) Animal centric (d) None of these

40. अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र को कहते हैं-

(a) व्यावहारिक नीतिशास्त्र (b) अधिनीतिशास्त्र

(c) आदर्शमूलक नीतिशास्त्र (d) उपर्युक्त सभी

Applied Ethics is called-

(a) Practical ethics (b) Meta ethics

(c) Idealistic ethics (d) All of the above.

भाग–II

Section-II

(गैर वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

(Non-Objective Type Questions)

Group-B

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

(Short Answer Type Questions)

सभी प्रश्नों के उत्तर दें : **10 × 3 = 30**

Answer All Questions : **10 × 3 = 30**

1. 'स्थित प्रज्ञ' की अवधारणा का संक्षिप्त परिचय दें।

   Briefly mention the concept of 'Sthita Pranja'.

2. लोक संग्रह किसे कहते हैं ? लोक संग्रह किसका साधन है ?

   What is Lokasangraha ? Of which the Lokasangraha is a means?

3. जैन दर्शन में निर्जरा क्या है ?

   What is Nirjara in Jaina Philosophy?

4. न्यायदर्शन में निगमन का क्या अर्थ है ?

   What is the meaning of Nigamana in Nyaya Philosophy ?

5. उपमान क्या है ?

   What is Comparison?

6. बुद्धिवाद तथा अनुभववाद में अन्तर करें ?

   Distinguish between Rationalism and Empiricism.

7. अनुक्रमता सिद्धांत क्या है ? क्या बौद्ध दर्शन के द्वादश निदान को इसका उदाहरण कहा जा सकता है?

   What is the Theory of Succession ? Can Dwadasanidana of the Buddhist Philosophy be called its example?

8. ईश्वरवाद का क्या अर्थ है ? हीगेल ईश्वर को क्या मानता है ?

   What is Theism? What does Hegel consider to God ?

9. नैतिकता का संबंध किससे है? 'व्यक्ति बनो'- यह किसका वक्तव्य है ?

   Of which morality is related to? Who said - 'Be a Person'.

10. मानव जीवन की स्वास्थता से क्या तात्पर्य है ? पर्यावरणीय आचरण के संबंध में पीटर सिंगर का क्या मत है?

    What is meant by healthy human life? What does Peter Singer say about environmental activities?

खण्ड-स

Group - C

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

(Long Answer Type Questions)

11. जैन के अनुसार द्रव्य से आपका क्या अभिप्राय है ?

    What do you understand by substances of Jain?

12. निष्काम कर्म की तुलना काण्ट के 'कर्त्तव्य कर्त्तव्य के लिए होता है' सिद्धान्त से कीजिए।

    Compare Niskama Karma with Kant's theory 'Duty for Duty Sake'.

13. बुद्ध का 'द्वितीय आर्यसत्य' क्या है? स्पष्ट करें।

    What is the 'Second Noble Truth' of Buddha? Explain.

14. ईश्वर के अस्तित्व के सम्बन्ध में तात्विक प्रमाणों का उल्लेख कीजिए।

    Discuss the Ontological arguments for existence of God.

15. चिकित्सा नीतिशास्त्र के मुख्य सिद्धांतों की विवेचना कीजिए?

    Discuss the main principles of Medical Ethics?

- ANSWERS -

1. (a)	2. (a)	3. (b)	4. (b)	5. (a)	6. (c)
7. (a)	8. (a)	9. (d)	10. (d)	11. (c)	12. (d)
13. (a)	14. (d)	15. (b)	16. (a)	17. (a)	18. (b)
19. (b)	20. (d)	21. (a)	22. (d)	23. (b)	24. (a)
25. (d)	26. (d)	27. (b)	28. (a)	29. (a)	30. (c)
31. (b)	32. (c)	33. (c)	34. (b)	35. (b)	36. (b)
37. (c)	38. (b)	39. (b)	40. (a)		

- ANSWERS -

1. जो मनुष्य मन और इन्द्रियों को पूरी तरह से अपने वश में कर लेता है। वह स्थित प्रज्ञ हो जाता है। स्थितप्रज्ञ वही है जिसकी बुद्धि स्थिर होती है। स्थित प्रज्ञ विषयासक्ति के कारण कभी भ्रमित नहीं होता।
2. इस संसार में रहने वाले व्यक्तियों का कल्याण ही 'लोक संग्रह' कहलाता है। लोक संग्रह निष्काम कर्म का साधन है।
3. जीव में प्रविष्ट हुए कर्म पुद्गलों को बाहर निकालने की प्रक्रिया निर्जरा कहलाती है। निर्जरा बन्धन के बीच कर्म पुद्गलों की नाश की प्रक्रिया है।
4. उपनय के आधार पर जिस तर्कवाक्य में साध्य का होना बतलाया जाए उसे निगमन कहते हैं।
5. किसी ज्ञान वस्तु की समानता के आधार पर अज्ञात वस्तु का ज्ञान उपमान कहलाता है।
6. बुद्धिवाद एक ज्ञानमीमांसीय सिद्धांत है जिसके अनुसार ज्ञान की उत्पत्ति बुद्धि से होती है। इसके विपरीत अनुभवाद यह मानता है कि समस्त ज्ञान अनुभव से अर्जित किया जाता है।
7. अनुक्रमता सिद्धांत कार्य कारण संबंधों को स्पष्ट करने का एक सिद्धांत है। इस सिद्धांत के अनुसार कारण एवं कार्य में गणितीय संबंध है। जैसे-1 के बाद 2 और 2 के बाद 3 आता है। इसी प्रकार, कारण के बाद कार्य आता है। बौद्ध दर्शन का द्वादश निदान इसका एक अच्छा उदाहरण है।
8. ईश्वरवाद एक सिद्धांत है जो ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करता है तथा उस विश्वास को सत्य मानता है। हीगेल ईश्वर को पूर्ण चेतन मानते हैं।
9. नैतिकता का संबंध मानवीय आचरण से है। 'व्यक्ति बनो' हीगेल का कथन है।
10. मानव जीवन की स्वच्छता से तात्पर्य है कि हमारा भौतिक और मानसिक पर्यावरण लाभप्रद है। पीटर सिंगर का मत है कि हमें वे कार्य करने चाहिए जिससे पर्यावरण सुरक्षित रखा जा सके।
11. जैन दर्शन के अनुसार- "द्रव्य वह है, जिसमें गुण और पर्याय हों।' गुण वस्तु का आवश्यक धर्म है और पर्याय उसका अनावश्यक या आकस्मिक धर्म। वेदांती ब्रह्म की नित्यता पर जोर देते हैं और बौद्ध विश्व की नश्वरता एवं क्षणभंगुरता पर जोर देते हैं। किन्तु जैन विचारक इन दोनों को एकांगी बताकर नित्यता और नश्वरता दोनों का समर्थन करते हैं।

    जैनों के अनुसार द्रव्य के दो प्रकार हैं- (1) अस्तिकाय, और (2) अनस्तिकाय। अस्तिकाय द्रव्य जगह धघेरते हैं किन्तु अनस्तिकाय द्रव्य जगह नहीं घेरते। अनस्तिकाय द्रव्य एक ही और वह है 'काल'। किन्तु

अस्तिकाय द्रव्यों की संख्या अनेक है। इनके दो प्रकार हैं- (1) जीव और (2) अजीव। जीव के दो भेद हैं- मुक्त और बद्ध। मुक्त जीव वे हैं, जिन्होंने मोक्ष प्राप्त कर लिया है। बद्ध जीव वे हैं, जो अभी तक बंधनग्रस्त है। बद्ध जीव के दो प्रकार हैं- गतिमान और गतिहीन।

अजीव के चार प्रकार हैं, जो निम्नलिखित हैं-

(a) धर्म- जैनो के अनुसार धर्म वह है, जो वस्तु को गतिशील बनाए रखने में मदद पहुँचाता है।

(b) अधर्म- जो किसी वस्तु को स्थिर या विराम में रखने में सहायक है।

(c) पुद्गल- भौतिक द्रव्य ही जैनों के अनुसार पुद्गल है। रूप, रस, गंध और स्पर्श से युक्त द्रव्य पुद्गल कहलाते हैं।

(d) आकाश- आकाश ही अस्तिकाय द्रव्यों को स्थान देता है। आकाश भी दो प्रकार का है- 'लोकाकाश' और 'आलोकाकाश'। लोकाकाश जीव, पुद्गल, धर्म एवं अधर्म का निवास स्थान है। अलोकाकाश इस जगत से परे हैं।

काल अनिस्तकाल द्रव्य का उदाहरण है, यह स्थान नहीं घेरता। काल के दो प्रकार हैं- व्यावहारिक काल, तथा पारमार्थिक काल। व्यावहारिक काल का आरंभ और अंत दोनों होता है। पारमार्थिक काल अनादि एवं अनन्त है। यह नित्य एवं अमूर्त्त है, इसका विभाजन संभव नहीं है।

12. काण्ट का 'कर्त्तव्य कर्त्तव्य के लिए' का सिद्धांत गीता के निष्काम कर्म से मिलता-जुलता है। काण्ट का कहना है कि हमें कोई भी काम कर्त्तव्य समझकर ही करना चाहिए, न कि उसके फल की इच्छा रखकर। दोनों के विचारों में काफी समानता पाई जाती है। काण्ट के दर्शन में कर्त्तव्य-भावना पर जोर दिया गया है, तो गीता में निष्काम कर्म की प्रधानता स्वीकार की गयी है। कर्म का नैतिक गुण कर्त्ता की बुद्धि के अधीन माना गया है। दोनों ने ही व्यक्ति की महत्ता स्वीकार की है। स्वतंत्र संकल्प दोनों की ही दृष्टि से महत्वपूर्ण है। गीता कहती है- जैसा तुम चाहते हो वैसा करो। कांट भी कहते हैं- "तुम चाहते हो, इसलिए तुम कर सकते हो।" विषयवासना पर नियंत्रण दोनों का आदेश है। कांट व्यावहारिक बुद्धि को महत्वपूर्ण मानते हैं, तो गीता व्यावसायिक बुद्धि को महत्व प्रदान करती है। दोनों ने कर्मों का आधार लोकहित माना है।

उपर्युक्त समानताओं के बावजूद दोनों में निम्नलिखित अंतर पाये जाते हैं-

(1) गीता की नीति का आधार ब्रह्मविद्या है, तो कांट ब्रह्मविद्या उनकी नीतिविद्या पर आधृत है।

(2) गीता की शुद्ध बुद्धि कांट की बुद्धि से अधिक व्यावहारिक है।

(3) कांट इन्द्रियों के दमन का आदेश देते हैं मगर गीता उच्चतर इच्छाओं के लिए निम्न इच्छाओं को त्यागने पर जोर देते हैं।

(4) कांट कर्त्तव्यपालन में किसी प्रकार का अपवाद नहीं मानते, मगर गीता परिस्थितिविशेष में अपवाद को भी स्वीकार करती है।

(5) कांट की नीति ज्ञानप्रधान है, गीता की नीति में ज्ञान, भक्ति एवं कर्म के तत्वों का अद्भुत सामंजस्य पाया जाता है।

(6) कांट नैतिकता को ही एकमात्र आदर्श मानते हैं, किन्तु गीता 'मोक्ष' को चरम आदर्श मानते हैं। गीता का निष्काम कर्म का संदेश कांट की अपेक्षा अधिक व्यापक एवं श्रेष्ठकर है।

13. बुद्ध के द्वितीय आर्यसत्य में दुःख की उत्पत्ति पर विचार किया गया है। प्रत्येक घटना का कोई कारण अवश्य होता है। दुःख भी एक घटना का कार्य है। इसलिए इसका भी कोई कारण अवश्य होना चाहिए। प्रायः सभी भारतीय विचारकों ने अज्ञान को ही दुःख का मूल कारण बताया है। बौद्ध दर्शन में दुःख की उत्पत्ति का सिद्धांत बौद्धों के 'प्रतीत्यसमुत्पाद' अर्थात् कार्यकारण सिद्धांत पर आधृत है। प्रतीत्यसमुत्पाद दो शब्दों के योग से बना है- 'प्रतीत्य; और 'समुत्पाद'। 'प्रतीत्य' का अर्थ है किसी वस्तु के उपस्थित होने पर और 'समुत्पाद' का अर्थ किसी अन्य वस्तु की उपस्थिति। इस सिद्धांत के अनुसार कोई भी वस्तु न तो शाश्वत है और न पूर्णतया नश्वर ही। बौद्ध दर्शन के अनुसार प्रत्येक वस्तु अपने बाद कुछ-न-कुछ अवश्य छोड़ जाती है। इसलिए किसी वस्तु का पूर्णतया नाश नहीं होता है। प्रतीत्यसमुत्पाद को मान लेने पर दुःख का भी कारण मानना आवश्यक हो जाता है। बौद्ध-दर्शन में दुःख के कारण में बारह कड़ियों को तीनों कालों के अंतर्गत इस प्रकार रखा जा सकता है-

अतीत काल-	(i) अविद्या
	(ii) संस्कार
वर्त्तमान काल-	(iii) विज्ञान
	(iv) नामरुप
	(v) षडायतन
	(vi) स्पर्श
	(vii) वेदना
	(viii) तृष्णा
	(ix) उपादान
	(x) भव
भविष्य काल-	(xi) जाति
	(xii) जरा-मरण

प्रतीत्यसमुत्पाद को कई नामों से पुकारा जाता है। 'द्वादश निदान', भवचक्र', 'जन्म-मरण चक्र', 'धर्मचक्र' आदि इसके उल्लेखनीय नाम है।

14. मध्यकालीन दार्शनिक संत असलेम ने सर्वप्रथम ईश्वर के विषय में तत्व विषयक प्रमाण प्रस्तुत किया जिसको बाद में देकार्त ने विकसित किया। इस तर्क के अनुसार हम ईश्वर को सर्वोच्च सत्ता के रूप में मानते हैं तथा इसके पूर्ण भी मानते हैं। इस प्रकार जब हम ईश्वर को पूर्ण मानते हैं तब इसका अस्तित्व भी अवश्य होना चाहिए क्योंकि अस्तित्व के अभाव में इसे पूर्ण नहीं माना जा सकता है। इससे स्पष्ट है कि तत्व विषयक तर्क के अनुसार ईश्वर की पूर्णता ही इसके अस्तित्व का प्रमाण है। इसके साथ ही यह भी यथार्थ है कि अस्तित्व के अभाव में ईश्वर को सर्वोच्च भी नहीं माना जा सकता। देकार्त ने ईश्वर के अस्तित्व के विषय में तत्व विषयक तर्क कुछ भिन्न प्रकार से दिया है। इसका कहना है कि हमारे मन जो असीम सर्वज्ञ और शाश्वत सत्ता का प्रत्यय है। वह असीम सर्वज्ञ और शाश्वत शक्ति के अस्तित्व को सिद्ध करता है क्योंकि यदि यह विचार किया जाए कि ईश्वर का प्रत्यय का विचार कहाँ से उत्पन्न हुआ तब

इस विषय में मनुष्य को स्वयं इस साधारण का कारण नहीं माना जा सकता क्योंकि मनुष्य अपूर्ण है। इसलिए वह पूर्ण के प्रत्यय का कारण नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त यदि यह कहा जाए कि असीम प्रत्यय सकारात्मक न होकर नकारात्मक है, तब देकार्त का यह कहना है कि असीम का बोध असीम से पूर्व और अधिक स्पष्ट तथा यथार्थ होता है क्योंकि ससीमता असीमता से अपेक्षा रखती है तथा अपूर्ण पूर्ण की अपेक्षा से होता है। इस प्रकार असीम के प्रत्यय का कारण न तो मनुष्य है और न ही यह नकारात्मक प्रत्यय है। बल्कि इस प्रत्यय का स्वयं ईश्वर ही कारण है। इस विषय में यदि कहा जाए कि मनुष्य असीम एवं अपूर्ण है तब इसके मन में असीम और पूर्ण का प्रत्यय कैसे बन सकता है। इस प्रश्न का उत्तर देते हुए देकार्त ने कहा है कि यह तो मान्य है कि मनुष्य समिति है। इसलिए वह असीम की धारण को ग्रहण नहीं कर सकता किन्तु इस विषय में यह भी स्पष्ट ही है कि मनुष्य यह तो जान सकता है कि उसके मन जो असीम की धारणा है वह स्वयं से सम्बन्धित नहीं वरन् इसका सम्बन्ध किसी पूर्ण ईश्वर से ही हो सकता है। इस प्रकार स्पष्ट ईश्वर का प्रत्यय या असीम का प्रत्यय ही ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण है।

15. पुरातन समय के शिक्षाशास्त्रियों ने न केवल चिकित्सा क्षेत्र का ज्ञान बढ़ाया बल्कि चिकित्सा के सिद्धांत करने के नियम, चिकित्सक की आचार नीति की बतायी। लगता है कि उन लोगों को पहले ही इस बात का ज्ञान हो गया था कि आने वाले समय में चिकित्सा जैसे पवित्रतम पेशे में भी भ्रष्टाचार व लालच की प्रवृत्ति पनप जायेगी। चिकित्सक को तो भगवान के रूप में माना जाता है परन्तु आज यह हालत है कि चिकित्सक रूपी भगवान ही हैवान बने बैठे हैं। उनके मन में पैसा कमाने की इतनी वृत्तियाँ हैं कि वे साम, दाम, दण्ड, भेद इन चारों विधियों से धन कमाने में लगे हैं।

वास्तव में प्रत्येक चिकित्सक सामाजिक दायित्व से बंधा है। उस दायित्व को पूरा करना ही चिकित्सक का कर्तव्य है। अपने कर्तव्य की पूर्ति के लिए जिन उपायों को अपनाने की आवश्यकता है। वह है- ईमानदारी, सहानुभूति, सत्यवादिता, दयालुता, प्रेम आदि। किसी रोगी के साथ ईमानदारी से व कार्य-कुशलता से व्यवहार किया जाये तो उसके मन पर अच्छा प्रभाव पड़ता है और रोगी का कुछ रोग तो अपने-आप ही ठीक हो जाता है। चिकित्सक अपने रोगियों के साथ प्रेमपूर्वक बातें करें, उसका दर्द समझे, उसे अपनापन प्रदर्शित करें तो रोगी को अस्पताल-अस्पताल न लगकर घर लगने लगता है।

मगर आज के समय में चिकित्सक मोटी फीस, महंगे ऑपरेशन, खर्चीली दवाइयों पर रोगी का इतना खर्च करा देते हैं कि रोगी अपने रोग न मरकर अपने इलाज के खर्चे तले ही आकर मर जाता है।

अतः आज इस विषय पर समग्र चिन्तन की महती आवश्यकता है।

❑